卐 श्री शङ्खेश्वरपार्श्वनाथाय नम 卐

॥ सकलागमरहस्यवेदिपरमज्योतिर्विच्छ्रीमद्विजयदानसूरीश्वरसद्गुरुभ्यो नम ॥

श्रीमद्रामदेवगणिप्रणीतप्राकृतभाषागाथाबद्धटिप्पनेन भूषितः

सप्ततिकाभिधः षष्ठः कर्मग्रन्थः



टिप्पनकादिना समलङ्कृत्य सम्पादकः संशोधकश्च

प्रवचनकौशल्याधार--सिद्धान्तमहोदधि-सुविशालगच्छाधिपति-परमशासनप्रभावक-
कर्मसाहित्यनिष्णात-परमपूज्य-स्वर्गताचार्यदेवेश-श्रीमद्विजयप्रेमसूरीश्वर-
विनीताऽन्तेवासि-निःस्पृहतासलिलनिधि-परमगीतार्थ-परम-
पूज्या-ऽऽचार्यदेव-श्रीमद्वि हीरसूरीश्वर-
विनेयरत्नमुनि-श्रीललितशेखरविजय-
शिष्यरत्न-मुनि-श्रीराजशेखरविजय-

शिष्यः-

मुनि-श्रीवीरशेखरविजयः

प्रकाशिका-भारतीय-प्राच्य-तत्त्व-प्रकाशन-समितिः, पिन्डवाड़ा (राज०)

प्रथम आवृत्तिः- प्रति- २५०+२५ | राजसस्करण-१५) रु० राजाधिराज ,, -२०) रु० | वीर सवत २५०० विक्रम सवत २०३-

※ प्राप्तिस्थान ※

भारतीय प्राच्यतत्त्व प्रकाशन समिति
C/o रमणलाल लालचद
१३५/१३७ झवेरी बाजार, बम्बई २

•

भारतीय-प्राच्यतत्त्व-प्रकाशन-समिति
C/o शा समरथमल रायचद
पिडवाडा, (राज०)
स्टे० सिरोही रोड (W R)

•

भारतीय-प्राच्यतत्त्व-प्रकाशन-समिति
शा. रमणलाल वजेचन्द,
C/o दिलीपकुमार रमण ,
ती मार्केट,
अहमदाबाद २.

•

ज्ञानोदय प्रिंटिंग प्रेस, पिंडवा

Saptatik hi S st r r t

With

ifferent C t ri

Edited by

M i s ri Vir s k rvij y

Published by

haratiya Prachya-Tattva rakas an a iti, in war

(Rajasthan) (India)

First Edition
Copies 250+25

DELUXE EDITION RS 15
SUPER DELUXE ,, RS 20

A D 1974

AVAILABLE FROM

1 BHARATIYA PRACHYA TATTVA PRAKASHAN SAMITI
Co Shah Ramanlal Lalchand,
135/37 Zaveri Bazar
BOMBAY-2
(INDIA)



2 BHARATIYA PRACHYA TATTVA PRAKASHAN SAMITI
C/o Shah Samaratnmal Raychandji,
PINDWARA, (Rajasthan)
St. Sirohi Road (W. R)
(INDIA)



3 BHARATIYA PRACHYA TATTVA PRAKASHAN SAMITI
Shah Ramanlal Vajechand,
C/o Dilipkumar Ramanlal,
Maskati Market,
AHMEDABAD-2
(INDIA)



Printed by
Gyanodaya Printing Press
PINDWARA (Raj)
St Sirohi Road, (W R)
(INDIA)

सकलागमरहस्यवेदि-सूरिपुरन्दर-बहुश्रुतगीतार्थ-परमज्योतिर्विद्-परमगुरुदेव



परमपूज्य आचार्यदेवेश श्रीमद् विजयदानसूरीश्वरजी महाराज

* प्रकाशकीय निवेदन *

यह सूचित करते हुए हमे अत्यन्त आनद हो रहा है कि अल्प समय मे परमपूज्य सिद्धान्त महोदधि कर्मसाहित्य निष्णात स्वर्गताचार्यदेवेश श्रीमद्विजयप्रेमसूरीश्वरजी महाराजा की परम पावनी निश्रा मे उनकी ही परमकृपा दृष्टि से सकलित किया हुआ और श्लोकबद्ध प्राकृत भाषा मे रचे हुए मूलग्रन्थ तथा सस्कृत भाषा मे रचे हुअे टीका ग्रन्थ रूप लाखोश्लोक प्रमाण कर्म साहित्य का सर्जन हो चुका है, और भी सर्जन चालु है जिनके वोल्युम (महाग्रन्थ) ६ ग्रन्थरत्न हमारी सस्था द्वारा आपके कर कमलों मे पहुच चुके है और ग्रन्थों का मुद्रण कार्य चालु है। जिसे यथा समय आप प्राप्त कर सकेंगे। इसके अलावा इस कर्मसाहित्य विषयक मुनिचन्द्रसूरि विरचित टिप्पनक से युक्त पूर्वाचार्य कृत चूर्णि और उदयप्रभसूरि विहित टिप्पनक इन दोनों से विभूषित किया हुआ ऐसा पूर्वधर वाचक श्रीशिवशर्मसूरिप्रणीत 'बन्धशतकम्" नाम का प्राचीन ग्रन्थ रत्न भी इस समिति द्वारा प्रकाशित किया गया है। उसी तरह पूर्वाचार्य कृत मूल टीका सहित "चत्वार प्राचीना कर्मग्रन्था" नाम का प्राचीन ग्रन्थरत्न हमारी सस्था द्वारा प्रकाशित हो चूका है। ठीक उसी तरह प्रस्तुत ग्रन्थरत्न भी प्रकाशित हो रहा है।

रामदेवगणिकृत टिप्पणक युक्त सप्ततिकाख्य षष्ठ कर्मग्रन्थ तथा रामदेवगणिरचित टिप्पणक और वृत्ति सहित सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरण मुद्रित नहीं होने से तथा उनकी हस्तलिखित प्रत एव प्रेस कॉपिया भी मिलने से इन का मुद्रण आवश्यक बन गया था।

संपादन-संशोधन :–

परमपूज्य सिद्धान्तमहोदधि कर्मसाहित्य निष्णात सुविशालगच्छाधिपति स्वर्गत आचार्यदेवेश श्रीमद् विजयप्रेमसूरीश्वरजी महाराज साहेब के शिष्यरत्न परमपूज्य गीतार्थ नि स्पृहतानीरधि आचार्य-देवेश श्रीमद् विजयहीरसूरीश्वर म सा. के शिष्यरत्न प. पू मुनिराज श्री ललितशेखरविजयजी म सा के शिष्यरत्न प पू मुनिराज श्री राजशेखरविजयजी म. सा के शिष्यरत्न प. पू. मुनिराज श्री वीरशेखरविजयजी म. सा. ने कर्मसाहित्य के नव निर्माण के विराट कार्य को करते हुअे भी अपने अमूल्य समय का भोग देकर इस 'ग्रन्थरत्न' का सशोधन कर, हस्तलिखित प्रत्यादि के साथ मिलानादि करके संपादन किया है।

संपादन-पद्धति :–

मूलग्रन्थ–टीकाग्रन्थ–साक्षिग्रन्थ–प्रतीक–टिप्पणी आदि के लिये विभिन्न छोटे बडे-खुले व गहरे एव विविध प्रकार के टाइप पसद कर अभ्यास कर्ताओं की अनुकूलता बनाए रखने का ठीक प्रयत्न किया है, जैसे मूल ग्रन्थ २० पोईन्ट ब्लेक टाईपों मे, टीकाग्रन्थ १६ पोईन्ट सामान्य टाईप मे, प्रतीक १६ पोईन्ट ब्लेक टाईप मे, साक्षिग्रन्थ टिप्पणी विषयानुक्रम और शुद्धिपत्रक १२ पोईन्ट सामान्य टाईप मे रखे है।

शुद्धिपत्रक में सहायक :–

ग्रन्थमुद्रित हो जाने के बाद मे भी अनाभोग मुद्रणदोषादि के कारण रही हुअी अशुद्धियों के समार्जन के लिये शुद्धिपत्रक मे प पू स्व. आचार्यदेव के शिष्यरत्न प. पू आगमप्रज्ञ आचार्यदेव श्रीमद विजयजम्बुसूरिश्वरजी म सा तथा प पू. वीरशेखरविजयजी म सा और जैन श्रेयस्कर मडल पाठशाला मेहसाणा के अध्यापक सुश्रावक श्रीयुत पुखराजभाई ने श्रीयुत वसतभाई आदि द्वारा सहयोग दिया है यह शुद्धिपत्रक ग्रन्थ के अत मे दिया गया है। तदनुसार ग्रन्थ सुधार कर पढने का ध्यान रखने की ज्ञान-पिपासु वाचकों से हार्दिक अपील है।

कृतज्ञता प्रदर्शन :–

अत मे सबसे पहले स्व परम गुरुदेव सिद्धान्तमहोदधि कर्मसाहित्य निष्णात आचार्यदेवेश श्रीमद् विजयप्रेमसूरीश्वरजी म. सा. का जितना उपकार और आभार माने उतना कम है। क्योंकि उनकी ही परमकृपा और प्रभाव से इस समिति का उत्थान और कर्मसाहित्य का विशाल ˘ हो सका है। साहित्य की इस इमारत की नींव की इंट तो आप ही हैं।

साथ मे हस्तलिखित प्रतिया आदि के साथ मे मिलाकर, टिप्पणिया बनाकर, षडशीति प्रकरण के सब पदार्थों के ग्यारह (११) यत्रों बनाकर उनका प्रथम परिशिष्ट और टिप्पणियुक्त पाचों प्राचीन कर्मग्रन्थ तथा सप्ततिकानाम के षष्ठ कर्मग्रन्थ की मूलगाथा, द्वितीय-चतुर्थ पञ्चम षष्ठ कर्मग्रन्थ की भाष्यगाथा तथा सप्ततिकासार की गाथा और सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरण की मूलगाथा तथा भाष्य गाथा का दूसरा परिशिष्ट बनवाकर जो-तोड परिश्रम से जिन्होंने इस ग्रन्थरत्न का सपादन किया है वह पूज्य मुनिराजश्री वीरशेखरविजयजी म सा के अवर्णनीय उपकार के हम चिर ऋणी है।

इस ग्रन्थ के शुद्धिपत्रक के सहायक प. पू आगमप्रज्ञ आचार्यदेव श्रीमद् विजयजम्बूसूरी जी म सा तथा प. पू मु वीरशेखरविजयजी म. सा. और महेसाणा के प्राध्यापक पुखराजभाई तथा वसतभाई आदि का हार्दिक आभार मानते हैं।

श्रीरामदेवगणि की बनवायी हुअी सप्ततिकाटिप्पणी और'सूक्ष्मार्थविचारसार टिप्पणी की प्रेस कापीया डभोई के "श्री जम्बूस्वामि जैन मुक्ताबाई आगममदिर" नाम ज्ञान भण्डार के लिए तैयार की हुअी जिन्होंने इस कार्य के लिये भीजवायी उन पूज्य आगमप्रज्ञआचार्यदेव श्रीमद् विजयजम्बूसूरि म सा. का हृदय पूर्वक उपकार और आभार मानते है। श्रीरामदेवगणि की ही रची हुअी विभिन्नप्रकार की टिप्पणि की हस्तलिखित प्रत और सूक्ष्मार्थविचारसार प्रकरणवृत्ति की फोटोकोपी के लिए सुविधा करवानेवाले भोजक अमृतलालभाई का एव इन सब प्रत्यादिकी प्राप्ति करवाने में सहाय करने वाले पू मुनिराजश्री जयघोषविजयजी म सा. तथा पू मुनिराजश्री धर्मानन्दविजयजी म सा. का भी हार्दिक उपकार मानते है। 'प्रूफ रीडींग' सहायक महेसाणा वाले मास्टर च ल का तथा मुद्रण काय को आत्मीयतातथा तेजी से करने वाले ज्ञानोदय प्रिन्टींग प्रेस - पिंडवाडा के व्यवस्थापक ब्यावर निवासी श्रीमान फतहचन्दजी जैन (हालावाले) एव उनके सहयोगी कर्मचारीगण की निष्ठा एव तत्परता के कारण उनकी स्मृति सदा सराहनीय बनी रहेगी।

द्रव्य सहायक :–

श्री हुकमीचदजी कोलहापुर वालो ने अपने स्व० पिताजी श्री डुगाजी की पुण्य स्मृति में इस ग्रन्थ के मुद्रण-व्यय मे रु ५०००) की द्रव्य सहाय करके अपूर्व श्रुत भक्ति की है।

श्री डुगाजी का जन्म विक्रम सवत १९१९ मे राजस्थान-सिरोही जिले के फुगणी गांव मे हुआ था। व्यवसाय का प्रारम्भ महाराष्ट्र मे कोल्हापुर जिले के वडगाव में कपडे की दुकान से हुआ। आर्थिक स्थिति सामान्य होने पर भी नीतिमत्ता असामान्य थी। क्षमा-परोपकार-सहनशीलतादि सात्त्विक गुणों से जीवन एक सुश्रावक के उचित था। सामायिक प्रति पूजा पच्चक्खानादि नित्य कृत्यों मे तथा श्री सघ के कार्यो मे सदैव अप्रमत्त और उत्साही रहते थे। फलत विक्रम स० १९८० में मुनि भगवतों की निश्रा मे अनशन की भावना के साथ सर्व-सग का त्यागकर दिवगत हुए।

हुकमीचंदजी के परिवार मे धर्म सपन्नता आचारशील्ता और नीतिमत्ता का जो उत्कर्ष है इसका श्रेयः स्व० डु ग।जी को ही है।

इनका यह दानादि धर्म उत्तरोत्तर वृद्धि को पाता रहे और भाव-धर्म का स्वरूप लेकर मोक्षदायक बने यही शुभेच्छा।

निकट भविष्य मे और अधिक ग्रन्थों के प्रकाशन की आशा मे।

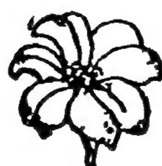
भव नीय-

शा. समरथमल रायचन्दजी (मंत्री)

शा. लालचन्द छगनलालजी (मंत्री)

भारतीय प्राच्य-तत्त्व ।शन समिति

(I) पिडवाडा
स्टे सिरोहीरोड (राजस्थान)
(II) १३५/१३७ जौहरी बाजार
बम्बई-२



अर्घ्याञ्जलि

जिन्होने भवरूपी सागर से मुझे बाहर निकाल कर चारित्ररूप नौका पर चढाया और दीक्षा दिन से लेकर बारह वर्ष तक आपने सानिध्य में रख कर ग्रहणशिक्षा और आसेवनशिक्षा के साथ साथ ही सस्कृत–प्राकृतव्याकरण न्याय दर्शन काव्य कोश छन्द अलङ्कार प्रकरण छेद! आगमादि विविध विषयक ग्रन्थो के अभ्यास द्वारा अमृतपान करवाया। जिन्होकी सतत सत्प्रेरणा और परम कृपा से ही महागंभीर और अतिभगीरथ ऐसे कर्मसाहित्य के नवनिर्माण में आज तेरह तेरह वर्ष तक लगातार प्रयत्नशील रहा हूं और भी ऐसे नवसर्जनादि अनेक कार्यो में व्यस्त रहने पर भी जिस पुण्यपुरुष की अमीदृष्टि से ही इस ग्रन्थरत्न की सम्पादनता मे भी सफलता पा रहा हुं। उन कर्मसाहित्य के सूत्रधार सिद्धान्तमहोदधि सच्चारित्रचूडामणि परमशासनप्रभावक सुविशालगच्छाधिपति परमाराध्यपाद स्वर्गीय आचार्यदेवेश—

श्रीमद् विजय प्रेमसूरीश्वरजी महाराजा

की परमपावनी स्मृति में

भवदीय कृपैकाभिलाषी
मुनि वीरशेखर विजय

प्राकृतभाषागाथाबद्धटिप्पनक-यन्त्रकादिना-ऽलङ्कृतः

प्ततिकाभिधः : कर्मग्रन्थः

આ ગ્રન્થમાં દ્રવ્યસહાયક



શાહ હુકમચંદજી ડુંગાજી રાઠોડ (ફુગણી)
(કોલાપુર)

✻ विषयानुक्रमः ✻

सप्ततिकाभिधानः षष्ठः कर्मग्रन्थः

॥ ॐ नमो जिनाय ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीशङ्खेश्वरपार्श्वनाथाय नमः ॥

न्यायाम्भोनिधिश्रीमद्विजयानन्दसूरीश्वरपादपद्मेभ्यो नमः ।

सद्धर्मसंरक्षकश्रीमदाचार्यविजयकमलसूरीश्वरपादपद्मेभ्यो नमः ॥

सकलागमरहस्यवेदिश्रीमदाचार्यविजयदानसूरीश्वरेभ्यो नमः ॥

कर्मसाहित्यनिष्णातश्रीमदाचार्यविजयप्रेमसूरीश्वरेभ्यो नमः ॥

परमगीतार्थश्रीमदाचार्यविजयहीरसूरीश्वरेभ्यो नमः ॥

[1]श्रीमच्चिरन्तनाचार्यप्रणीता

❀ सप्ततिका ❀

(सित्तरी)

"श्रीमद्रामदेवगणिना कृतेन टिप्पनकेन समलङ्कृता"

सिद्धपएहिं महत्थं बन्धोदयसंतपगडिठाणाणं ।
वोच्छं सुण संखेव निस्सदं दिट्ठिवायस्स ॥सू०-१॥ (१)[2]

कइ बंधतो वेयइ कइ कइ वा पगडिठाणकम्मंसा ।
मूलुत्तरपयडीसु भंगविगप्पा बोद्धव्वा ॥सू०-२॥ (२)

सुगइगमसरलसरणि, वीरं नमिऊण मोहतमतरणिं ।
सत्तरिएटिप्पेमी, किंची चुन्नीउ अणुसरिउं ॥१॥ (३) [१][3]

[4]संखेवा भंगाणं, सुमरणहेउ तह पगडिठाणाणं ।
पत्तेयं पगडीणं, नामग्गाहं च काहामि ॥२॥ (४) [२]

आउसमं अट्ठ भवे, आउविहूणा य सत्त बंधम्मि ।
मोहणियाऽऽउविणा छ उ, एगो वेयणियबंधो उ ॥३॥ (५) [३]

अट्ठुदओ बहुयाणं, मोहं मोत्तूण केसि सत्तुदओ ।
घाइविहूणा चउरो, तह सत्ताए वि तियठाणा ॥४॥ (६) [४]

---

१ अज्ञातनामाचार्यरचिता इत्यर्थः, न पुनश्चिरन्तनाभिधाचार्यविहिता इति । २ ( ) एतच्चिह्नान्तर्गतगाथाक्रमः ससूत्रकः L D (लालभाइ दल्पतभाइ विद्यामंदिर) प्रत्यनुसारी । सूत्ररहितगाथाक्रमः पुनः J (जेसलमेर) प्रतिप्रेसकोप्यपेक्षः । ३ [ ] एतच्चिह्नान्तर्गतगाथाक्रमः ससूत्रकः J प्रतिप्रेसकोप्यधिकृत । ४ "संखेवेण" इत्यपि ।

सामन्ना १ जीव २ गुणा ३, पत्तेयं मूलपयडिविसओ उ ।
नियनियभंगेहि समं, सुत्तऽणुसाराउ तं च इमं ।।५।। (७) [५]

मूलप्रकृतौ सत्तास्थानानि—

अट्ठविह-सत्त-छब्बंधएसु अट्ठेव उदय[1]सताइं ।
एगविहे तिविगप्पो, एगविगप्पो अबंधम्मि ।।सू०-३।। (८) [६]

पढमद्ध कंठ ।

सत्तऽट्ठ १ सत्त सत्त य २, चउरो चउरो य ३ उदयसंतंसा ।
एगविहबंधगे इह, तह य अबंधम्मि चउ चउरो ।।६।। (९) [७]

सामन्ने ठवणा—

बन्धो	८	७	६	१	१	१	०
उदओ	८	८	८	७	७	४	४
सत्ता	८	८	८	८	७	४	४

जीवस्थानेषु मूलप्रकृतीनां बन्धोदयसत्तास्थानानि—

सत्तऽट्ठबंध अट्ठुदयसत तेरस जीवठाणे ।
एगम्मि पच भगा दो भंगा [2]होंति केवलिणो ।।सू०-४।। (१०) [८]

पढमद्धं कठं । 'एगम्मि' सन्निट्ठाणे ।

अडसत्तछेगबंधा, उदए संते य पढमतिसु अट्ठ ।
एगम्मि सत्त अट्ठ य, तह सत्त य सत्त उदयंसा ।।७।। (११) [९]

सण्णिस्स ठवणा—

बन्धो	८	७	६	१	१
उदओ	८	८	८	७	७
सत्ता	८	८	८	८	७

तेरससु जीवठाणेसु ठवणा—

ब०	७-८	७-८	७-८	७-८	७ ८	७-८	७-८	७-८	७-८	७-८	७-८	७-८	७-८
उ०	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
स०	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
जीव-ट्ठाणा	सू अप	सू प	बा अप	बा प.	बे अप	बे प	त्रि० अप	त्रि० प०	च अ	च प	अस अप	अस प	स अप

१ "सतंसा" इति वा पाठ । २ "हुति" इत्यपि ।

केवलिठवणा—

बन्धो	१	०
उदओ	४	४
सत्ता	४	४

गुणस्थानकेषु मूलप्रकृतीनां बन्धोदयसत्तास्थानानि-

अ एगविगप्पो, छस्सु [१]उ गुणसन्निएसु दुविगप्पो।
पत्तेयं पत्तेयं, बंधोदय-सतकम्माणं ॥सू०-५॥ (१२) [१०]
मिस्सअपुव्वा [२]बायर, सगबंधा छच्च बंधए सुहमो।
[३]उवसंताई ३ एगं, अबंधगोऽजोगि एगेगं ॥८॥ (१३) [११]
मिच्छासामणअविरय-देसपमत्तअपमत्तया चेव।
सत्तऽट्ठबंधगा इह, उदया संता य पुण एए ॥९॥ (१४) [१२]
जा सुहुमो ता अट्ठ उ, उदए संते य होंति पयडीओ।
[४]सत्तऽड उवसंते खीणि सत्त चत्तारि सेसेसु ॥१०॥ (१५) [१३]

ठवणा—

गुणठाणाणि	मिच्छ		सा०		मि०	अवि०		दे०प०		पम०		अपम		अपू०	अणि	सु०	उव०	खीण	सजो	अजो
बंधो	८	७	८	७	७	८	७	८	७	८	७	८	७	७	७	६	१	१	१	०
उदओ	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	७	७	४	४
सत्ता	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	७	४	४
	२		२		१	२		२		२		२		१	१	१	१	१	१	१

मूलपयडीसु भणिया बन्धोदयसंतठाणसविगप्पा।
उत्तरपयडीसु तहा ते च्चिय पयडेमि पत्तेयं ॥ (१६)

उत्तरप्रकृतिषु बन्धोदयसत्तास्थानानि —

बंधोदयसंतंसा, नाणावरणंतराइए पंच।
बंधोवरमे वि तहा, [५]उदयसा होंति पंचेव ॥सू०-६॥ (१७) [१४]

---

१ "वि" इत्यपि। २ "बादर" अनिवृत्ति। ३ उपशान्तकषायक्षीणकषायसयोगिकेवलिन। ४ 'सत्त-ऽट्ठुवसंते" इति L D. प्रतौ। ५ 'उदसता हुति" इति।

नाणावरणं मइ१सुय२ओहि३मणोनाण४केवलावरणा ५ ।
विग्घं दाणे १लाभे २, भोगु३वभोगे४ य विरिए य ५ ॥११॥ (१८) [१५]

सामन्नेण गुणट्ठाणगेसु य बंधाइवोच्छेदमाह–

नाणंतरायबंधो, सुहुमे संतुदय [1]खीणचरिमम्मि ।
वोच्छिन्ना य कमेणं, दो दो भंगा उ दोण्हं पि ॥१२॥ (१९) [१६]

ठवणा—

	नाणावरण०		अंतराय०	
बंधो	५	०	५	०
उदओ	५	५	५	५
सत्ता	५	५	५	५

दर्शनावरणस्योत्तरप्रकृतीनां बन्धोदयसत्तास्थानानि–

बंधस्स य संतस्स य, पगइट्ठाणाणि तिन्नि तुल्लाइं ।
उदयट्ठाणाइँ दुवे, चउ पणगं दंसणावरणे ॥सू०-७॥ (२०) [१७]
नयणेयरोहि–केवल–दंसणआवरणयं भवे चउहा ।
निद्दा-पयलाहि छहा, निद्दाइ[2]दुरुत्त थीणद्धी ॥१३॥ (२१) [१८]

सामण्णे ठवणा–

	दंसणावरण०		
बंधो	९	६	४
उदओ	४		५
सत्ता	९	६	४

१ एतत्प्रतिपादनं सप्ततिकाचूर्णि–टीकाभ्यां समं (न) विरुध्यते, तद्यथा-'दो होंति दोसु ठाणेसु' त्ति उदयसंताणि दोण्णि, एयाणि उवसंतखीणकसाएसु दोसु भवंति, सुहुमरागचरिमसमए बंधो वोच्छिण्णो, छउमत्थत्ताओ उदयसंता अत्थि । ते य खीणकसायचरिमसमए दो वि खिज्जंति ।" (सप्ततिकाचूर्णिपत्र ३५ पृष्ठि २) । तथा द्वयो पुनर्गुणस्थानकयो उपशान्तमोह-क्षीणमोहरूपयो 'दुवे उदयसत्ते स्त न बन्ध, बन्धस्य सूक्ष्मसम्पराये व्यवच्छिन्नत्वात् । एतदुक्तं भवति बन्धाभावे उपशान्तमोहे क्षीणमोहे च ज्ञानावरणीयाऽन्तराययो प्रत्येकं पञ्चविधं उदय पञ्चविधा च सत्ता भवतीति परत उदय सत्तयोरप्यभाव । (कर्मग्रन्थद्वितीयविभाग० पृ० २०७) २ आदिशब्दात् प्रचला ज्ञातव्या ।

नव छच्चउहा बंधे, तह [1]संता पंच चउर उदयम्मि ।
[2]सामण्णमिणं बीए, भंगा पुण [3]होंति [4]एक्कारा ॥१४॥ (२२) [१९]
बीयावरणे नव बंधएसु चउ पंच उदय नव संता ।
छ च्चउबंधे चेव, चउ बंधुदए छलंसा य ॥सू०-८॥ (२३) [२०]
उवरयबंधे चउ पण, नवंस चउरुदय छच्च चउ संता ।
वेयणिया-ऽऽउय-गोए, विभज्ज मोहं परं वोच्छं ॥सू०-९॥ (२४) [२१]
नव छ च्चउ बेहबंधे, उदए चउ पंच संत नव छसु वि ।
चउबंधुदए [5]संता, [6]छच्चेव य होंति खवगस्स ॥१५॥ (२५) [२२]
बंधोवरमे चउ पंच उदय नव संत होंति उवमंते ।
खीणे उदयचउक्कम्मि छ च्च चत्तारि [7]संताओ ।१६॥ (२६) [२३]

ठवणा–

बंधो	९	९	६	६	४	४	४	०	०	०	०
उदओ	५	४	५	४	५	४	४	५	४	४	४
सत्ता	९	९	९	९	९	९	६	९	९	६	४

[8]वेदणीयाउयगोए विभज्ज मोह पर वोच्छ ।
वेदनीया-ऽऽयुर्गोत्र.णामुत्तरप्रकृतीनां बंधोदयसत्तास्थानसंवेधभङ्गा –

[9]गोयम्मि सत्त भंगा, अट्ठ य भंगा भवंति वेयणिए ।
पण नव नव पण भंगा, आउचउक्के वि कमसो उ ॥सू०-०। (२७) [२४]
नीयं बंधं नीयस्स उदय नीयस्स चेव संताओ ।
अनिलाऽनलजीवाणं इयरेसु अणंतरुव्वट्टे ॥१७॥ [२५]
अनला–ऽनिलजीवाणं एगो इय एसु केसिं चि ॥ (२८)
उव्वालियउच्चागोए तेउवाऊण णीयमिह संतं ।
इयरेसु च उव्वट्टे पज्जत्ती जा न पूरेइ ॥ (२९)

१-५-७ "सत्ता" इति L D प्रतौ। २ 'सामन्न०" इति L D प्रतौ । ३ "हुति" इति L D प्रतौ। ४ अत्र प्राचीनकर्मस्तवकारादिभिस्त्रयोदशभङ्गा प्रतिपाद्यन्ते। यतस्ते क्षपकाणामपि निद्राद्विकोदय स्वीक्रियते । दृश्यतां प्राचीनकर्मस्तवे त्रयस्त्रिंशत्तमगाथापूर्वार्धं तट्टीका च ६ क्षपकाणां स्त्यानर्द्धित्रिक-क्षयानन्तरं षड्विधा सत्ता बोद्धव्या। ८ अयं पाठः J० प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति । L D प्रतौ चास्ति । ९ "केनाऽपि विदुषा सप्ततिकामूलप्रकरणेऽर्थानुसन्धानार्थं प्रक्षिप्तमिदं गाथासूत्रम् , न तु मूलप्रकरणस्येद-मिति। एवमग्रेऽपि ज्ञेयम् ।

नाणावरणं मइ१सुय२ओहि३मणोनाण४केवलावरणा ५ ।
विग्धं दाणे १लाभे २, भोगु३वभोगे४ य विरिए य ५ ॥११॥ (१८) [१५]

सामन्नेण गुणट्ठाणगेसु य बंधाइवोच्छेदमाह–

नाणंतरायबंधो, सुहुमे संतुदय [1]खीणचरिमम्मि ।
वोच्छिन्ना य कमेणं, दो दो भंगा उ दोण्हं पि ॥१२॥ (१९) [१६]

ठवणा—

	नाणावरण०		अंतराय०	
बंधो	५	०	५	०
उदओ	५	५	५	५
सत्ता	५	५	५	५

दर्शनावरणस्योत्तरप्रकृतीनां बन्धोदयसत्तास्थानानि–

बंधस्स य संतस्स य, पगइट्ठाणाणि तिन्नि तुल्लाइं ।
उदयट्ठाणाइँ दुवे, चउ पणगं दंसणावरणे ॥सू०-७॥ (२०) [१७]
नयणेयरोहि–केवल–दंसणआवरणयं भवे चउहा ।
निद्दा-पयलाहि छहा, निद्दाइ[2]दुरुत्त थीणद्धी ॥१३॥ (२१) [१८]

सामण्णे ठवणा–

	दंसणावरण०		
बंधो	९	६	४
उदओ	४		५
सत्ता	९	६	४

---

१ एतत्प्रतिपादन सप्ततिकाचूर्णि–टीकाभ्या सम (न) विरुध्यते, तद्यथा-'दो होंति दोसु ठाणेसु' त्ति उदयसताणि दोण्णि, एयाणि उवसतखीणकसायेसु दोसु भवति, सुहुमरागचरिमसमए बंधो वोच्छिण्णो, छउमत्थत्ताओ उदयसता अत्थि । ते य खीणकसायचरिमसमए दोवि खिज्जति ।" (सप्ततिकाचूर्णिपत्र ३५ पृष्ठि २) । तथा द्वयो पुनर्गुणस्थानकयो उपशान्तमोह-क्षीणमोहरूपयो 'द्वे' उदयसत्ते स्त न बन्ध, बन्धस्य सूक्ष्मसम्पराये व्यवच्छिन्नत्वात् । एतदुक्त भवति बन्धाभावे उपशान्तमोहे क्षीणमोहे च ज्ञानावरणीयाऽन्तराययो प्रत्येक पञ्चविध उदय पञ्चविधा च सत्ता भवतीति परत उदय-सत्तयोरप्यभाव । (कर्मग्रन्थद्वितीयविभागः पृ० २०७) २ आदिशब्दात् प्रचला ज्ञातव्या ।

नव छच्चउहा बंधे, तह [1]संता पंच चउर उदयम्मि ।
[2]सामण्णमिणं बीए, भंगा पुण [3]होंति [4]एक्कारा ॥१४॥ (२२) [१९]

बीयावरणे नव बंधएसु चउ पंच उदय नव संता ।
छ च्चउबंधे चेव, चउ बंधुदए छलसा य ॥सू०-८॥ (२३) [२०]

उवरयबंधे चउ पण, नवंस चउरुदय छच्च चउ सता ।
वेयणिया-ऽऽउय-गोए, विभज्ज मोह परं वोच्छं ॥सू०-९॥ (२४) [२१]

नव छ च्चउ वेहबंधे, उदए चउ पंच संत नव छसु वि ।
चउबंधुदए [5]संता, [6]छच्चेव य होंति खवगस्स ॥१५॥ (२५) [२२]

बंधोवरमे चउ पंच उदय नव संत होंति उवसंते ।
खीणे उदयचउक्कम्मि छ च्च चत्तारि [7]संताओ ॥१६॥ (२६) [२३]

ठवणा–

बंधो	९	९	६	६	४	४	४	०	०	०	०
उदओ	५	४	५	४	५	४	४	५	४	४	४
सत्ता	९	९	९	९	९	९	६	९	९	६	४

[8]वेदणीयाउयगोए विभज्ज मोह पर वोच्छ ।

वेदनीया-ऽऽयुर्गोत्राणामुत्तरप्रकृतीना बधोदयसत्तास्थानसवेधभङ्गा –

[9]गोयम्मि सत्त भंगा, अट्ठ य भंगा भवंति वेयणिए ।
पण नव नव पण भंगा, आउचउक्के वि कमसो उ ॥सू०-०॥ (२७) [२४]

नीयं बंधं नीयस्स उदय नीयस्स चेव संताओ ।
अनिलाऽनलजीवाणं इयरेसु अणंतरुव्वट्टे ॥१७॥ [२५]
अनला–ऽनिलजीवाणं एगो इय एसु केसिं चि ॥ (२८)
उव्वालियउच्चागोए तेउवाऊण णीयमिह संतं ।
इयरेसु च उव्वट्टे पज्जत्ती जा न पूरेइ ॥ (२९)

१-५-७ "सत्ता" इति L D प्रतौ। २ 'सामन्न०" इति L D प्रतौ । ३ "हुति" इति L D प्रतौ। ४ अत्र प्राचीनकर्मस्तवकारादिभिस्त्रयोदशभङ्गा प्रतिपाद्यन्ते। यतस्ते क्षपकाणामपि निद्राद्विकोदय स्वीक्रियते । दृश्यता प्राचीनकर्मस्तवे त्रयस्त्रिंशत्तमगाथापूर्वार्धं तट्टीका च ६ क्षपकाणा स्त्यानर्द्धित्रिक-क्षयानन्तर षड्विधा सत्ता बोद्धव्या। ८ अयं पाठ J० प्रतिप्रेसकोष्ठा नास्ति । L D प्रतौ चास्ति । ९ "केनाऽपि विदुषा सप्ततिकामूलप्रकरणेऽर्थानुसन्धानार्थं प्रक्षिप्तमिद गाथासूत्रम्, न तु मूलप्रकरणस्येद-मिति। एवमग्रेऽपि ज्ञेयम् ।

नीउच्चं बंधुदए, विगप्प चत्तारि दोहि संतेहिं ।
बंधोवरमे उच्चस्स उदय दो-एक्कसंताओ ॥१८॥ (३०) [२६]

ठवणा—

बंधो	नीय	नीय	नीय	उच्च	उच्च	०	०
उदओ	नीय	नीय	उच्च	नीयं	उच्च	उच्च	उच्च
सत्ता	नीय	२	२	२	२	२	उच्चं

सायाऽसाये दोसु[1], चउभंगा बंध-उदइ दु दु संता ।
बंधोवरमे चउरो, संता दुसु दोन्नि दुसु एगं ॥१९॥ (३१) [२७]

ठवणा—

बंधो	असा-य	असा-य	साय	साय	०	०	०	०
उदओ	असा-य	साय	असा-य	साय	असा-य	साय	असा-य	साय
सत्ता	२	२	२	२	२	२	१	१

एगो अ बंधपुव्वे, बंधे बंधुत्तरे य चउ चउरो ।
नरतिरियाणं आउयचउक्कबंधुदय-संतेहिं ॥२०॥ (३२) [२८]
सुर-नरयाणं पण पण, बंधे बंधुत्तरे य दो दुन्नि ।
जम्हा न तेसिं बंधो, सुर-निरयाऊण संभवइ ॥२१॥ (३३) [२९]

ठवणा—

देवाण भगा					
बध०	०	स	ति	०	०
उद	दे	दे	दे	दे	दे
सत्ता	१	२	२	२	२
कुल	१	२	३	४	५

मणुयाण भगा									
बध०	०	दे	म	ति	नि	०	०	०	०
उद	म	म	म	म	म	म	म	म	म
सत्ता	१	२	२	२	२	२	२	२	२
कुल	१	२	३	४	५	६	७	८	९

तिरियाण भगा									
बध०	०	दे.	म	ति.	नि	०	०	०	०
उद	ति	ति	ति	ति.	ति	ति	ति	ति	ति
सत्ता	१	२	२	२	२	२	२	२	२
कुल	१	२	३	४	५	६	७	८	९

नेरइयाण भगा					
बध०	०	म	ति	०	०
उद	नि	नि	नि	नि	नि
सत्ता	१	२	२	२	२
कुल	१	२	३	४	५

मोहनीयस्योत्तरप्रकृतीनां बन्धस्थानानि दश—

बावीस एक्कवीसा, सत्तरसा तेरसेव नव पंच ।
चउतिगदुग च एक्कं, बंध[2]ट्ठाणाणि मोहस्स ॥सू०-१०॥ (३४) [३०]

---

१ "चउभंगो" इति J० प्रतिप्रेसकॉप्य म् । २ "ट्ठाणाइ" इति L D प्रतौ ।

मिच्छं कसायसोलस, भय कुच्छा तिण्ह वेयमन्नयरं ।
हास-रइ इयरजुयलं च बंधपयडी य बावीसं ॥२२॥ (३५) [३१]
इगवीसा [1]मिच्छविणा, [2]नपुवंधविणा उ सासणे बंधे ।
अणरहिया [3]सत्तरस न बंधि थिइं [4]तुरिअठाणम्मि ॥२३॥ (३६) [३२]
नियसंपरायऊणा, तेरस तह तइयऊण नव बंधे ।
भय-कुच्छ-जुगलचाए, पण बंधे बायरे ठाणे ॥२४॥ (३७) [३३]
तह पुरिस-कोह-ऽहंकार-[5]माय-लोभस्स बंधवोच्छेए ।
चउ-ति-दुग-एगबंधे, कमेण मोहस्स दस ठाणा ॥२५॥ (३८) [३४]

ठवणा—२२, २१, १७, १३, ९, ५, ४, ३, २, १ ॥एवं बंधे १०॥
मोहनीयस्योत्तरप्रकृतीनामुदयस्थानानि नव—

एगं च दो य चउरो, एत्तो एगाहिया दसुक्कोसा ।
ओहेण मोहणिज्जे, उदयट्ठाणाणि नव [6]होंति ॥सू०-११॥ (३९) [३५]
एगयरसंपरायं, वेयजुयं [7]दोण्णि जुयलजुयचउरो ।
पच्चक्खाणेगयरे, छूढे पंचेव पयडीओ ॥२६॥ (४०) [३६]
छ बिइय ४ एगयरेगं, छूढे सत्त य दुगुंछि भय अट्ठ ।
अणि नव मिच्छे दसगं, सामन्नेणं तु [8]नव उदया [9]॥२७॥ (४१) [३७]

ठवणा—१, २, ४, ५ ६ ७, ८, ९ १० ।
मोहनीयस्योत्तरप्रकृतीना सत्तास्थानानि पञ्चदश—
[10]अट्ठग-सत्तग-छ-च्चउ-तिग दुग एगाहिया भवे वीसा ।
तेरस [11]बारेक्कारस, एत्तो पंचाइएक्कूणा ॥सू०-१२॥ (४२) [३८]

---

१ "मिच्छूणा" इति L D प्रतौ। "मिच्छोणा" इति वा पाठ । २ अत्र पुं-स्त्रीवेदयोरन्यतरस्य बन्ध प्रक्षिप्यते । ३ "सत्तरस न बंधि थिइ" इति L D प्रतौ । अत्र केवल पु वेदो बध्यते । ४ उपलक्षणात्तृतीयगुणस्थानकेऽपि । ५ "माया०" इति वा । ६ "हुंति" इत्यपि । ७ वेदत्रिकादन्यतरवेदयुतम् ॥ ८ "दस" इति तु J० प्रतिप्रेसकोप्याम् । तेनोदयपदेन नवापेक्षयोदयस्थानानि, दशापेक्षया तूदयप्रकृतय इति सम्भाव्यते । ९ अत्राचार्यश्रीमलयगिरिपादा सप्ततिकाटीकायामित्थं क्रमभेदेन व्याख्यानयन्ति "तत्र तत्र चतुर्णां सञ्ज्वलनानामन्यतमस्योदये एकमुदयस्थानम्, तदेव वेदत्रयान्यतमवेदोदयप्रक्षेपे द्विकम्, तत्रापि हास्यरतिरूपयुगलप्रक्षेपे चतुष्कम्, तत्रैव भयप्रक्षेपात् पञ्चकम्, जुगुप्साप्रक्षेपात् षट्कम्, तत्रैव चतुर्णां प्रत्याख्यानावरणकषायाणामन्यतमस्य प्रक्षेपे सप्तकम्, तत्रैव चाऽप्रत्याख्यानावरणकषायाणामन्यतमस्य प्रक्षेपेऽष्टकम्, तत्रैव चतुर्णामनन्तानुबन्धिकषायाणामन्यतमस्य प्रक्षेपे नवकम्, तत्रैव मिथ्यात्वप्रक्षेपे दशकम् ॥" (कर्मग्रन्थ द्वितीयविभागपत्र १६२) १० 'अट्ठयसत्तय" इति । ११ "बारिक्कारस" इति L. D प्रतौ।

सत्त पयडिठाणाणि ताणि मोहस्स [1]होंति पन्नरस ।
बंधोदयसंते पुण, भंगविगप्पे बहू जाण ॥सू०-१३॥ (४३) [३९]
नव नोकसाय सोलस, कसाय दंसणतिगं ति अडवीसा ।
सम्मत्तुव्वलणेणं, मिच्छे मीसे य सगवीसा ॥२८॥ (४४) [४०]
छव्वीसा पुण दुविहा, मीसुव्वलणे अणाइमिच्छत्ते ।
सम्म[2]दिट्ठिऽडवीसा, अण ४ खवए होइ चउवीसा । २९॥ (४५) [४१]
मिच्छे मीसे सम्मे ३, खीणे ति-दुवीस एक्कवीसा य ।
अट्ठकसाए तेरस, नपुंसखए होइ बारसगं ॥३०॥ (४६) [४२]
[3]थीवेयं खीणिगारस, हासाई ६ पंच चउ पुरिसखीणे ।
कोहे माणे माया, लोभे खीणे य कमसो उ ॥३१॥ (४७) [४३]
[4]तिग दुग एग असंतं, मोहे पन्नरस संतठाणाणि ।
बंधोदयसंवेहे भंगविगप्पे बहू जाण ॥३२॥ (४८) [४४]
ठवणा-२८, २७ २६, २४ २३, २२ २१ १३, १२, ११, ५, ४ ३ २, १।
[5]बंधसुदए पडुच्चा, जइवि पुणो मोहविवरणं वुत्तं ।
तह वि य सुहगुणणत्थं सुहसुमरणहेउ एगत्थ ॥३३॥ (४९) [४५]

मोहनीयस्य बन्धस्थानानां भङ्गाः-

छब्बावीसे चउ इगवीसे सत्तरसतेरसे दो दो ।
नवबंधए [6]उ दोन्नि उ, एक्के [7]मओ परं भंगा ॥सू.-१४॥ (५०) [४६]
वेय३जुयलेहि चरिया, भंगा छच्चेव चउर नपुंऊणा ।
जुयलेहि चउसु दो दो, सेसा एक्केक्क संभविया ॥३४॥ (५१) [४७]

ठवणा —

गुण — ठाणाणि	१	२	३	४	५	६	७	८	९ अनिवृत्ति०				
	मि	सा	मिश्र	अवि	देश	प्र०	अप्र	अपू०	१	२	३	४	५
बंधट्ठाणाणि	२२	२१	१७	१७	१३	९	९	९	५	४	३	२	१
भंगा०	६	४	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१

१ 'हुन्ति' इति । २ ०"दिट्ठिडवी०"इति प्रतौ ३ "थीवेयखीणिगारस" इत्यपि । ४ "तिगदुगएग-असंत" इति वा, 'तिग दुग य संत" इति L D प्रतौ । ५ "बंधसगुण पडु" इति प्रतौ । "बधुदयगुण" इति L D प्रतौ । ६ 'त्ति दुण्णि उ" इति । ७ "मकारस्त्वलाक्षणिक" इति सप्ततिकाटीकायाम् ।

मिच्छाइ पमत्तंता जुयलगया वेयभंग उट्ठंति ।
वुच्छिन्नअरइसोगा पमत्ति उवरिं तु एगेगा ॥ (५२)

[1]एवं गुणट्ठाणगेसु बंधभंगा ॥२५। इयाणिं उदयठाणाणं उदयभंगाणं विवरणमाह–
मोहनीयस्य बन्धस्थानेपूदयस्थानानि–

दस बावीसे नव इगवीसे सत्ताइ[2]उदयठाणाणि ।
छाई नव सत्तरसे तेरे पंचाइ अट्ठेव ॥सूत्र-१५॥ (५३) [४८]
चत्तारि आइ नवबंधएसु उक्कोस सत्त उदयंसा ।
पंचविहबंधए पुण, उदओ दोण्हं मुणेयव्वो ॥सूत्रम्-१६॥ (५४) [४९]
एत्तो चउबंधाई, एक्केकुदया हवंति सव्वे वि ।
बंधोवरमे वि तहा, उदयाभावे वि वा होज्जा ॥सू०-१७॥ (५५) [५०]

ठवणा–

बंध	२२				२१			१७				१३				९				५	४	३	२	१	०
उदय	७	८	९	१०	७	८	९	६	७	८	९	५	६	७	८	४	५	६	७	३	१	१	१	१,	१

मिच्छ-तिकसाय-वेयं, जुयलन्नयरेण २ सत्तगं तत्थ ।
वेयतिग-चउकसाए, जुयलन्नयरेण चउवीसा ॥३५॥ (५६) [५१]
वेएसु चउकसाया, कोहाइकमेण उदयओ होंति ।
एक्केक्कम्मि चउचउरो, तिग-चउगुणिया उ बारसगं ॥३६॥ (५७) [५२]
ते हास-रईउदए, अरई-सोगपरियत्तउदए वा ।
दो मिलिया चउवीसं, [3]उदयगया मोहणीयस्स ॥३७॥ (५८) [५३]

एवं सव्वत्थ चउवीसिया चारणा ।

सत्तोदयम्मि एगा, अण-भय-कुच्छाण एगयरखेवे ।
अट्ठुदओ तिन्नि तहिं, दुगसंजोगम्मि तह नवए ॥३८॥ (५९) [५४]
तिगपक्खेव दसेगा, चउसु वि उदएसु अट्ठ चउवीसा (मिच्छे)।
सासणमीसे तिगतिग भयकुच्छदुगेहि चउचउरो ॥३९॥ [५५]
तिगपक्खेव दसेगा चउसु वि उदएसु अट्ठचउवीसा ।
मिच्छम्मि गुणट्ठाणे सेसगुणाणं च एस कमो ॥ (६०)
तिगतिग उदयट्ठाणा सासणमिस्से य सत्तअडनवगं ।

---

१ अय पाठ J प्रतिप्रसन्ोप्या नास्ति, L D प्रतौ चास्ति । २ "उदयकम्मसा" इति ॥ ३ "उदयविगप्पा य मोहस्स ॥५८॥" इति L D प्रतौ ।

एगदुगएगक्कमसो चउरो चउरो च पत्तेअं ॥ (६१)
छलउदयम्मी एगा भय-कुच्छा-सम्मखेवएगयरे ।
सत्तोदयम्मि तिन्नि उ, दुग-तिगपक्खेव मिच्छसमा ॥४०॥ (६२) [५६]
पत्तेय अट्ठ अट्ठ उ अविरय-देसे पमत्त-अपमत्ते ।
अप्पुव्वे पुण चउरो, सव्वे बावन्नमिच्छाई ॥४१॥ (६३) [५७]

चोयगो आह-

अणउदयरहियमिच्छो कम्मि जिए कित्तियं च से कालं ।
आह-तदुवलगसम्मदिट्ठिस्स मिच्छुदयआवलियकालं ॥४२॥ (६४) [५८]
चउवीससंतकम्मी, मिच्छ गओ अणंतिणो बंधे ।
मुत्तु अबाहाकालं तदु उवरिं निक्खिवे दलियं ॥४३॥ (६५) [५९]
कहणंतबंधिउदओ आवलियाउवरि वुच्चए एवं ।
सव्वं पडिग्गहंते अन्नकसायाण मणे ॥४४॥ (६६) [६०]
जं पढमसमयदलियं, संकंतं तं च आवलियउवरि ।
उदयंसे आगच्छइ, तम्मी से अट्ठ उदओ उ ॥४५॥ (६७) [६१]
अन्नं च तम्मि समए, उदीरणोवट्टणागयं दलियं ।
उदयम्मि खिवइ जीवो, अणंतिणो तेण आवलिआ ॥४६॥ (६८) [६२]
तं चेव सत्तगं भय-दुगुंच्छ-अणसहिय अट्ठनवदसगं ।
इत्थं चउवीसा होंति तिन्नि तन्नेग जहसंखं ॥४७॥ [६३]
चउवीसा पुव्वकमा कमेण उदएण जहसंखं ॥ (६९)
पुव्वुत्तसत्तगा मिच्छफेडणे खेवणे यऽणंताणं ।
सत्त य सासाणे तह-ऽड नव य भयकुच्छपक्खेवे ॥४८॥ (७०) [६४]
वेयतिकसायमीसं, जुयलन्नयरेण सत्त मीसम्मि ।
भयकुच्छाणन्नयरे, एगदुगेणं च अट्ठ नव ॥४९॥ (७१) [६५]
तिगसंपराय ३ वेयं १ जुयलन्नयरेण छच्च पयडीओ ।
भयकुच्छसम्मखेवे अविरयसत्तऽट्ठ नव [1]होंति ॥५०॥ (७२) [६६]
[2]अजउदयठाणचउरो (व्व) देसविरए य सव्वविरए य ।
नवरं कसायहाणी एक्केक्कं जाण जहसंखं ॥५१॥ (७३) [६७]

---

१ "हुति" इति L. D प्रतौ २ "अजउदयट्ठाणा तह चउरो देसे य" इति L D प्रतौ ।

इगसंपरायवेयं जुयलन्नयरेण चउरउदओ उ ।
अप्पुव्वे भयकुच्छा एगदुगेणं च पण छक्कं ॥५२॥ (७४) [६८]
इगवेयइगकसाए उदओ [1]दोण्हं तु बायरकसाए ।
एक्कुदयवेयखीणे बायरसुहुमाण [2]दोण्हं पि ॥५३॥ (७५) [६९]
[3]उदया इच्चाइ पए भणिया उवसंति तिन्नि संताओ ।
अडचउवीसउवसमे इगवीसं खंडसेढीए ॥५४॥ (७६) [७०]
बावन्नं ५२ चउवीसा गुणठाण पडुच्च इत्थ उद्धरिया ।
बंधुदए पुण चत्ता ४० सामन्न पडुच्च उद्धंते ॥ (७७)

मोहनीयस्योदयस्थानाना भङ्गा —

एक्कगछक्केक्कारस दस चउक्कइ चेव ।
एए चउवीसगया बारदुगिक्कम्मि एक्कारा ॥सू०–१८॥ (८१) [७१]

एईए विवरण जतगाहाओ—

एगो [4]दसोदओ नवुदयचउर तह अड पंच सग छक्कं ।
छत्तिग पण दुग चउएग हुन्ति उदएसु ठाणाइं ॥५५॥ (८२) [७२]
दसगम्मि एग तिग पढमनवगि सेसेसु नवसु ३ एगेगं ।
पढमे अट्ठगि तिन्नि उ दुग दुग तिग एग चउवीसा ॥५६॥ (८३) [७३]
तिसु सत्तगेसु एगेग तिन्नी तिन्नि उ छट्ठए एगा ।
[5]सव्वुदए चउवीसा, तह एग तिगं तिगं छदुगे ॥५७॥ (८४) [७४]
पणउदइ एग १ बीयम्मि, तिन्नि चउरोदयम्मि एगा उ ।
बार दुगोदयभंगा एक्कोदय होंति एक्कारा ॥५८॥ (८५) [७५]

वणा—

गुणठाणा	मि	मि	सा	मी	अवि	मि.	सा	मी.	अवि	दे.	मि.	सा	मी	अवि	दे	स
उदयठाणा	१०	६	६	६	६	८	८	८	८	८	७	७	७	७	७	७
चउवीसिया	१	३	१	१	१	३	२	२	३	१	१	१	१	३	३	१

१-२ "दुन्ह" इति L D प्रतौ । अय पाठ J. प्रतिप्रेसकोप्यामस्ति, ३ "उदयाभावे वि वाहिज्जिते-' इइ सुत्ताओ मणिया उवसते तिन्नि चेव सताओ" इति L D प्रतौ । ४ "दसोदउ नवोदय" इति वा । ५ "सव्वुदए छतिगे ॥" इति J प्रतिप्रेसकोप्याम् । "सत्तुदए" इत्यपि वा L D. प्रतौ माति । तथा J प्रतावपि स्यात् ।

अवि	दे	स	दे	स	स.	दुगोदए भगा १२
६	६	६	५	५	४	एक्कोदए भगा ११
१	३	३	१	३	१	एत्र चउवीसा ४०+भगा २३

इय मोहरायसेन्ने चालीसकुडंब ४०वग्ग किल भिन्ना ।
वग्गे वग्गे य तहा चउवीसकुडुंबिया अत्थि ॥५९॥ (७८) [७६]
तेहिं य जगडिज्जंतं सव्वजगं कलकलेइ अणवरयं ।
[1]मोत्तुमपमत्तसिद्धा इय एवं मोहिया जीवा ॥६०॥ (७९) [७७]
[2]उदयपया य कुडुंबी माणुसरूंखा य इत्थ किल विदा ।
सूरा य पयइभेया इयरि अमखा मुणेयव्वा ॥६१॥ (८०) [७८]

गुणठाणा	मिच्छ०				सासण०			मिस्स०			अविरय०				देस०			
वधठाणा	२२				२१			१७			१७				१३			
उदयठाणा	७	८	९	१०	७	८	९	७	८	९	६	७	८	९	५	६	७	८
चउवीसिया	१	३	३	१	१	२	१	१	२	१	१	३	३	१	१	३	३	१
चउवीसियमखा	८				४			४			८				८			

प्रमत्त०				अपमत्त०				अपुव्व०			अनिवृत्ति०					सू.	उप०
९				९				९			५	४	३	२	१	०	०
४	५	६	७	४	५	६	७	४	५	६	२	१	१	१	१	१	०
१	३	३	१	१	३	३	१	१	२	२	१२	४	३	२	१	१	
८				८				४									

[3]उदयपए पयविंदसखामाह—

१ "मुत्तु अ०" इति L D. प्रतौ। २ "उदयपयपयकुडुंबी" इति L D प्रतौ। ३ L D प्रतावय पाठ, J. प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति ।

नवतेसीयसएहि उदयविगप्पेहिँ मोहिया जीवा ।
उणहत्तरि सीयाला पयविंदसएहिँ विन्नेया ।।सू०-१६।। (८६) [७६]
चत्ता चउवीसाणं चउवीसगुणा य [1]होंति नवसट्ठा ।
तेवीसभंग मिलिया तेसीया नवसया [2]होंति ।।६२।। (८७) [८०]
वेयतियचउकसाए अन्नयरुदएण भंगबारगगं ।
पणबंधे दुगउदओ चउबंधाई उ एक्कुदया ।।६३।। (८८) [८१]
चउबंधे चउभंगा तिगभंगाईण भंगया छक्कं ।
उवरयबंधे एगो एक्कुदएक्कारभंगाओ ।।६४।। [८२]
जे बंधइ ते वेयइ बंधे य पडुच्च इय दसगं ।। (८६)
पयाणं संखा वुत्ता। इयाणिं पयविंदाण संखा कहिज्जइ–
उवरयबंधे एगो तुरियकसायस्स सुहुमकिट्टुदए ।
संखा विवक्खिया इह एक्कुदए कारभंगाओ ।। (९०)
जत्थुदए चउवीसा जत्तियसंखा स एव गुणकारो ।
चउराइदसंतुदया गुणिनियचउवीससंखाए ।।६५।। (९१) [८३]
दस१०चउपन्न५४ट्ठासी८८सत्तरि७०बायाल४२वीस२०चउ४संखा ।
दुगउदयम्मी एगा एक्कुदइक्कारभंगाओ ।।६६।। (९२) [८४]
चउवीसगुणा काउं पत्तेयं तेसिं होइ इय संखा ।
चालीसा [3]दोन्नि सया२४०बारस छन्नउय १२९६ तह अन्ने ।।६७।। (९३) [८५]
बारहिया इगवीसं२११२सोलस आसी य१६८०[4]सहस अट्ठहिया१००८
चउअसिया ४८०छन्नवई९६चउवीसि२४कार११भंगा ।।६८।। (९४) [८६]
एव सव्वविसुद्धेण ६६४७।
[5]उणहत्तरि छत्तीसा, एक्कारसभंग मिलिय सीयाला ।
अन्ने उ चउरबंधे दुगोदयं बिंति किल किंचि ।।६९।। (९५) [८७]
[6] **नवपंचाणुसएहि उदयविगप्पेहिँ मोहिया जीवा ।**
अउणत्तरि एगुत्तरि पयविंदसएहि विन्नेया ।।सूत्रम्-२०।। (९६) [८८]
पुंवेयबंधवोच्छेय आवली एक्क दोण्ह उदओ उ ।

१-२ 'हुंति" इति L D प्रतौ । ३ "दुन्नि" इति L D प्रतौ । ४"दस य अट्ठहिया १००८। इति J प्रतिप्रेसकोप्याम् । ५ 'उणहत्तरि सीयाला पयविंदाण तु हुन्ति मोहस्स" इति L D प्रतौ । ६ "नवपचाणउयसएहुदय "इत्यपि ।

तेसि मए पयबारसविंदा चउवीस [1]तइ अहिया ।७१॥ (९७) [८९]

मोहनीयस्य बन्धस्थानेषु सत्तास्थानानि–

तिन्नेव उ बावीसे इगवीसे अट्ठवीससत्तरसे ।

छच्चेव तेरनवबंधएसु पंचेव ठाणाणि ॥सूत्रम्-२१॥ (९८) [९०]

[2] संतट्ठाणा संखा बंधे बधे पडुच्च इह भणिया ।

तह वि य सुहगुणणत्थं गुणउदय पडुच्च संवेहो ॥७२॥ (९९) [९१]

बंधगुणठाणगेसुं उदयट्ठाणाउ [3]सुत्तभणियमवि ।

पुणरवि सुमरणहेउं, तह [4]उदए संतसंखाओ ॥७३॥ (१००) [९२]

चउठाणा मिच्छत्ते सासणमिस्से य तिगतिगं जाण ।

अजयाइ अप्पमत्तं चउचउठाणा उ उदयाण ॥७४॥ (१०१) [९३]

सत्तोदय अडवीसा सेसेसुदएसु तिगतिगं जाण ।

अडसत्तछक्कमहिया वीसा बावीसबंधम्मि ॥७५॥ (१०२) [९४]

इगवीसे अडवीसा एक्का सत्ताइतिसु वि पत्तेयं ।

मीसम्मि संतठाणा अडसगचउअहियवीसाउ ॥७६॥ [९५]

मीसम्मि संतठाणा तिगतिग उदएसु पत्तेयं ॥ (१०३)

अडवीसा सगवीसा सम्मुव्वलणे य मीसउदयम्मि ।

चउवीससंतठाणं सेढिं उवरिं पडंतस्स ॥ (१०४)

अजओदयम्मि पढमे अडचउइगअहियवीस २८,२४ २१, इं ।

बीए तइए ते च्चिय तिवीसबावीसंजुत्ता २८,२४,२३,२२ २१ ।७७॥ (१०५) [९६]

इगवीस तुरिए २८,२४,२३,२२जेणं सो वेयगस्स उदओ उ ।

एवं देस–पमत्ता–ऽपमत्तयाणं च दट्ठव्वं ॥७८॥ [९७]

इगवीसवज्जतुरिए२८,२४,२३,२२ चउरो ठाणा उ तत्थ संतम्मि ।

सो वेयगदिट्ठीणं इगवीसा खवगदिट्ठीणं ॥ (१०६)

तिगपणपणचउसंता सव्वे सत्तरसठाणसंखाए ।

एवं देसपमत्तापमत्तयाण च दट्ठव्वं ॥ (१०७)

देसविरओ य दुविहो तिरिमणुसामन्नपंचठाणाइं ।

अडवीसा चउवीसा तिरियाणं देसविरयाणं ॥७९॥ (१०८) [९८]

इगवीसा बावीसा तिरियाण भोगभूमि संभवइ ।

---

१ "इत्थहिया" इति L D प्रतौ । २ 'सतसठाणसखा" इति L D प्रतौ । ३ "सुत्तमणियमवि" इति, J प्रतिप्रेसकोप्याम् । ४ "उदया" इति J प्रतिप्रेसकोप्याम् ।

[1]जत्थ न विरईभावो ते वि य मणुखवगआयाआ ॥८०॥ (१०९) [९९]
अडचउइगेण अहिया वीसा अप्पुव्वि तिसु य पत्तेयं ।
उदएसुं सत्ताओ, वायररागे अओ वोच्छं ॥८१॥ (११०) [१००]
पंचविहचउविहेसुं छछक्कसेसे जाण पंचेव ।
पत्तेयं पत्तेय चत्तारि य बंधवोच्छेए ॥सूत्रम्–२२॥ (१११) [१०१]
पणगाइ५,४,३,२,१एगु संते तह य अबंधम्मि तिन्नि पत्तेयं ।
चउरट्ठइक्कवीसा २४,२८, २१,उवसमसेढिं पडुच्चेए ॥८२॥ (११२) [१०२]
इगवीसा खवगम्मि वि पणगे बंधम्मि किंचि कालमिह ।
मज्झिल्लट्ठकसाएक्खय तेरस १३नपुमि बारसगं १२ ॥८३॥ (११३) [१०३]
थीवेयखीणिगारस पणगे किंची चउक्कबंधेवि ।
हासाइखीणि पणगं चउरो पुरिसम्मि चउबंधे ॥८४॥ (११४) [१०४]
तियबन्धे वि य संता संजलणचउक्क आवलिदुगूणा ।
कोहे खयम्मि तिन्नि उ ते चेव दुगम्मि खणमित्तं ॥८५॥ (११५) [१०५]
माणे खयम्मि तिन्नि उ तत्थेव दुगम्मि जाव अंतमुहू ।
ते चेव एक्कबंधे जाव न खीणा तिजयमाया ॥८६॥ (११६) [१०६]
मायाए खीणाए [3]लोभो बंधम्मि लोभसंता य ।
अव्वंधम्मि वि लोभो सव्वे तियजुत्तठाणाइं ॥८७॥ (११७) [१०७]

सत्ताठाण०	३				१			३			५				५			
गुणट्ठाण०	मिच्छद्दिट्ठि				सासण०			मिस्स०			अविरय०				देसविरय०			
बन्धट्ठाण०	२२				२१			१७			१७				१३			
उदयट्ठाण०	७	८	९	१०	७	८	९	७	८	९	६	७	८	९	५	६	७	८
सत्ताठाणाणि	२८	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"
		२७	"	"				२७	"	"	२४	"	"	"	"	"	"	"
		२६	"	"				२४	"	"	२१	"	"		"	"	"	
												२३	"	"		"	"	"
												२२	"	"		"	"	"
सव्वाणि	१०				३			६			१७				१७			

१ "न॰१" इति L D प्रतौ। २ "चउअट्ठएक्क" इति L D प्रतौ। ३ "लोभे" इति L D प्रतौ।

तेसि मए पयबारसविंदा चउवीस [1]तइ अहिया ।७१।। (९७) [८९]

मोहनीयस्य बन्धस्थानेषु सत्तास्थानानि-

तिन्नेव उ बावीसे इगवीसे अट्ठवीससत्तरसे ।

छच्चेव तेरनवबंधएसु पंचेव ठाणाणि ।।सूत्रम्-२१।। (९८) [९०]

[2] संतट्ठाणा संखा बंधे बधे पडुच्च इह भणिया ।

तह वि य सुहगुणणत्थं गुणउदय पडुच्च संवेहो ।।७२।। (९९) [९१]

बंधगुणठाणगेसुं उदयट्ठाणाउ [3]सुत्तभणियमवि ।

पुणरवि सुमरणहेउं, तह [4]उदए संतसंखाओ ।।७३।। (१००) [९२]

चउठाणा मिच्छत्ते सासणमिस्से य तिगतिगं जाण ।

अजयाइ अप्पमत्तं चउचउठाणा उ उदयाण ।।७४।। (१०१) [९३]

सत्तोदय अडवीसा सेसेसुदएसु तिगतिगं जाण ।

अडसत्तछक्कमहिया वीसा बावीसबंधम्मि ।।७५।। (१०२) [९४]

इगवीसे अडवीसा एक्का सत्ताइतिसु वि पत्तेयं ।

मीसम्मि संतठाणा अडसगचउअहियवीसाउ ।।७६।। [९५]

मीसम्मि संतठाणा तिगतिग उदएसु पत्तेयं ।। (१०३)

अडवीसा सगवीसा सम्मुव्वलणे य मीसउदयम्मि ।

चउवीससंतठाणं सेढिं उवरिं पडंतस्स ।। (१०४)

अजओदयम्मि पढमे अडचउइगअहियवीस २८,२४ २१, ठाणाइं ।

बीए तइए ते च्चिय तिवीसबावीसंजुत्ता २८,२४,२३,२२ २१।।७७।। (१०५) [९६]

इगवीस वज्ज तुरिए २८,२४,२३,२२ जेणं सो वेयगस्स उदओ उ ।

एवं देस-पमत्ता-ऽपमत्तयाणं च दट्ठव्वं ।।७८।। [९७]

इगवीसवज्जतुरिए २८,२४,२३,२२ चउरो ठाणा उ तत्थ संतम्मि ।

सो वेयगदिट्ठीणं इगवीसा खवगदिट्ठीणं ।। (१०६)

तिगपणपणचउसंता सव्वे सत्तरसठाणसंखाए ।

एवं देसपमत्तापमत्तयाण च दट्ठव्वं ।। (१०७)

देसविरओ य दुविहो तिरिमणुसामन्नपंचठाणाइं ।

अडवीसा चउवीसा तिरियाण देसविरयाणं ।।७९।। (१०८) [९८]

इगवीसा बावीसा तिरियाणं भोगभूमि संभवइ ।

---

१ "इत्थहिया" इति L D प्रतौ । २ "सतसठाणसंखा" इति L D प्रतौ । ३ "सुत्तमणियमवि" इति, J प्रतिप्रेसकोप्याम् । ४ "उदया" इति J प्रतिप्रेसकोप्याम् ।

[1]जत्थ न विरईभावो ते वि य मणुखवगआयाओ ॥८०॥ (१०९) [९९]
अडचउइगेण अहिया वीसा अप्पुव्वि तिसु य पत्तेयं ।
उदएसु सत्ताओ, बायरराग अओ वोच्छं ॥८१॥ (११०) [१००]
पंचविहचउविहेसु छछक्कसेसे जाण पचेव ।
पत्तेयं पत्तेय चत्तारि य बंधवोच्छेए ॥सूत्रम्–२२॥ (१११) [१०१]
पणगाइ५,४,३,२,१एसु संते तह य अवंधम्मि तिन्नि पत्तेयं ।
चउरट्ठइक्कवीसा २४,२८, २१,उवसमसेढिं पडुच्चेए ।८२। (११२) [१०२]
इगवीसा खवगम्मि वि पणगे बंधम्मि किंचि कालमिह ।
मज्झिल्लट्ठकसाएक्खय तेरस १३नपुमि बारसगं १२ ॥८३॥ (११३) [१०३]
थीवेयखीगिगारस पणगे किंची चउक्कबंधेवि ।
हासाइखीणि पणगं चउरो पुरिसम्मि चउबंधे ॥८४॥ (११४) [१०४]
तियबन्धे वि य संता संजलणचउक्क आवलिदुगूणा ।
कोहे खयम्मि तिन्नि उ ते चेव दुगम्मि खणमित्तं ।।८५॥ (११५) [१०५]
माणे खयम्मि तिन्नि उ तत्थेव दुगम्मि जाव अंतमुहू ।
ते चेव एक्कबंधे जाव न खीणा तिजयमाया ॥८६॥ (११६) [१०६]
मायाए खीणाए [3]लोभो बंधम्मि लोभसंता य ।
अब्बंधम्मि वि लोभो सव्वे तियजुत्तठाणाइं ॥८७॥ (११७) [१०७]

सत्ताठाण०	३				१			३			५				५			
गुणट्ठाण०	मिच्छद्दिट्ठि				सासण०			मिस्स०			अविरय०				देसविरय०			
बन्धट्ठाण०	२२				२१			१७			१७				१३			
उदयट्ठाण०	७	८	९	१०	७	८	९	७	८	९	६	७	८	९	५	६	७	८
सत्ताठाणाणि	२८	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"
		२७	"	"				२७	"	"	२८	"	"	"	"	"	"	"
		२६	"	"				२४	"	"	२४	"	"		"	"	"	
												२३	"	"		"	"	"
												२२	"	"		"	"	"
सव्वाणि	१०				३			६			१७				१७			

१ "तत्थ" इति L D प्रतौ । २ "चउअट्ठएक्क" इति L D प्रतौ । ३ "लोभे" इति L D प्रतौ ।

सत्ताठाण०	५				५				३			६	६	५	५	५	४	३	
गुणट्ठाण	पमत्त				अपमत्त०				अपुव्व			अनियट्टि०					सु	उ०	
बंधट्ठाण०	९				९				९			५	४	३	२	१	०	०	
उदयट्ठाण०	४	५	६	७	४	५	६	७	४	५	६	२	१	१	१	१	१	०	
सत्ताट्ठाणाणि	२८	〃	-	〃	〃	-	-	-	〃	-	-	〃	〃	〃	〃	〃	〃	〃	
	२४	-	-	〃	〃	-	〃	〃	-		-	〃	-	-	〃	〃	-	〃	
	२१	〃	〃		〃	〃	-		〃	〃	〃	-	〃	〃	〃	〃	〃	〃	
		२३	-	〃		〃	〃	〃				१३	११	४	३	२	१		
		२२	〃	-		〃	〃	-				१२	५	३	२	१			
												११	४						
सव्वाणि	१७				१७				६			२७					४	३	१३२

गुणठाणगउदएसु संतट्ठाणाण संख इय वुत्ता ।
गुणठाणगपत्तेयं, [1]सव्वसंखा य इय भणिमो ॥८८॥ (११८) [१०८]
दसतिगनवमिच्छाइसु, अजयाई पचगम्मि सगसयरी ।
छच्छक्क पणचउक्कम्मि पणपण सेसेसु चउतिग अबंधे ॥८९॥ (११९) [१०९]
[2]मोहे सवेहभणणा तेत्तीससय तु संतठाणाण ।
गुणठाणगे पडुच्चा बंधे पुग अट्ठ[3]नउई य ॥९०॥ (१२०) [११०]
दसतिगवीसा सत्तरस दुसु य पत्तेय संतठाणाइं ।
सगवीस पचगाई चउर अबंधम्मि य ठाणाइं ॥९१॥ (१२१) [१११]
सगवीस मीसगम्मी सेसा सामन्न चउसु उदएसु ।
इय अजयमीसगाणं वीसं सत्तरमबंधम्मि ॥९२॥ (१२२) [११२]
दसनवपन्नरसाइं बधोदयसन्तपयडिठाणाणि ।
भणियाणि मोहणिज्जे एत्तो नाम पर वोच्छं ॥सू० २३॥ (१२३) [११३]

१ 'सव्वसंख" इति L D प्रतौ । २ "मोहसवे०" इति J प्रतिप्रेसकोप्याम् । ३ "नवई ॥१२०॥" इति L D प्रतौ ।

दसनवपणरसाई इच्चाई विवरियं समासेण ।
[1]इत्तो य नामबंधा तेवीसाईणि विवरेमि ॥९२॥ (१२४) [११४]

नाम्न उत्तरप्रकृतीना बन्धस्थानानि

तेवीसपणवीसा छव्वी अट्ठवीसगुणतीसा ।
तीसे गिसमेग बंध[2]ट्ठाणाइँ नामस्स ॥सू०-॥२४॥ (१२५) [११५]

ठवणा-२३, २५ २६, २८ २९, ३०, ३१, १,

वन्न१रस१गंध१फासा१ तेयग१कम्मइग१अगुरु१उववायं ।
निम्मेण१-नाम-धुवयाइ सेसा अडवन्नअधुवाओ ॥९३॥ (१२.) [११६]
गइ ४ अणुपुव्वीचउ २ छ उ संघयणा६गी६तसाइवीसं२०च ।
जाइ५सरीरं३ गतिगं३ परघाचउ४ तित्थ विहगदुग (१२७)

[3]अडवन्न अधुवाओ-

तग्गयणुपुव्विजाई थावरमाई उ दूसरविहूणा ।
धुवबंध९हुंडउरलं तेवीसअपज्जथावरए ॥९४॥ (१२८) [११७]
सासपरघायखेवे पणवीसा सुहुमबायराणं तु ।
छव्वीस आयवेण उज्जोअपरित्ति बंधतिगं ॥९५॥ [११८]
अपजत्तं अवणित्ता पज्जत्तगखेव पज्जपाओगा ।
सासपरघायखेवे सो बंधो पज्जपाओगो ॥९६॥ [११९]
अपज्जत्त अवणित्ता पज्जत्तगखेव सा उ तेवीसा ।
सासपरधायखेवे पणवीसा होइ पगईणं ॥ (१२९)
पुढवाइबायराणं पज्जाणं सुहमबायराणं तु ।
छव्वीस आयवेणं अहवा उज्जोयपरियत्तो ॥ (१३०)

[4]बायरएगिंदिपाउग्गा एसा ॥ बंधतिग थावराणेय ॥
[5]सेसा बंधा य इय नेया ॥

गइजाइछेयपुव्वी धुवबंधा हुंडउरलदुगथूलं ।
दूसररहिया अथिराइ ५ तसअपज्जत्तपत्तेयं ॥९७॥ (१३१) [१२०]
बीया पणवीसेसा तसपाउग्गा तहा य सरसासे ।
विहगपरघायखेवे उणतीसा तीस उज्जोए ॥९८॥ (१३२) [१२१]

---

१ "एत्तो य" इति L D प्रतौ। २ "ठाणाणि" इति वा । ३-४ "अय पाठ L D प्रतावस्ति,त J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति । ५ "अय पाठ L. D प्रतौ नास्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या चास्ति।

पणवीस अपज्जाण उणतीसा तीस पज्जपाओगा ।
बितिचउरिंदियपंचिंदियाण तिरियाण बंधे उ ॥९९॥ (१३३) [१२२]
पणवीसा गुणतीसा तिरियसमा तीस तित्थसंजुत्ता ।
बंधतिगं मणुजोगं नेरइयअसुद्धअडवीसा ॥१००॥ (१३४) [१२३]

सा चेय—

नरयदुगं २ परघायं १ सासं१दुहखगइ१सयल१हुंडं च१ ।
धुवबंधि ६तमचउक्कं २ वेउव्विदुगं २ च अथिराई ६॥१०१॥ (१३५) [१२४]
देवदुग २परघायं १ सासं १ सुभखगइ१सयल१चतुरंसं १ ।
धुवबंधी६तसदसगं१०वेउव्विदुगं२च अडवीसा ।१०२॥ (१३६) [१२५]
मा तित्थे उणतीसाऽऽहारदुगे तीस तिसु य इगतीसा ।
चउठाणा देवाण सेढिदुगे एग जसकित्ती ॥१०३॥ (१३७) [१२६]
चउ पणवी । सोलस नव बाणउई सया [1]उ अडयाला ।
ईयालोत्तर छायालसया एक्केक्क बंधविही ॥सू०-२५॥(१३८) [१२७]

[3]ठवणा—

बंधठाणा	२३	२५	२६	२८	२९	३०	३१	१
भंगा	४	२५	१६	९	९२४८	४६४१	१	१

बायरपत्तेगियरे भंगा चत्तारि बंधतेवीसे ।
पणवीसे पणवीसा छव्वीसे भंगसोलसगं ॥१०४॥ [१२८]

ठवणा—

बा	बा	सु	सु
प०	सा	प	सा
१	२	३	४

एस गमो सव्वेसिं भंगाणं चारणे होइ ॥ (१३९)
बायर–थिर–पत्तेया सुभ-जस–पडिवक्खभंगबत्तीसा ।
साहार–सुहमि जसवज्ज वीस बारस असंभविया ॥१०५॥ (१४०) [१२९]

१ य" इति वा । २ "इयलीसोत्तर" इति L D प्रतौ । ३ इदं यन्त्रं L D प्रतावस्ति ।

बादर	बादर	बादर	बादर	बादर	बादर	बादर	बादर	बादर	बादर	बादर	बादर	बादर	बादर	बादर	बादर
पत्तेअ	पत्तेअ	पत्तेअ	पत्तेअ	पत्तेअ	पत्तेअ	पत्तेअ	पत्तेअ	साधा	साधा	साधा	साधा	साधा.	साधा	सा	सा
थिर	थिर	थिर	थिर	अथिर	अथिर	अथिर	अथिर	थिर	थिर	थिर	थिर	अथिर	अथिर	अथिर	अथिर
सुभ	सुभ	असुभ	असुभ	सुभ	सुभ	असुभ	असुभ	सुभ	सुभ	असुभ	असुभ	सुभ	सुभ	असुभ	असुभ
जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस
१	२	३	४	५	६	७	८	०	९	०	१०	०	११	०	१२

सुहम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहम
पत्ते	पत्ते	पत्ते	पत्ते	पत्ते	पत्ते	पत्ते	पत्ते	सा-धा०	सा-धा०	सा-धा०	सा-धा०	सा-धा०	सा-धा०	सा-धा०	सा-धा०
थिर	थिर	थिर	थिर	अथिर	अथिर	अथिर	अथिर	थिर	थिर	थिर	थिर	अथिर	अथिर	अथिर	अथिर
सुभ	सुभ	असुभ	असुभ	सुभ	सुभ	असुभ	असुभ	सुभ	सुभ	असुभ	असुभ	सुभ	सुभ	असुभ	असुभ
जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	स
०	१३	०	१४	०	१५	०	१६	०	१७	०	१८	०	१९	०	२०

[1]साहारणस्स वा सुहमस्स वा दोण्हं वा जसेण सह बधो न भवइ।

असमत्तमणुय [तह] बितिचउपणिंदितिरियाण बंधि पणवीसे ।
असुहपयडीण जेणं न तेसि परियत्ति एक्केक्को ॥ (१४१)

असमत्तमणुयबितिचउपणिंदितिरि पणवीसि तह पंच ।
असुभपयडीण जेणं न तेसि परियत्ति संभवइ ॥१०६॥ [१३०]

उज्जोय—आयवेणं थि भजससेयरेहि सोल ।
उज्जोवेणं अट्ठ उ आयवपरियत्ति अट्ठेव ॥१०७॥ (१४२) [१३१]

१ अय पाठ L D प्रतावस्ति।

ठवणा—

थिर	थिर	थिर	थिर	अथिर	अथिर	अथिर	अथिर
सुभ	सुभ	असुभ	असुभ	सुभ	सुभ	असुभ	असुभ
जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस
१	२	३	४	५	६	७	८

एसा वि ठावणा इह बायरएगिंदिविगलदेवाणं ।
तह तीसे मणुजोगे पत्तेयं जस्स संभविया ॥१०८॥ (१४३) [१३२]
थिरसुभजसइयरेहिं बितिचउरिंदीण अट्ठ पत्तेयं ।
उणतीसतीसबंधे अडवीसे अट्ठ देवाणं ॥१०९॥ (१४४) [१३३]

ठवणा—[1]

बंधठा०	२५	२८	२९	३०
बेइ०	१		८	८
तेइ०	१		८	८
चउ०	१		८	८
देव०		८		

तीसा य मणुयजोगा उणतीसा तीस एगतीसा य ।
देवाण अट्ठ अट्ठ य एक्केक्को भंगमेएसु ॥११०॥ (१४५) [१३४]

ठवणा—

जोग्ग	मणु	देव०		
बंधो	३०	२९	३०	३१
भंगा	८	८	१	१

थिरछक्कं सुभखगई सप्पडिवक्खेहि चारिया संता ।
गुणिया संघयणा-ऽऽगीहिं[2] भंगया सयलतिरियाणं ॥१११॥ (१४६) [१३५]

१ इदं यन्त्रं L D प्रतावस्ति । २ "संघयणतहागिईहिं ... ॥१४६॥" इति L D प्रतौ ।

चत्तारि सहस्सा छस्सयाउ अट्ठुत्तराउ गुणतीसे ।
एवं उज्जोयतीसे मणुए [1]उणतीसि ते चेव ॥११२॥ (१४७) [१३६]

थिर	सुभ	सुभग	सुसर	आइज्ज	जस	सुभख०	सघ०	सठा	बधठा०	२५	२९	३०
ऽथिर	ऽसुभ	दुभग	दूसर	अणाइज्ज	ऽजस	ऽसुभख०	१२८ ×६	७६८ ×६	तिरि०	१	४६०८	४६०८
२	४	८	१६	३२	६४	१२८	७६८	४६०८	मणु०	१	४६०८	०

नारय अडवीसेगो एगो कित्तीए सेणिमासज्ज ।
तेरससहस्सनवसयपणयाला [2]सव्वपयडीणं ॥११३॥ (१४८) [१३७]
तेवीसाई ठाणा सवियप्पा अट्ठ विवरिया बंधे ।
एत्तो य सव्वजियबंधठाण पत्तेय भंगजंतइयं ॥ (१४९)

ठवणा—

नामबंधठाणा	२३	२५	२६	२८	२९	३०	३१	१	सव्वसखा
बधठाणभंगा	४	२५	१६	९	९२४८	४६४१	१	१	१३९४५
एगिंदिय०	४	२०	१६	०	०	०	०	०	४०
विगलिंदिय	०	३	०	०	२४	२४	०	०	५१
प०तिरिय०	०	१	०	०	४६०८	४६०८	०	०	९२१७
मणुयपाउ०	०	१	०	०	४६०८	८	०	०	४६१७
नरयपाउ०	०	०	०	१	०	०	०	०	१
देवपाउग्ग०	०	०	०	८	८	१	१	०	१८
अपाउग्ग०	०	०	०	०	०	०	०	१	१

एत्तो य उदयठाणा सव्वजियाणं च हुंति सामन्नं ।
ते बारस वीसाई जाव य अट्ठेव पज्जंता ॥ (१५०)

नाम्न उदयस्थानानि—

१ "उणतीसे" इति L D, प्रतौ । २ "सव्वपिंडेण ॥१४८॥" इति L. D. प्रतौ । ३ इदं यन्त्रं L D. मतावस्ति ।

ठवणा—

थिर	थिर	थिर	थिर	अथिर	अथिर	अथिर	अथिर
सुभ	सुभ	असुभ	असुभ	सुभ	सुभ	असुभ	असुभ
जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस
१	२	३	४	५	६	७	८

एसा वि ठावणा इह बायरएगिंदिविगलदेवाणं ।
तह तीसे मणुजोगे पत्तेयं जस्स संभविया ॥१०८॥ (१४३) [१३२]
थिरसुभजसइयरेहिं बितिचउरिंदीण अट्ठ पत्तेयं ।
उणतीसतीसबंधे अडवीसे अट्ठ देवाणं ॥१०९॥ (१४४) [१३३]

[1]ठवणा—

बंधठा०	२५	२८	२९	३०
बेइ०	१		८	८
तेइ०	१		८	८
चउ०	१		८	८
देव०		८		

तीसा य मणुयजोगा उणतीसा तीस एगतीसा य ।
देवाण अट्ठ अट्ठ य एक्केक्को भंगमेएसु ॥११०॥ (१४५) [१३४]

ठवणा—

जोग्ग	मणु	देव०		
बंधो	३०	२९	३०	३१
भंगा	८	८	१	१

थिरछक्कं सुभखगई सप्पडिवक्खेहि चारिया संता ।
गुणिया [2]संघयणा-ऽऽगीहिं भंगया सयलतिरियाणं ॥१११॥ (१४६) [१३५]

१ इदं यन्त्रं L D प्रतावस्ति । २ "संघयणतहागिईहिं [भंगया] (भंगा य) सयलतिरियाण ॥१४६॥" इति L D प्रतौ ।

चत्तारि सहस्सा छस्सयाउ अट्ठुत्तराउ गुणतीसे ।
एवं उज्जोयतीसे मणुए [1]उणतीसि ते चेव ॥११२॥ (१४७) [१३६]

थिर	सुम	सुभग	सुसर	आइज्ज	जस	सुभख०	सघ०	सठा	वधठा०	२५	२६	३०
ऽथिर	नसुभ	दुभग	दूसर	मणाइज्ज	ऽजस	ऽसुभख०	१२८ ×६	७६८ ×६	तिरि०	१	४६०८	४६०८
२	४	८	१६	३२	६४	१२८	७६८	४६०८	मणु०	१	४६०८	०

नारय अडवीसेगो एगो कित्तीए सेणिमासज्ज ।
तेरससहस्सनवसयपणयाला [2]सव्वपयडीणं ॥११३॥ (१४८) [१३७]
तेवीसाइं ठाणा सवियप्पा अट्ठ विवरिया बंधे ।
एत्तो य सव्वजियबंधठाण पत्तेय भंगजंतडयं ॥ (१४९)

ठवणा—

नामबंधठाणा	२३	२५	२६	२८	२९	३०	३१	१	सव्वसखा
बधठाणभगा	४	२५	१६	९	९२४८	४६४१	१	१	१३९४५
एगिंदिय०	४	२०	१६	०	०	०	०	०	४०
विगलिंदिय	०	३	०	०	२४	२४	०	०	५१
प०तिरिय०	०	१	०	०	४६०८	४६०८	०	०	९२१७
मणुयपाउ०	०	१	०	०	४६०८	८	०	०	४६१७
नरयपाउ०	०	०	०	१	०	०	०	०	१
देवपाउग्ग०	०	०	०	८	८	१	१	०	१८
अपाउग्ग०	०	०	०	०	०	०	०	१	१

एत्तो य उदयठाणा सव्वजियाणं च हुंति सामन्नं ।
ते बारस वीसाई जाव य अट्ठेव पज्जंता ॥ (१५०)

नाम्न उदयस्थानानि —

१ "उणतीसे" इति L D, प्रतौ । २ "सव्वपिंडेण ॥१४८॥" इति L. D. प्रतौ । ३ इदं यन्त्रं L D. प्रतावस्ति ।

वीसिगवीसाचउवीसगा[1]इ इगतीसगत्ति एगहिया ।
उदयट्ठाणाणि भवे नव अट्ठ य [2]हुंति नामस्स॥सू.-२६॥ (१५१) [१३८]
तेवीसाई ठाणा सविगप्पा अट्ठ विवरिया बंधे ।
तह बारस उदयगया वीसाई अट्ठ पज्जंता ॥११४॥ [१३९]

ठवणा- २० । २१ । २४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ ।
३० । ३१ । ९ । ८ ॥

उदएसु जे सामी कित्तय उदया उ कस्स पत्तेयं ।
भंगा वि य पत्तेयं तेसि [3]संखाइयं भणिमो ॥११५॥ (१५२) [१४०]
निम्मेण१थिरा१ऽथिर१तेय१कम्म१वन्नाइ४अगुरु१सुह१मसुहं[4] ।
नामधुवोदय बारस १२ सेसा अधुवा उ पणपन्नं ॥११६॥ (१५३) [१४१]
तस४थावराइ४चउ चउ, तह सुभगा८दुभग४आगि६संघयणा६ ।
गइ४अणुपुव्वी४ य तहा, परघाचउ४ तित्थ१ उवघायं१ (१५४)
जाइ५सरीरो३वगा३ विहदुग२ सव्वा वि पंचवन्नाओ ५५ ।
बारुदयठाणनामे पत्तेयं पयडि विवरेमि ॥ (१५५)
तसतिग-सुभगा-ऽऽइज्जा मणुगइ-सगल-जसकित्ति [4]तह धुवया ।
वीसा उ समुग्घाए [5]सेसा उ कमेण पक्खेवा ॥११७॥ (१५६) [१४२]
ओरालियदुग२सुसभं १ पत्ते१ घाय१इयरसंठाणं ६ ।
छव्वीस सजोगिकेवलि ओरालियमीसि समुघाए ॥११८॥ [१४३]
ओरालियदुग२सुमभं १ पत्तेयु१वघाय१इयरसंठाणा ६ ।
वि य छक्क सत्त ए छूढे छव्वीस समुघाए ॥ (१५७)
परघाय-सास-विहदुग-सरदुग-एगयरखेवि तीसुदओ ।
सामन्नकेवलि [6]तिगं तित्थयरे तित्थसंजुत्ता ॥११९॥ (१५८) [१४४]

सामन्नकेवलिउदया-२०, २६, २८, २९, ३०, ८ ॥
तित्थयरउदया-२१, २७, २९, ३०, ३१, ९ ॥

सद्दनिरोहे तीसा उणतीसा सासरोहि तित्थयरे ।

---

१ "उ एगाहिया य इगतीसा" इति वा पाठ । २ 'होंति' इति L D प्रतौ । ३ "सखा य इय" इति L D. प्रतौ । ४ "धुवउदया" इति L D प्रतौ । ५ "तइए चउपचमे समए॥१५६॥" इति L D प्रतौ । ६ "दुग" इति J प्रतिप्रेसकोप्यामस्ति । किन्तु स सम्यग् न प्रतिभाति ।

उणतीसट्ठावीसा केवलि तह मयंतरेण इमं ॥१२०॥ [१४५]
तह सव्वरोहि नवगं छट्ठाणा हुन्ति उदएसु ॥ (१५९)
उणतीसट्ठावीसा केवलि तह सव्वरोहिं अडपयडी ।
अन्ने उ अट्ठ उदया मयंतरेणं तु उदएसु ॥ (१६०)
[1]सर-सास-परधा रोधा विहगइ-पत्तेय-कमनिरोहेणं ।
तीसुदया गुणतीसाइ जाव पणवीसउदएणं ॥१२१॥ (१६१) [१४६]
उववाए चउवीसा ओरालदुगेण होइ बावीसा ।
[2]उमभा-ऽऽगीण निरोहे वीसा धुवरोहि अट्ठेव ॥१२२॥ (१६२) [१४७]
सेलेमी आरंभे उदयट्ठाणाउ अट्ठ केवलिणो ।
सेलेसी पडिवन्ने अट्ठुण्हं पयडिउदए उ ॥१२३॥ (१६३) [१४८]
एए सामण्णे केवलम्मि तित्थयरि तित्थजुयठाणा ।
लिहियाउ पंचसंगह–विवरण-अप्पयरठाणाउ ॥१२४॥ (१६४) [१४९]
गइजाइआणुपुव्वी थावरसुहुमं अपज्जधुवउदया ।
दुभगाणाइज्जाजस विग्गहगइ पगइइगवीसा ॥१२५॥ (१६५) [१५०]
ना आणुपुव्विरहिया अ एगिंदिसुहुमइयराणं ।
हुंडु-वधा-पत्तेएहि [3]उरलदेहेहि चउवीसा ॥१२६॥ (१६६) [१५१]
पणवीसा छव्वीसा सत्तावीसा य [4]होइ सा चेव ।
परघाय-सास-आयव कमेण एगिंदुदयठाणा ॥१२७॥ (१६७) [१५२]
गइजाइआणुपुव्वी तसतिगणाइज्जअजसदुभगं च ।
धुवउदया सव्वे वि हु अंतरगइ पगइइगवीसा ॥१२८॥ (१६८) [१५३]
सा आणुपुव्विरहिया संघयण-तहा-ऽऽगि-एगयरखेव ।
तह पत्ते-उवधाए ओरालदुगेण छव्वीसा ॥१२९॥ (१६९) [१५४]
[5]एसा पुण छव्वीसा मणु-तिरि-विगलाण उदयपाओगा ।
लद्धिअपज्जापज्जाण करणे नियमा अपज्जाण ॥१३०॥ (१७०) [१५५]
परघाय जत्थ खेवे उदए जीवाण ते उ पज्जाण ।

---

१ "सर१सास १ परघाय विहगइ" इति L D प्रतौ। २ 'वज्रर्षभसंघयणसमचतुरस्रसंस्थानयोर्निरोधे' इत्यर्थः । ३ "उरलपरदेहि" इति L D प्रतौ । ४ 'हुन्ति ता" इति L D प्रतौ । ५ "एए उ दुवे उदया" इति L D प्रतौ ।

तणुपज्जत्ती नियमा इयरा [1]उ कमेण पज्जत्ती ॥१३१॥ (१७२) [१५६]
विहगइ-परघायजुया अट्ठावीसा ससासउणतीसा ।
उज्जोएणं तीसा सरेण सा एगतीसा उ ॥१३२॥ (१७१) [१५७]
संघयणूणा सव्वे तएव तिरिओदया य देवेसु ।
पढम चिय संठाणं वेउव्विदुर्गं च इट्ठखगइसरा ॥१३३॥ (१७३) [१५८]
एगिंदियाण पंच उ छच्छक्क सुरविगलमगलतिरियाणं ।
मणुए उज्जोऊणा उदयट्ठाणाउ [2]सव्वेवि ॥१३४॥ (१७४) [१५९]

एगिंदियाण–२१,२४,२५,२६, २७। देवाण–२१, २५, २७,२८,२९,३० ।
विगलसगलाण–२१, २६, २८, २९, ३०, ३१ । मणुयाण उदयठाणा–२१.२६,२८,२९,३० ॥

इगवीसूणा पच उ तिरिजइवेउव्विहारगाण च ।
अविरयमणुवेउव्विय उज्जोऊणा य चत्तारि ॥१३५॥ (१७५) [१६०]
नेरइयाणं [3]तिरिसम संघयणुज्जोयवज्ज पंचेव २५,२७,२८,२९,३०
असुहपयडीण उदया अविवक्खा भगया पंच ॥१३६॥ (१७६) [१६१]
जे उदएसु सामी उदयपयडीण विवरणं विहियं ।
इत्तो [4]पत्तेय इहं भंगाणं चारणं [5]भणिमो ॥१३७॥ (१७७) [१६२]
अप्पज्जसुहुमअजसा सेयरमिलिएहिँ अट्ठ उ विगप्पा ।
सुहुमअपज्जे य जसं वज्जित्ता पंच सभविया ॥१३८॥ (१७८) [१६३]

ठवणा—

अप	अप.	अप	अप	प	प	प	प
सु	सु	बा	बा	सु	सु	बा	बा
अज	ज	अज	ज	अज	ज	अज	ज
५	०	४	०	३	०	२	१

अप्पज्जसुहुमसाहार अजसइयरेहि भंगसोलसगं ।
सुहुमअपज्जे जसउदयवज्ज छक्कं असंभवियं ॥१३९॥ (१७९) [१६४]

---

१ 'जे जत्थ सभविया ॥१७२॥" इति L.D प्रतौ । २ "पञ्चेव ॥१७४॥" इति L D प्रतौ । ३ "सुरसमउज्जोऊणा य उदयपञ्चेव ।" इति L D प्रतौ । ४ "कुणिमो" इति L. D प्रतो ।

एगिंदियठवणा—

ऽप	ऽप.	ऽप	ऽप	ऽप.	ऽप	ऽप.	ऽप.	पज्ज	पज्ज	पज्ज	पज्ज	पज्ज.	पज्ज.	पज्ज	पज्ज.
सु.	सु	सु	सु.	बा.	बा	बा	बा	सु	सु	सु.	सु	बा.	बा.	बा	बा.
सा.	सा	प	प	सा.	सा.	प	प	सा	सा	प	प	सा	सा	प	प
ऽज	ज	ऽज.	ज	ऽज.	ज	ऽज	ज	ऽज	ज	ऽज.	ज.	ऽज	ज.	ऽज.	ज
१०	०	९	०	८	०	७	०	६	०	५	०	४	३	२	१

बायरपत्तेयजसा सप्पडिवक्खेहि अट्ठ उ विगप्पा ।
सुहुमे वज्जेज्ज जसं उदए छच्चेव संभविया ॥१४०॥ (१८०) [१६५]

एगिंदियपणुवीसाठवणा—

बायर	बायर	बायर	बायर	सुहुम	सुहु	रहु	सुहु.
पत्ते	पत्ते.	साहारण	साहा	पत्ते	पत्ते	साहा.	साहा.
ऽजस	जस	ऽजस	जस		जस		जस
१	२	३	४	५	०	६	०

छव्वीसा वि य तिविहा सासुज्जोए य आयवेगयरे ।
सासे छा पुव्वुत्ता पत्तेयजसेयरेहिं चउजोए ॥१४१॥ (१८१) [१६६]

ठवणा—

उज्जोय	उज्जो	उज्जो	उज्जोय
पत्तेय	पत्तेय	साहा	साहा
जस	ऽजस	जस	ऽजस
१	२	३	४

आयवछव्वीसाए पत्तेयजसाजसेहिं दो चेव ।
वाए विउव्विकरणा चउवीसाइसु य एक्केक्कं ॥१४२॥ (१८२) [१६७]
सास छवीसे छूढे आयवसगवीस अहव उज्जोए ।
पुव्वुत्ता छब्भंगा पिंडे एगिंदिबायाला ॥१४३॥ (१८३) [१६८]

एगिंदिय उदयठवणा—

उदय० → ↓	२१	२४	२५	२६	२७	
सामन्न०	५	१०	६	६	०	
उज्जोय०	०	०	०	४	४	भंगा
आयव०	०	०	०	२	२	
विउव्वि०	०	१	१	१	०	एवं
कुलभङ्गा →	५	११	७	१३	६	४२

बेइंदियइगवीसे पज्जत्तजसेयरेहिँ चत्तारि ।
अपजत्ते जसवज्जा तिन्नि उ छव्वीसि एमेव ॥१४४॥ (१८४) [१६९]
पज्जत्तजसजसेहि अट्ठावीसम्मि भंगया दोन्नि ।
एव गुणतीसतीसे एक्कत्तीसे य ते चेव ॥१४५॥ (१८५) [१७०]
नवरं दो अणुतीसा सासे छूढे य अहव उज्जोए ।
तह तीसाओ तिन्नि उ सरदुगउज्जोयएगयरे ॥१४६॥ (१८६) [१७१]
सरदुगएगयरेणं दो इगतीसाउ भंगबावीसं ।
बेइंदिय–तेइंदिय–चउरिंदिय मिलिय छावट्ठी ॥१४७॥ (१८७) [१७२]

विगलठवणा–

उदय	२१	२६	२८	२९	३०	३१	एवं ↓
भंगा	९	९	६	१२	१८	१२	६६

सुभगाइज्जजसेहिं सप्पडिवक्खेहि अट्ठ उ विगप्पा ।
अप्पज्जदुभगणाइज्जअजस एगो य इय नवगं ॥१४८॥ (१८८) [१७३]
पज्जत्तसुभगआइज्जकित्ति तह सेयराहिँ सोलसगं ।
असमत्ते य सुभतिगं वज्जिय नव होति सभविया ॥१४९॥ [१७४]

इयाणिं पचिंदियउच्चारणाठवणा–

ऽपज्ज ↓	पज्जत्त→	सुभग	सुभग	सुभग	सुभग	दुभग	दुभग	दुभग	दुभग
दुभग		आइज्ज	आइज्ज	ऽणाइज्ज	ऽणाइज्ज	आइज्ज	आइज्ज	ऽणाइ	अणाइज्ज
अणाइ•		जस	ऽजस	जस	ऽजस	जस	ऽजस	जस	ऽजस
ऽजस १	→ ←भगा	२	३	४	५	६	७	८	९

इगवीसुदयविगप्पा संघयण तहागि गुणिय छव्वीसे ।
एग असमत्तभंगो अट्ठासीया मया [1]दोन्नि ॥१५०॥ (१८६) [१७५]
विहदुगपरियत्तेणं [2]अट्ठावीसम्मि सुद्धया दुगुणा ।
[3]सासुज्जोउणतीसे बावन्नेक्कारस मया उ ॥१५१॥ (१९०) [१७६]
सुरदुगउज्जोएणं [4]एगयरेण परिवत्ति तीसुदए ।
पंचसया छावत्तर तिगुणा सत्तरस अडवीसा ॥१५२॥ (१९१) [१७७]
सरदुगएगयरेण छूढे इगतीसि भंगया एए ।
एक्कारसबावण्णा पणिदितिरिउदयठाणेसु ॥१५३॥ (१९२) [१७८]
नव उणनउया दोसय छावत्तरपंच दुगुण तह तिगुणा ।
दुगुणा इगतीसाए उणवन्न छलुत्तरा पिंडे ॥१५४॥ (१९३) [१७९]

पणिंदितिरियठवणा–

उदय	२१	२६	२८	२९	३०	३१	एव
भंगा	९	२८९	२८८ २८८	५७६ ५७६	५७६ ५७६ ५७६	५७६ ५७६	४९०६

एवं मणुयगईए मणुयगई इत्थ होइ वत्तव्वा ।
नवरं उज्जोयरहिया उदया पंचेव सवियप्पा ॥१५५॥ (१९४) [१८०]
नव उणनउया दोसय छावत्तरपंच दुसु य पत्तेयं ।
[5]बावण्णेक्कारसया छव्वीसदुरुत्तरा पिंडो ॥१५६॥ (१९५) [१८१]

मनुयठवणा–

उदय	२१	२६	२८	२९	३०	एव ↓
भंगा	९	२८९	२८८ २८८	५७६	५७६ ५७६	२६०२

वीसोदयम्मि एगो छच्च छव्वीसे य तीसचउवीसा ।
[6]विहगा सरसंठाणेहिं एगो अट्ठोदए भंगो ॥१५७॥ (१९६) [१८२]
पढमंतिमदोभंगा गहिया सेसाउ मणुयगहणेण ।
तित्थोदय एक्कोक्को सव्वे तित्थयरि छब्भंगा ॥१५८॥ (१९७) [१८३]

१ "दुन्नि" इति L D प्रतौ। २ "छावत्तरपच उदयअडवीसा।" इति L D प्रतौ। ३ "सासुउज्जोयुणतीसे" इति L D प्रतौ। ४ "एगेगयरपरि०" इति L D प्रतौ। ५ "बावन्ने०" इति L D प्रतौ। ६ "विह १-सर१ सठाणेहि एगो" इति L D प्रतौ।

केवलितित्थयरठवणा—[1]

उदय →	२०	२१	२६	२७	२८	२९	३०	३१	९	८	भंगा ↓
केव०	१	०	(६)	(१२)	(१२)	०	(२४)	०	०	१	२(५६)
तित्थ	०	१	०	१	०	१	१	१	१	०	६

दूभगणाइज्जाजससेयरमिलिएहिँ अट्ठ उ विगप्पो ।
पत्तेयं पत्तेयं उदएसुं छसु वि देवाणं ॥१५९॥ (१९८) [१८४]

ठवणा-

दूभग	दुभग	दुभग	दुभग	सुभग	सुभग	सुभग	सुभग
अणाइज्ज	अणाइज्ज	आइज्ज	आइज्ज	अणाइज्ज	अणाइज्ज	आइज्ज	आइज्ज
अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस
१	२	३	४	५	६	७	८

सासुज्जोएगयरे तह सरउज्जोयएगयरसहिया ।
अट्ठावीसुणतीसे दुगुणा चउसट्ठि सव्वे वि ॥१६०॥ (१९९) [१८५]
एवं विउव्वितिरिए इगवीसूणेसु भंगछप्पन्ना ।
तह मणुए वेउव्वि य उज्जोयविणा उ बत्तीसं ॥१६१॥ (२००) [१८६]
उज्जोयरहियतीसा मोत्तूण चउसु उदएसु ।

ठवणा-

उदय०→	२१	२५	२७	२८	२९	३०	सव्वे ↓
देवभंगा	८	८	८	१६	१६	८	६४
वेउव्वियति	०	८	८	१६	१६	८	५६
,, म	०	८	८	८	८	०	३२

आहारगउदएसुं भंगा सत्तेव तिरियसारिच्छा ।
आहारदुगं खिविउं वेउव्विदुगं तु अवणेहिं ॥१६२॥ (२०१) [१८७]

१ J प्रतिप्रेसकोप्या २७-२८ उदयस्थानद्वये केवलिसत्का भङ्गा न दर्शिता। L D प्रतौ पुन ६-६ षड् षड् भङ्गा दर्शिता। तथाऽन्यत्रा-ऽन्यतरविहायोगतेरुदयत्वाद् द्वादशाना भङ्गाना सम्भव इति हेतोर्द्वादश भङ्गा निरूपिता, तथैवा-ऽन्यत्र दर्शितत्वात्।

तिरियसरिच्छा जेणं दुभगऽणाइज्ज अजसपयडीओ ।
अविरयवोच्छिन्ना ते न तेसि उदओ जईणं तु (२०२)
एवं जइवेउव्वे नवरं उज्जोयभंगया तिण्णि ।
सेसा उ मणुयगहणे नेरइयअसुद्धपंचेव ॥१६३॥ (२०३) [१८८]

ठवणा—

उदय	२१	२५	२७	२८	२९	३०	सव्वे
आहारग०	०	१	१	२	२	१	७
जति०	०	१	१	२	२	१	७
नारकिय०	१	१	१	१	१	०	५

नाम्न उदयस्थानाना भङ्गा—

एगवियालिक्कारस ाे छ प तेत्तीसा ।
बारस सयाणऽहिगाणि [1]बि सोईहि ॥सू.२७॥ (२०४) [१८९]
[2]उणतीसे ारसयाणऽहिगा होंहि ।
एक्केक्कगं च वीसादट्ठुदयते उदयविही ॥सू.-२८॥ (२०५) [१९०]

ठवणा—

उदय	२०	२१	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	९	८
भगा	१	४२	११	३३	६००	३३	१२०२	१७८५	२९१७	११६५	;१	१

एएसिं विवरण—

पण नव नव नव अट्ठग एगं एग इह उदयइगवीसे ।
इगिविगलतिरियमणुए सुरनारयतित्थि बायाला ॥१६४॥ (२०६) [१९१]
छच्चत्तारि य एगं बायरसुहुमे य पवणवेउव्वे ।
एगिंदियाण भंगा एक्कारस [3]होंति चउवीसे ॥१६५॥ (२०७) [१९२]
सत्तऽट्ठ अट्ठ अट्ठ य एगो एग तह उदयपणवीसे ।
एगिंदिसुरविउव्वियतिरिमणुआहारनेरइए ॥१६६॥ (२०८) [१९३]
तेरस नव इगि विगले दोसय नउय मणुय तह तिरिए ।
छच्च सया छव्वीसे उदए भंगाण एगत्थ ॥१६७॥ (२०९) [१९४]

१ "दुपच०" इत्यपि । २ "उणतीचिक्कारस" इत्यपि । ३ "हुति" इति L D. प्रतौ ।

छच्चट्ठ अट्ठ अट्ठ य एगो एग तह एग सगवीसे ।
एगिंदिविगिलितिरिनरसुरनारयतित्थआहारे ॥१६८॥ (२१०) [१९५]

छक्क पणसयछावत्तराइँ दुसु तह य दुसु य सोलसगं ।
नव दुग एग भंगा अट्ठावीसम्मि उदयम्मि ॥१६९॥ (२११) [१९६]

विगलतिरिमणुयदेवा तिरिनरवेउव्विहारनेरइए ।
इह बारसय दुरुत्तर मिलिया एगत्थ पिंडेणं ॥१७०॥ (२१२) [१९७]

एक्कारस बावन्ना छावत्तरपंच [1]दुसु य सोलसगं ।
नवबारसदुगभंगा इक्केक्ककमेण उणतीसे ॥१७१॥ (२१३) [१९८]

तिरिनरदेवा तिरिनर [2]वेउव्वियविगलहारगजईण ।
तित्थे नारयकमसो मिलिया सत्तारपणसीया ॥१७२॥ (२१४) [१९९]

सतरस सय अडवीसा अट्ठारस तह इगार बावन्ना ।
अट्ठट्ठ एग एग तह एगं तीसउदयम्मि ॥१७३॥ (२१५) [२००]

तिरिविगलमणुयदेवा तिरिनरवेउव्विहारतित्थयरे ।
इय मिलिया भंगाणं उणतीससयाउ [3]सत्तरस ॥१७४॥ (२१६) [२०१]

एक्कारस बावन्ना बारस एक्को य भंग इगतीसे ।
तिरिविगलतित्थमिलिया सव्वे पणसट्ठ[4]इक्कारा ॥१७५॥ (२१७) [२०२]

वीस नव अट्ठ उदएसु भंग[5]मेक्केक्क ते य केवलिणो ।
इय संखा उदएसुं बारससु कमेण पत्तेयं ॥१७६॥ (२१८) [२०३]

बायाला छावट्ठी उणवण्णसया छलुत्तरविगप्पा ।
इगिविगलतिरिपणिंदिसु छव्वीस दुरुत्तरा मणुए ॥१७७॥ (२१९) [२०४]

चउसट्ठी पण सुरनारयाण छप्पण्ण तिरियवेउव्वे ।
पणतीस मणुविउव्विसु सत्तट्ठ य हारकेवलिणो ॥१७८॥ (२२०) [२०५]

इय सव्वुदयविगप्पा एक्काणउया सया उ सगसयरी ७७९१ ।
एत्तो सतट्ठाणा ते बारस होंति नामस्स ॥१७९॥ (२२१) [२०६]

---

१ "दुदुसु' इति J प्रतिप्रेसकोप्या किन्तु स सम्यग् न भाति । २ "विउव्वि तह विगल०' इति जे प्रतिप्रसकोप्याम । ३ "सत्तारा" इति L D प्रतौ । ४ "एक्कारा" इति L D प्रतौ । ५ "एक्केक्कु" इति L D प्रतौ ।

मव्वुदयविगाग्ठवणा—

नामउदयठाणा →	२०	२१	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	९	८	भग-सखा
उदए सव्वभगा →	१	४२	११	३३	६००	३३	१२०२	१७८५	२९१७	११६५	१	१	७७९१
एगिंदियभगा →	०	५	११	७	१३	६	०	०	०	०	०	०	४२
विगलिंदिय ,, →	०	९	०	०	९	०	६	१२	१८	२	०	०	६६
पर्चिदियतिरिय ,, →	०	९	०	०	२८९	०	५७६	११५२	१७२८	११५२	०	०	४९०६
मनुज ,, →	०	९	०	०	२८९	०	५७६	५७६	११५२	०	०	०	२६०२
वेउव्वियतिरिय ,, →	०	०	०	८	०	८	१६	१६	८	०	०	०	५६
,, मणुज , →	०	०	०	८	०	८	८	८	०	०	०	०	३२
देवाण , →	०	८	०	८	०	८	१६	१६	८	०	०	०	६४
तित्थयर ,, →	०	१	०	०	०	१	०	१	१	१	१	०	६
केवलीण ,, →	१	०	०	०	(म ६)	०	(म) ६	(म) ६	(म) ६	०	०	१	२
वेउव्वियजइ ,,	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	३
आहारग ,, ,, →	०	०	०	१	०	१	२	२	१	०	०	०	०
नारक , →	०	१	०	१	०	१	१	१	०	०	०	०	५

नाम्न सत्तास्थानानि—

तिदुणउई [1]उगुणउई अट्ठच्छलसी असीइ उगुसीई ।
अट्ठच्छप्पन्नत्तरि नव अट्ठ य नामसंताणि॥ सूत्रम्-२९॥ (२२२) [२०७]

ठवणा—९३, ९२, ८९, ८८, ८६, ८०, ७९, ७८, ७६, ७५, ९, ८।

गइ-अणुपुव्वी चउ चउ बंधण-संघाय-जाइ-वन्न-रसा ५ ।
तणु ५ पत्तेयं पण पण अंगतिगं अट्ठ फासा य ॥१८१॥ (२२३) [२०८]
छागी छस्संघयणा विहदुग-दुगगंध सेयरा वीसं ।
पत्तेया अट्ठ भवे तेणउई नामसंताओ ॥१८२॥ (२२४) [२०९]

[1] "दुगुनउइ" इति वा, "गुणनउई। अडसी छलसी असीइ गुणसीई। अट्ठय०" इति वा ।

तित्थूणा बाणउई तेणउई चेवहारचउऊणा ।
सत्ताए गुणनउई अट्ठासी होइ तित्थूणा ॥१८२॥ (२२५) [२१०]
नेरइयसुरदुगाणं एगयरूव्वलणि होइ छासीई ।
[1]तत्तो विउव्विचउसुरदुगाण आसीइ उव्वलणो ॥१८३॥ (२२६) [२११]
मणुदुगउव्वलणेणं अट्ठत्तरि तेउवाउसंतमिणं ।
पढमचउ । तेरस—खएण चत्तारि खवगस्स ॥१८४॥ (२२७) [२१२]
साहारसुहुमचउजाइ थावरं आयवं च निरयदुगं ।
तिरियदुगं उज्जोयं तेरस अनियट्टिवोच्छेए ॥१८५॥ (२२८) [२१३]
मणुयगइजाइत ।यरं च पज्जत्तसुभगआएज्जं ।
जसकित्ती तित्थयरं अजोगि जिणसंति नव होंति ॥१८६॥ (२२९) [२१४]
ता तित्थूणा अट्ठ उ केवलिसामन्नसंतए [2]होंति ।
[3]इत्तो बंधुदयाणं [4]ट्ठाणाण संवेहो ॥१८७॥ (२३०) [२१५]
बंधुदयसंतठाणा एगत्थ परूविया वि सव्वत्थ ।
न विसेसो पगईसु[5] कायव्वो ठाणमासज्ज ॥१८८॥ (२३१) [२१६]

नाम्नो बन्धोदयसत्तास्थानानि-

नव पच उदयसता तेवीसे ˆ छव्वीसे ।
अट्ठ चउर ।िसे [4]नवसत्तुगुतीसतीसम्मि ॥सूत्रम्-३१॥ (२३२) [२१७]

ठवणा-

बन्ध०	२३	२५	२६	२८	२९	३०
उदय०	९	९	९	८	९	९
सत्ता	५	५	५	४	७	७

तेवीस पन्नवीसा छव्वीसुणतीसतीस[5]बंधˆ ।
नव नव उदयट्ठाणा वीसा नव अट्ठ [6]मोत्तूणं ॥१८९॥ (२३३) [२१८]

ठवणा—२१, २४ २५, २६, २७, २८, २९, ३०. ३१,

इगिविगला सविगप्पा तिरिमणु ञ तह सवेउव्वा ।
नियनियउदयविगप्पेहि सव्वे बधंति संभविया ॥१९०॥ (२३४) [२१९]

---

१ "णिरसुरदुगचउविक्कियअट्ठासी असीइ उव्वलणे ॥ (२२६)" इति L D प्रतौ। २ "हुति" इति L D प्रतौ। ३ "एत्तौ" इति L D- प्रतौ। ४ 'मगि गुण तीο' इत्यपि। ५ "बधेसु" इति L D प्रतौ। ६ "मुत्तूण" इति L D प्रतौ।

नवरं इह पडिसेहो तिरिमणुयाणं च भोगभूमीणं ।
तणुयकसायत्तणओ अट्ठावीसं च बंधति ॥१९१॥ (२३५) [२२०]
ते पज्जत्ता एत्थ य अपज्जि गुणतीसमवि य बंधंति ।
जम्हा ते देवेसुं न अन्नगइ जंति पाएणं ॥१९२॥ (२३६) [२२१]
तह ईसाणंतसुरा पज्जत्तेगिंदियाण पाओगा ।
बंधंति मिच्छदिट्ठी पणवीसा तह य छव्वीसा ॥१९३॥ (२३७) [२२२]
गुणतीसतीसबंधा सव्वे देवा य तह य नेरइया ।
नियनियउदयविगप्पेहिं [1]सम्ममिच्छाइ जहजोग्गं ॥१९४॥ (२३८) [२२३]

ठवणा-

बंधट्ठाणा	२३	२५	२६	२८	२९	३०
उदयट्ठाणा	९	९	९	८	९	९
सत्ताट्ठाणा	५	५	५	४	७	७

नव नव उदयट्ठाणा बंधे बंधे य हुंति पत्तेयं ।
[2]सवियप्पाई वुत्ता अट्ठावीसम्मि पुण एए ॥१९५॥ (२३९) [२२४]
अट्ठावीसे बंधे उदयट्ठाणा उ अट्ठ नायव्वा ।
केवलितिगचउवीसं चउरो [3]मोत्तूण सवियप्पा ॥१९६॥ (२४०) [२२५]
इगवीसे छव्वीसे उदए जे वट्टमाणया जीवा ।
खाइगवेयगदिट्ठी नियमा बंधंति न उ अन्ने ॥१९७॥ (२४१) [२२६]
सेसेसुं उदएसुं सम्मदिट्ठि तह मिच्छदिट्ठी य ।
अज्झत्थवसा बंधहि सुरनारयजोग्गनरतिरिया ॥१९८॥ (२४२) [२२७]

२८ बंधे ८ उदयट्ठाणा-२१।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१।

उदएसुं जे जीवा वट्टंता बंधगा उ ते भणिया ।
तेसिं तु संतठाणा कित्तिय के कस्स तं भणिमो ॥१९९॥ (२४३) [२२८]
(१)इगि(२)विगल (३)सगल पंचसिगा उ चत्तारि आइए उदया ।
(१)उणवीस(२)ऽट्ठारस(३)दुसयअट्ठनउआ उ न उ अन्ने
(खुड्डीगाहा) ॥२००॥ (२४४) [२२९]
(१)उणवीस(२)ऽट्ठारस (३)दुसय अट्ठनउया य हुन्ति भंगाणं ।

१ "सम्ममिच्छा य" इति L D प्रतौ। २ "सविगप्पा इय" L D प्रतौ । ३ "मुत्तूण" इति L D प्रतौ ।

(१)इगि (२)विगल(३)सगलतिरिए पणतीसा तिन्नि सव्वे वि ३३५॥२०१॥ (२४५) [२३०

[1]ठवणा–

उदय	२१	२४	२५	२६	सव्वे भगा		
सू० अप०	१	२			३	१६	एगिंदिय
सू० प०	१	२	१	१	५		
बा अ०	१	२			३		
बा प०	२	४	१	१	८		
त्रि०अप०	३			३	६	१८	विगल०
वि० प०	६			६	१२		
प०ति०अप०	१			१	२		पणिंदितिं०
प०ति०प०	८			२८८	२९६	२९८	
सत्ताठा०	५	५	५	५	२०	३३५	

[2]सेसा उ सव्वभंगा अट्ठुत्तरिसंतवज्जिया नेया ।
चउगइ जियसंभविया ७४५६ पणसंतट्ठाण पुण एए ॥२०२॥ (२४६) [२३१]

बाणउई अट्ठासी, अट्ठुत्तरि असि य होइ [3]छासीइ ।
चउपढमेसुदएसुं अट्ठुत्तरिवज्ज सेसेसु ॥२०३॥ (२४७) [२३२]

इय एवं संवेहो बंधट्ठाणेसु पंचसु वि भणिओ ।
नव पंच उदयसंता वुत्ता सेम च [4]वोच्छामि ॥२०४॥ (२४८) [२३३]

नव पंच उदय संतगाण २

ठवणा–

बंधट्ठाणा	२३	२५	२६	२९	३०
उदयट्ठाणा	९	९	९	९	९
संतट्ठाणा	४०	४०	४०	४०	४०

१ इदं यन्त्रं L D प्रतावस्ति । J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति। २ "सेसा अट्ठुत्तरि संतवज्जिया भंगा ७४५६ ॥ इय एव सव्वभंगा अट्ठुत्तरिसंतवज्जिया नेया" । इति J प्रतिप्रेसकोप्याम् । ३ "छासीया" इति L D प्रतौ । ४ "वुच्छामि" इति L D प्रतौ ।

उणतीसतीसवंधे संतट्ठाणा उ सत्त पत्तेयं ।
पण पण इह पुव्वुत्ता तित्थजुया दुन्नि पुण एए ।। (२४९)
चउवीसं इगतीसं उदए [1]मोत्तु उणतीसवंधम्मि ।
[2]दो दो य संतठाणा तेणउई अउणनउई य ।।२०५।। (२५०) [२३४]
एवं तीसे वंधे नवरं छव्वीस मुत्तु छट्ठाणा ।
इय संवेहो वुत्तो नव सत्तुगतीसतीसम्मि ।।२०६।। (२५१) [२३५]

वधट्ठाणा	२९	३०	
उदयट्ठाणा	७	६	दो दो संतट्ठाणा-९३-८९
सत्ताठाणा	१४	१२	

अट्ठावीसे वंधे संवेहो अट्ठ उदय चउसंता ।
बाणउई अट्ठासी छासी तह अउणनउई य ।।२०७।। (२५२) [२३६]
छसु आइएसु दो दो बाणउई अट्ठसी य ठाणाइं ।
तीसे चउरो ठाणा उणनउई मुत्तु इगतीसे ।।२०८।। (२५३) [२३७]

अडवीसबधट्ठाणे ठवणा–

उदयठाणाणि	२१	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	एव
सत्ताठाणाणि	९२	९२	९२	९२	९२	९२	९२	९२	१९
	८८	८८	८८	८८	८८	८८	८९	८८	
							८८	८६	
							८६		

तीसोदय उणनउई अट्ठावीसे कहं भवे वंधे ।
आचार्य प्राह-मणुतित्थसंतगम्मी मिच्छगए निरयभिमुहम्मि ।।२०९।। (२५४) [२३८]
तित्थयरसंतकम्मी सम्मदिट्ठी उ वंधए णियमा ।
उणतीसं तित्थजुयं वेयगवंधा उ नो अन्ने ।। (२५५)

1 "मुत्तु" इति L D प्रतौ। △ पेज न० ५२ △ एतच्चिह्नगत टिप्पनक द्रष्टव्यम् ।

(१)इगि (२)विगल(३)सगलतिरिए पणतीसा तिन्नि सव्वे वि ३३५॥२०१॥ (२४५) [२३०

[1]ठवणा–

उदय	२१	२४	२५	२६	सव्वे भंगा		
सू० अप०	१	२			३	१६	एगिंदिय
सू० प०	१	२	१	१	५		
बा० अ०	१	२			३		
बा० प०	२	४	१	१	८		
त्रि०अप०	३			३	६	१८	विगल०
त्रि० प०	६			६	१२		
पं०ति०अप०	१			१	२		पंचिंदियति०
पं०ति०प०	८			२८८	२९६	२९८	
सत्ताठा०	५	५	५	५	२०	३३५	

[2]सेसा उ सव्वभंगा अट्ठुत्तरिसंतवज्जिया नेया ।
चउगइ जियसंभविया ७४५६ पणसंतट्ठाण पुण एए ॥२०२॥ (२४६) [२३१]
बाणउई अट्ठासी, अट्ठुत्तरि असि य होइ [3]छासीइ ।
चउपढमेसुदएसुं अट्ठुत्तरिवज्ज सेसेसु ॥२०३॥ (२४७) [२३२]
इय एवं संवेहो बंधट्ठाणेसु पंचसु वि भणिओ ।
नव पंच उदयसंता वुत्ता सेसं च [4]वोच्छामि ॥२०४॥ (२४८) [२३३]

नव पंच उदय संतगाणि २

ठवणा–

बंधट्ठाणा	२३	२५	२६	२९	३०
उदयट्ठाणा	९	९	९	९	९
संतट्ठाणा	४०	४०	४०	४०	४०

१ इदं यन्त्रं L D प्रतावस्ति । J प्रतिप्रेसकोप्यां नास्ति । २ "सेसा अट्ठुत्तरि संतवज्जिया भंगा ७४५६ ॥ इय एवं सव्वभंगा अट्ठुत्तरिसंतवज्जिया नेया" । इति J प्रतिप्रेसकोप्याम् । ३ "छासीया" इति L D प्रतौ । ४ "वुच्छामि" इति L D. प्रतौ ।

उणतीसतीसबंधे संतट्ठाणा उ सत्त पत्तेयं ।
पण पण इह पुव्वुत्ता तित्थजुया दुन्नि पुण एए ॥ (२४६)
चउवीसं इगतीसं उदए [1]मोत्तु उणतीसबंधम्मि ।
[2]दो दो य संतठाणा तेणउई अउणनउई य ॥२०५॥ (२५०) [२३४]
एव तीसे बंधे नवरं छव्वीस मुत्तु छट्ठाणा ।
इय संवेहो वुत्तो नव सत्तुगतीसतीसम्मि ॥२०६॥ (२५१) [२३५]

बंधट्ठाणा	२९	३०	
उदयट्ठाणा	७	६	दो दो संतट्ठाणा-९३-८९
सत्ताठाणा	१४	१२	

अट्ठावीसे बंधे संवेहो अट्ठ उदय चउसंता ।
बाणउई अट्ठासी छासी तह अउणनउई य ॥२०७॥ (२५२) [२३६]
छसु आइएसु दो दो बाणउई अट्ठसी य ठाणाइं ।
तीसे चउरो ठाणा उणनउई मुत्तु इगतीसे ॥२०८॥ (२५३) [२३७]

अडत्रीसबंधट्ठाणे ठवणा–

	उदयठाणाणि	२१	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	एवं
सत्ताठाणाणि		९२	९२	९२	९२	९२	९२	९२	९२	
		८८	८८	८८	८८	८८	८८	८९	८८	१९
								८८	८६	
								८६		

तीसोदय उणनउई अट्ठावीसे कहं भवे बंधे ।
आचार्य प्राह-मणुतित्थसंतगम्मी मिच्छगए निरयमिमुहम्मि ॥२०९॥ (२५४) [२३८]
तित्थयरसंतकम्मी सम्मदिट्ठी उ बंधए णियमा ।
उणतीसं तित्थजुयं वेयगबंधा उ नो अन्ने ॥ (२५५)

---

१ "मुत्तु" इति L D प्रतौ। △ पेज नं० ५२ △ एतच्चिह्नगत टिप्पनकं द्रष्टव्यम्।

वेयगसम्मद्दिट्ठी णिरयाभिमुहो वमेइ सम्मत्तं ।
तेण मुहुत्तं भिन्न उणनउई मिच्छमंता उ ॥ (२५६)

सतट्ठाणाण सखामाह-

आइतिए वीमसयं उणवीसा तह य होइ चउपण्णा ।
बावन्ना वि य कमसो सत्ताठाणाइं छण्हं पि ॥२१०॥ (२५७) [२३९]

ठवणा-

बधट्ठाणा	२३	२५	२६	२८	२९	३०
उदयट्ठाणा	९	९	९	८	९	९
सत्ताठाणा	४०	४०	४०	१९	५४	५२

एगेगमेगतोसे एगे एगुदय अट्ठ संतम्मि ।
उवरयबधे दस दस वेयगसतमि ठाणाइ । सूत्रम् ३२॥ (२५८) [२४०]
इगतीसे बंधम्मी उदओ तीसन्ह तेणवइसत्ता ।
तह एगबंधि उदयं ३० संतट्ठाणाइँ तहि अट्ठ ॥२११॥ [२४१]
जसकित्ति बंधु तीमन्ह उदय तह संतठाण अट्ठे व ॥ (२५९)
पढमा चउरो ठाणा ते चिय पत्तेय तेरसविहूणा ।
इय अट्ठ संतठाणा जसकित्तीबंधसंवेहो ॥२१२॥ (२६०) [२४२]
उवरयबंधे दस उदयठाण तह दस य संतठाणाइं ।
चउवीसा पणवीमा छलसी अट्ठत्तरी मुत्तु ॥२१३॥ (२६१) [२४३]

[1]ठवणा-

बधठा०	३१	१	०
उदय०	१	१	१०
सत्ता०	१	८	१०

वीसछ्वीसा तीमा केवलिणो पुव्ववुत्त उदयाउ ।
सरसाससव्वरोहे नवअट्ठयअहियवीस अट्ठेव ॥२१४॥ (२६२) [२४४]
दो दो य संतठाणा उणसी पन्नत्तरी य सव्वेसु ।
अट्ठोदयम्मि संतं ते चिय अट्ठेव संतम्मि ॥२१५॥ (२६३) [२४५]

---

१ इद यन्त्र L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति ।

एए केवलिउदया तित्थजुया ते य छच्च तित्थयरे ।
दो दो संतट्ठाणा आसी [1]छाहत्तरी तह य ॥२१६॥ (२६४) [२४६]
छट्ठुदए नवपयडी ते च्चिय संतम्मि चरिमसमयम्मि ।
तित्थयरकेवलिस्सा तइयं ठाणं तु संतम्मि ॥२१७॥ (२६५) [२४७]
उवसंते चउ पढमा तीसे उदयम्मि तह य तित्थयरे ।
रसणं केवलिनियरे उवरयबंधम्मि संवेहो ॥२१८॥ [२४८]
तेरस तेरस भेया केवलितित्थयर तह य उवसंते ।
चउ पढमा तीसुदए उवरयबंधम्मि संवेहो ॥ (२६६)

[2]उवरयबंधे ठवणा—

उदयठाण०	२०	२१	२६	२७	२८	२९	३०	३१	९	८	सव्वे
सत्ताठाण०	२	२	२	२	२	४	८	०	३	३	३०

सामान्येन नाम समाप्तम् ॥

मूलुत्तरपगईसुं बंधोदयसंतठाण इय भणिया ।
जीवगुणठाणगेसुं तह उत्तरपगइसुं भणिमो ॥२१९॥ (२६७) [२४९]
तिविगप्प पगइठाणेहि जीवगुणसण्णिए ठाणे ।
भंगा पउंजियव्वा जत्थ जहासंभवो भवइ ॥सू०-३३॥ (२६८) [२५०]
तिविगप्पा बोधव्वा बंधं उदयं च संतठाणतिगं ।
भंगा पउंजियव्वा जियगुणठाणाण संभविया ॥२२०॥ (२६९) [२५१]

चतुर्दशजीवस्थानेषु ज्ञानावरणान्तराययोर्बन्धोदयसत्तास्थानभङ्गा –

तेरससु जीवसंखेवएसु नाणंतरायतिविगप्पो ।
एक्कम्मि तिदुविगप्पो करणं पइ [3]एत्थ अविगप्पो ॥सू०-३४॥(२७०) [२५२]

[4]नाणावरणतरायठवणा—

जीवट्ठाणा	१३	सण्णी	
बंध	५	५	०
उदय	५	५	५
सत्ता	५	५	५

१ 'तह्हाहारचउरहिया" इति J प्रतिप्रसकोप्याम् । २-४ इद यन्त्र L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेस-कोप्या नास्ति । ३ "इत्थ" इति L. D प्रतौ ।

करणं पइत्ति जोगी मणमाईणि उ हवंति करणाइं ।
सव्वाओ दुण्हं पि हु करणं पइ तेण अविगप्पो ॥२२१॥ (२७१) [२५३]

जीवस्थानेषु दर्शनावरणीयस्य बन्धोदयसत्तास्थानभङ्गा –

तेरे नव चउ पणगं नवसएगम्मि भग [1]मेक्कारा ।
[2]वेयणियाउं गोए विभज्ज मोहं पर वोच्छं ॥सू.-३५॥ (२७२) [२५४]
नवबंधं नवसंतं चउपण उदयम्मि दंसणावरणे ।
[3]तेरससु आइमेसुं सण्णी पुव्वुत्त[4]एक्कारा ॥२२२॥ (२७३) [२५५]

[5]ठवणा–

बंधठाणा	९	९	६	६	४	४	४	०	०	०	०
उदयठाणा	४	५	४	५	४	५	४	४	५	४	४
सत्ताठाणा	९	९	९	९	९	९	६	९	९	६	४

जीवस्थानेषु वेदनीयगोत्रयोर्बन्धादिस्थानानां भङ्गा –

पज्जत्तगसन्नियरे अट्ठ चउक्कं च वेयणियभंगा ।
सत्तग तिगं च गोए पत्तेयं जीवठाणेसु ॥ सूत्रम्–०॥ (२७४) [२५६]

ठवणा–

बंधो	अ-सा०	अ-सा०	सा-य०	सा-य०	०	०	०	०
उदओ	अ-सा०	सा-य०	अ० सा०	सा-य०	अ-सा०	सा-य०	अ सा०	सा-य०
सत्ता	२	२	२	२	२	२	१	१

पढमा दुग तह तुरिओ गोए वेयणियभंगचत्तारि ।
तेरससु आइमेसुं सन्नीपज्जत्ति पुव्वुत्ता ॥२२३॥ (२७५) [२५७]

[7]तेरससु जीवठाणेसु ठवणा—

बंध०	नी	नी	उच्च
उदय०	नी	नी	नी
सत्ता	नी	२	२

१ "भिक्कारा" इति L D प्रतौ। २ 'वेयणियाउय गोए" इति L. D प्रतौ । ३ "तेरससु पि इमासु" इति L D प्रतौ। ४ इक्कारा" इति L D प्रतौ। ५-६-७ इदं यन्त्रं L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्यां नास्ति।

[1]सन्निपज्जत्तगस्स ठवणा—

बंधो	नीय०	नीय०	नीय०	उच्च	उच्च	०	०
उदओ	नीय०	नीय०	उच्च०	नीय	उच्च	उच्च	उच्च
सत्ता	नीय०	२	२	२	२	२	१

सण्णिम्मि सत्त भंगा पढमो कह जेण तेउवाऊणं ।
[2]भण्णइ पढमु[3]ववण्णे तेहितो तिरियसण्णिम्मि ॥२२४॥ (२७६) [२५८]

जीवस्थानेष्वायुषो बन्धादिस्थानभङ्गा

पज्जत्ता-ऽपज्जत्तगस गे पज्जत्तअमण-सेसेसु ।
अट्ठावीसं दसग नवगं पणगं च आउस्स ॥सू.– ०॥ (२७७) [२५९]

सण्णिअपज्जमणुतिरिय मणुतिरिजोगं च आउ बंधंति ।
[4]एक्केक्कु बंधपुव्वे बंधु४त्तर४ चउर इय दसओ ॥२२५॥ (२७८) [२६०]
सन्नी पज्जे भंगा अडवीसं पुव्ववुत्त आउम्मि ।
पज्जाऽमण तिरियसमा पण [5]इक्कारे य ५ देवसमा ॥२२६॥ (२७९) [२६१]

[1]ठवणा—

११ जीवठा०	५
प० अस०	६
अप० सं०	१०
प० स०	२८

जीवस्थानेषु मोहनीयबन्धादिस्थानभङ्गा –

अट्ठसु पंचसु एगे एगदुगं दस य मोहबंधगए ।
तियचउनवउदयगए तिग तिग पण्णरससंतम्मि ॥सू.–३६॥ (२८०) [२६२]

१-६ इद यन्त्र L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति, २ 'भन्नइ" इति L D प्रतौ । ३ "०ववन्ने" इति L D प्रतौ । ४ "एगो अवधपुव्वे" इति J. प्रतिप्रेसकोप्याम् । ५ "एक्कारे" इति L D प्रतौ ।

[1]ठवणा–

जीवठा०	८	५	१
बंधठा०	१	२	१०
उदयठा०	३	४	६
सत्ताठा०	३	३	१५

अट्ठ उ जीवट्ठाणा सत्त अपज्जत्तसुहमपज्जो य ।
बावीसबंध एगं दुबंध२पढमा भवे पणगे ॥२२७॥ (२८१) [२६३]

[2]ठवणा–

जीवठा०	८	५
बंधठा०	२२	२२ २१

बायरविगलअसन्नी पज्जत्ता पंच हुंति जियठाणे ।
बावीसा इगवीसा दुगबंधा मिच्छसाणाणं ॥२२८॥ (२८२) [२६४]
छब्बावीसे [3]चउएगवीस [भंगं दु]बंधम्मि जे उ पुव्वुत्ता ।
इगविगलेसुं तेच्चिय जेण तिवेएसु ते जंति ॥२२९॥ (२८३) [२६५]
अडनवदसगं उदया पत्तेयं जीवठाणतेरससु ।
बावीसबंधगेसुं इयरेसु नवंतसत्ताई ॥२३०॥ (२८४) [२६६]
चउवीसा चउचउरो तिगतिग उदएसु वन्निया पुव्वं ।
नवरं नपुंसवेइसु चउरट्ठ पणिदिए * [4]मोत्तुं ॥२३१॥ (२८५) [२६७]
छप्पन्नं इह अट्ठा सोलस चउवीस[5]गुणिअनामेहि ।
अट्ठसया बत्तीसा ८३२ उदयविगप्पा [6]य मोहस्स ॥२३२॥ (२८६) [२६८]

पयविंदविहिमाह–

छत्तीसाणं दसगं चउरो बत्तीस तिन्नि छत्तीसा ।
अट्ठऽट्ठ गुणायारो तह चउवीसाइ पयविंदा ॥२३३॥ [२६९]

१-२ इदं यन्त्रं L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्यां नास्ति । ३ "चउइगवीसे [भगदु]" इति L D प्रतौ * पेज न० ४२ * एतच्चिह्नगत टिप्पनकं द्रष्टव्यम् । ४ "मुत्तु" इति L D. प्रतौ । ५ "गुणसनामेहिं" इति L D प्रतौ । । ६ "उ" इति L D प्रतौ ।

अन्ना बत्तीसा वि य चउवीसाए गुणित्तु सिवएसु ।
बाहत्तरिसयचउसट्ठिअहियपयविंदपिंडेणं ॥२३४॥ [२७०]

उदए नपुंसवेए बंधे बावीस उदयठाणतिगं ।
अड नव दसगं कमसो इगदुगएक्का चउवीसा ॥ (२८७)
उदयगुणा छत्तीसा ते दस ठाणा नपुंसउदयम्मि ।
ते अट्ठा छत्तीसा दसहिँ गुणा तिन्नि सय सट्ठा ३६० ॥ (२८८)
पज्जत्तबायरविगला ४ बंधे इगवीस साणमासज्ज ।
सत्ताइ नवंतुदया नपुंस चउरट्ठ पत्तेय ॥ (२८९)
उदयगुणा बत्तीसा चउग्गुणा १२८ ते य हुंति इह अट्ठा ।
पुव्वुत्त ३६० एइ अट्ठा अट्ठगुणा हुन्ति पयविंदा ३९०४ ॥ (२९०)
छत्तीसं चउवीसा तीसु वि पत्तेय मिच्छगुणठाणे १०८ ।
सासण अमणे पज्जे बत्तीसा विदचउवीसा १४० ॥ (२९१)
चउरुत्तरगुणयाला ३९०४ अट्ठगुणा इत्थ होति पयविंदा ।
तेत्तीससया इह सट्ठिसहिय ३३६० चउवीसगुणकारे ॥ (२९२)
बाहत्तरि चउसट्ठा ७२६४ पयविंदाणं तु मोहनीयस्स ।
तेरससु आइमेसु सन्नीपज्जत्ति पुव्वुत्ता ॥ (२९३)

जीवट्ठाणा	सुहुम ऽअ			बायर ऽप			बेइं॰ऽप			ते ऽप			चउ ऽप॰			ऽस ऽप			स ऽप॰			सुहुमपज्ज		
बंधट्ठाणा	२२			२२			२२			२२			२२			२२			२२			२२		
बंधभंगा	६			६			६			६			६			६			६			६		
उदयट्ठाणा	८	९	१०	८	९	१०	८	९	१०	८	९	१०	८	९	१०	८	९	१०	८	९	१०	८	९	१०
चउवीसियाण अट्ठाण च सखा	१	२	१	१	२	१	१	२	१	१	२	१	१	२	१	१	२	१	१	२	१	१	२	१
चउवीसिया अट्ठगा वा	८			८			८			८			८			❀२४			❀२४			८		

❀ पेज न० ४२ द्रष्टव्यम् ।

बादरपज्ज			वे पज्ज			ते पज्ज			च पज्ज			ऽस-पज्ज.			वा पज्ज			वे.पज्ज			ते.पज्ज			च पज्ज			ऽस.पज्ज		
२२			२२			२२			२२			२२			२१			२१			२१			२१			२१		
६			६			६			६			६			४			४			४			४			४		
८	९	१०	८	९	१०	८	९	१०	८	९	१०	८	९	१०	७	८	९	७	८	९	७	८	९	७	८	९	७	८	९
१	२	१	१	२	१	१	२	१	१	२	१	१	२	१	१	२	१	१	२	१	१	२	१	१	२	१	१	२	१
८			८			८			८			२४			८			८			८			८			२४		

= ५६ अट्ठगा + १६ चउवीसा=८३२ उदयविगप्पा ।

उदए-ऽट्ठगा	३२	३०	३२	३२	३२	१६	१६	३२	२२	३२	३२	३२	१६	३२	३२	३२	३२	१६
पए-ऽट्ठगा-चउवीसिया वा	३६	३६	३६	३६	२६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	२२	३२	३२	३२	२२
पयविंदा	२८८	२८८	२८८	[illegible]८८	२८८	८६४	८६४	[illegible]८८	२८८	२८८	२८८	२८८	८६४	२५६	२५६	२५६	२५६	७६८

इगि विगल अपज्जत्ता सुहुमो पज्जो य छच्च जियठाणा ।
तह विगल बारपज्जा उदइ नपुंसेण ए दस उ ॥२३५॥ (२९४) [२७१]

* अस्सन्निसन्निपज्जा तह य अपज्जा य चउर जियठाणा ।
* तिगवेयपरावत्तो उदए आसज्ज चउसुं पि ॥२३६॥ (२९५) [२७२]

तेरससु जीवठाणेसु सतट्ठाणसंखमाह—

इगवीसबंधगाणं सासणभावम्मि पंचजियठाणा ।
उदएसुं पत्तेय एगा अडवीस संतम्मि ॥२३७॥ (२९६) [२७३]

बावीसबंधतेरस बंधे बंधे य तिगतिगं उदया ।
उदएसुं पत्तेयं तिगतिगसंता उ पुव्वुत्ता ॥२३८॥ (२९७) [२७४]

---

* इह ग्रन्थे लब्ध्यपर्याप्तानां सञ्ज्यसञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रियाणामपि वेदत्रयमङ्गीकृत्य यत्प्ररूपणं कृतं तत्तु सर्वस्या-ऽपि लब्ध्यपर्याप्तस्य नपुंसकवेदित्वाच्चिन्त्यम्, यतश्चूर्णिकारैरपि लब्धिपर्याप्तसञ्ज्ञिनीव लब्धिपर्याप्तासञ्ज्ञिन्येव वेदत्रयमङ्गीकृतम्, न पुनर्लब्ध्यपर्याप्तसञ्ज्यसञ्ज्ञिनोरपि, यदुक्तम्—"एक्केक्कम्मि उदयम्मि नपुंसगवेदेण चेव अट्ठ अट्ठ भंगा । सेसा न संभवंति । असन्निपज्जत्तगस्स तिहिं वि वेदेहिं उट्ठावेयव्वा ।" इति । किञ्च सिद्धान्ताभिप्रायेण पर्याप्तोऽपर्याप्तो वा सर्वोऽप्यसञ्ज्ञी नपुंसक एव, यदुक्त

श्रीप्रज्ञप्तौ-ते णं भते ? असन्निपर्चिदितिरिक्खजोणिया किं इत्थिवेयगा पुरिसवेयगा नपुंसगवेयगा ? नो इत्थिवेयगा नो पुरिसवेयगा नपुसगवेयगा" इति । एतत्सिद्धान्ताभिप्रायेण च श्रीमन्मलयगिरिपादैं सप्ततिकाया षड्त्रिंशत्तमगाथावृत्तौ पर्याप्तासञ्ज्ञिनि नपुंसकवेद एव दर्शित, तत्राऽपि चूर्णिकाराभिप्रायेण वेदत्रयम्, एव सप्ततिकाभाष्यपञ्चपञ्चाशत्तमगाथावृत्तौ श्रीमेरुतुङ्गाचार्यैरपि । तेनाकारमात्रमङ्गीकृत्य कार्मग्रन्थिकमताभिप्रायेण लब्धिपर्याप्तासञ्ज्ञिनि वेदत्रय समवति, तथैव बहुभिर्वृत्तिकारैः समर्थितत्वात् । चूर्णिकारास्तु विपाकोदयापेक्षया वेदत्रयमसञ्ज्ञिनि लब्धिपर्याप्ते स्वीकुर्वन्ति, न पुन केवलमाकारमात्रेणेति विशेष । न पुनर्लब्ध्यपर्याप्तसञ्ज्यसञ्ज्ञिनोरपि ।

न च "चउ चउ पुमित्थिवेए" इति पञ्चमसग्रहवचनम्, "पुमत्थिवेए चरम चउरो ॥" इति प्राचीनषडशीतिवचनम्, "थीणरपणिंदि चरमा चउ" इति नव्यषडशीति वचनम्, इत्यादिवचनैस्तथा श्रीरामदेवगणिनैव प्राचीनषडशीतिदशमगाथाविवरणे जीवस्थानेषु मार्गणास्थानानि दर्शयता-"असण्णिअपज्जत्तगस्स उत्तरभेया । त जहा वेयतिग । सन्निपर्चिदियस्स अपज्जगस्स उत्तरभेया । त जहा-गइ चउक्क वेयतिग॥" इत्यादिना पर्याप्ता-ऽपर्याप्तसञ्ज्ञिद्वया-ऽसञ्ज्ञिद्वयलक्षणेषु चतुर्ष्वपि जीवस्थानेषु वेदत्रय प्रतिपादितम्, अत कथ लब्ध्यपर्याप्तसञ्ज्यसञ्ज्ञिनोस्तन्निषिध्यते भवतेति वाच्यम्, अभिप्राया-ऽपरिज्ञानात्, यतस्तत्र सर्वत्रा-ऽप्यपर्याप्त करणेना-ऽपर्याप्तो विवक्षित इति न कश्चिदपि दोष, भवत्वत्रा-ऽपि करणा-ऽपर्याप्त इति चेत्, सत्यम्, तदेहा-ऽप्यदोष एव, किन्तु सो-ऽत्र विवक्षितो नास्ति, यतो लब्ध्यपर्याप्तस्यैवा-ऽत्र विवक्षितत्वेन सप्तस्वप्यपर्याप्तेषु प्रथमगुणस्थानादिकमेव दर्शितम्, अन्यथा द्वितीयगुणस्थानादिकमपि दर्शित स्यात् ।

ननु यथा भाववेदमाश्रित्य सप्ततिकाभाष्य-५६-५७ तमगाथावृत्तौ मेरुतुङ्गाचार्यैर्विपाकोदयतो देवनारकाणा वेदत्रयस्य सभवो दर्शित तथा च तद्ग्रन्थ -"यद्यप्याकृत्या देवाना क्लीबवेदो नारकाणां च पुंस्त्रीवेदौ न स्तस्तथा-ऽपि विपाकोदयतो वेदत्रयमपि समवति" इति । तथा लब्ध्या-ऽपर्याप्तयो सञ्ज्यसञ्ज्ञिनोरपि स्यादिति चेत्, न, तत्रैव सप्ततिकाभाष्य ५५ तमगाथावृत्तौ तैरेव मेरुतुङ्गाचार्यैर्लब्धिपर्याप्तव्यतिरिक्ताना त्रयोदशानामपि जीवभेदाना केवलस्य नपुसकवेदस्यैवोदयस्य प्रतिपादनात्, एवमन्यत्रा-ऽपि । अन्यथा यथा "उदयविगप्पा जे जे उदीरणाए वि होंति ते ते उ । अतमुहुत्तियउदया समयादारब्भ भगा य ॥३३॥" इति पञ्चसग्रहसत्कसप्ततिकागाथास्वोपज्ञवृत्तौ-"युग्मेन वेदेन वा-ऽवश्यमन्तर्मुहूर्तादरत परावर्त्तितव्यम्" (पञ्चसग्रहप्रथमभागपत्र-२४२-१) इति स्ववचनमादृत्य पञ्चसहकारैर्जीवस्थानेषु बन्धहेतून दर्शयद्भिश्चतुर्दशस्वपि जीवस्थानेषु वेदत्रयं प्रतिपादितम्, (पञ्चसग्रहप्रथमभागपत्र-१७६-१८२) तथा चूर्णिकार-भाष्यवृत्तिकारादिभिरपि चतुर्दशस्वपि जीवभेदेषु वेदत्रयस्य विधान कृत भवेत, तुल्यन्यायत्वात्, न च तैस्तथा विहितम्, एव प्रस्तुतग्रन्थे-ऽपि, तथा श्रीमन्मलयगिरिपादैरपि 'उदयविगप्पा " (पञ्चसग्रहसप्ततिका ३३ गाथा प्रथमभागपत्र-२४२-७) इति गाथावृत्तौ 'युग्मेन वेदेन वाऽवश्य मुहूर्त्तादारत परावर्त्तितव्यम्" इति पञ्चसग्रहकारवचन पुरस्कृत्य भावनाया विहितत्वे-ऽपि जीवभेदेषु बन्धनिरूपणावसरे तदनादृतम्" उक्त च तैस्तत्र-"इह सञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रियव्यतिरिक्ता शेषा. सर्वे-ऽपि ससारिणो जीवा परमार्थतो नपुसका, केवलमसञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रिया स्त्रीपु लिङ्गाकारमात्रमधिकृत्य पुस्त्रीवेदे प्राप्यन्ते" (पञ्चसग्रह प्रथमभागपत्र १८३-) इति । ततो वेदत्रयपरावृत्तिमतमप्रधान प्रतिभाति । किञ्च लब्ध्यपर्याप्त सर्वो-ऽपि नपुसक एवेति हेतोरत्र लब्ध्यपर्याप्तसञ्ज्यसञ्ज्ञिनोर्वेदत्रयस्य यत्प्रतिपादन तद् विचारणीयम् ।

इगवीसे ते पणरस सत्तरसयं तु बंधि बावीसे ।
बत्तीसं संतसयं सन्नी सामन्नगहणेण ॥२३९॥ (२६८) [२७५]

ठवणा—

बंध०	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२
उदय	८, ६, १०	८, ९, १०	८, ६, १०	८, ६, १०	८, ६, १०	८, ९, १०	८, ६, १०	८, ६, १०	८, ९, १०
सत्ता	२८ २७, ३, ३	६	६	९	६	६	६	९	६

२२	२२	२२	२२	२१	२१	२१	२१	२१
८, ६, १०	८, ६, १०	८, ६, १०	८, ९, १०	७, ८, ९	७, ८, ६	७, ८, ९	७, ८, ९	७, ८, ९
६	९	९	६	३	३	३	३	३

इति जीवस्थानेषु मोह समाप्त ॥
जीवस्थानेषु नाम्नो बन्धोदयसत्तास्थानानि—

पणदुगपणगं पणचउ पणगं पणगा हवंति तिन्नेव ।
पणछप्पणग छच्छप्पणगं अट्ठट्ठदसगं [1]च ॥सू.–२७॥ (२६६) [२७६]

एतद्गाथाद्वयस्य विवरणे L D प्रतौ गाथाप्रतीकानुसारेण पूर्वं सप्तस्वप्यपर्याप्तजीवभेदेषु नाम्नो बन्धोदयसत्तास्थानानि प्रतिपाद्य तत पर्याप्तसूक्ष्मजीवभेदे, पर्याप्तबादरजीवभेदे, पर्याप्तविकलेन्द्रियभेदत्रये पर्याप्ताऽसञ्ज्ञिजीवभेदे च क्रमेण भणितानि । J प्रतिप्रेसकोप्या पुन प्राक् त्रयोदशस्वपि जीवभेदेषु बन्धस्थानानि, तत उदयस्थानानि त्रयोदशजीवभेदेषु, तत सत्तास्थानान्यपि त्रयोदशसु जीवभेदेषु प्रतिपादितानि इति गाथाभेद गाथाक्रमभेदश्च J प्रतिप्रेसकोप्यपेक्षया विवरणगाथा-२४१ त २८३ सन्ति । L D प्रतौ विवरणगाथा–३०१ त ३५० भवन्ति ।

तथा L D प्रतौ त्रयोविंशतिबन्धकत्व वैक्रियोदयवता पञ्चविंशति-सप्तविंशत्युदयस्थानद्वयगताना प्रतिषिद्धम् , J प्रतिप्रेसकोप्या न निषिद्धम् , नाम्न एकोनत्रिंशद्बन्धस्थाने एकविंशतिषड्विंशत्युदयस्थानयोस्त्रिनवतिसत्स्थान J प्रतिप्रेसकोप्या निषिद्धमपि L D प्रतौ न प्रतिसिद्धम् । तेन J प्रतिप्रेसकोप्यपेक्षया L D प्रतौ त्रयोविंशतिबन्धस्थाने पञ्चविंशतिषड्विंशत्युदयस्थानयो प्रत्येक द्वे द्वे सत्तास्थाने इति चत्वारि सत्तास्थानानि न्यूनानि, एकोनत्रिंशद्बन्धस्थान एकविंशति-षड्विंशत्युदयस्थानयो प्रत्येक त्रिनवतिसत्स्थानमिति द्वे सत्कर्मस्थाने अधिके । तत पर्याप्तसञ्ज्ञिजीवभेदे बन्धाऽबन्धस्थानवर्त्युदयस्थानगतानि समुदितानि सर्वाणि सत्तास्थानानि L D, प्रतौ अष्टोत्तरशतद्वयम् २०८, J प्रतिप्रेस कोप्या दशाधिकद्विशते २१० सन्तीति विशेष ।

१ "ति" इत्यपि पाठ ।

सत्तेव अपज्जत्ता सामी [1]सुहुमो व बायरो चेव ।
विगलिंदिया उ तिन्नि य तह य असन्नी य सन्नी य ।।सू.-७८। (३००)[२७७]

[2]पणादुगपणगति एएसिं विवरण ।। पणवधट्ठाणा ते य इमे—

तिग२३पणवीस२५छवीसा२६गुणतीसा२९तीस३०बंधठाणा उ ।
पढमम्मि जीवठाणे इय नेयं जाव तेरससु ।।२२०।। [२७८]

पढमम्मि जीवठाणे इय णेयं जाव सत्तसु य । (३०१)
भगा इह मिच्छसमा चारणाहिट्ठा उ कया ।।

चउ ४ पणवीसा २५ सोलस १६ बाणवइसया वि हुंति चालीसा ९२४०
छायालं बत्तीसा ४६३२ सत्तअपज्जेसु पत्तेयं ।। (३०२)

अमणम्मी पज्जत्ते [3]छद्धा अडवीमवधिमागच्छे ।
सन्नी पज्जत्ते पुण अट्ठेव य होंति पुव्वुत्ता ।।२४१।। [२७९]

भंगा इह पुव्वुत्ता सव्वत्थ वि जीवठाणबंधेसु ।
पत्तेयं जोइज्जा जे जत्थ व होंति संभविया ।।२४२।। [२८०]

इगचउवीसेगिंदिसु २१।२४ छवीसइगवीस २६।२१ पंचसु तसेसु ।
दो दो उदयअपज्जे[सु] भंगा सव्वे वि [4]पंचंसा ।।२४३।। (३०३) [२८१]

इगवीसे दो भंगा बायरसुहुमेहि [5]एक्कइक्केण ।
[6]बायरपत्तेगियरे चउरो चउवीसि अजसेण ।।२४४।। (३०४) [२८२]

अप्पज्जपणतसाणं सव्वासुभपगइमिलिय[7]मेक्केक्कं ।
इगवीसे छव्वीसे पण पण पत्तेय [8]दुण्हं पि ।।२४५।। (३०५) [२८३]

नवर मणुयअपज्जे भगा चउ चउरसंतकम्मंसा ।
अट्ठत्तरी न तेसि सेसा चत्तारि संभविया ।।२४६।। (३०६) [२८४]

एत्थ अपज्जत्ताणं असन्निसन्नीण भंगया दो दो ।
इगवीसे छव्वीसे मणुजोगे चउरए हुंति ।।२४७।। [२८५]

पणचउपणगं सुहमे बंधे भंगा अपज्जसमसव्वे ।
उदएसुं पुण भंगा चउसु वि उदएसु पत्तेयं ।। (३१०)

---

१ "तह सुहमवायरा चेव" इत्यपि, 'सुहमा य बायरा चेव" इत्यपि, "सुहुमो य बायरो चेव" इत्यपि, वा पाठ । २ अय पाठ L D. प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति । ३ "छट्ठा" इति वा । ४ "पणासना ।। (३०३)" इति L D प्रतौ । ५ "एक्कमेक्केण" इति L D प्रतौ । ६ "तह पत्तेगियरेहिं दो दो" इति L D प्रतौ । ७ "एक्कोक्को" इति L D प्रतौ । ८ "भगा उ" इति L D प्रतौ ।

इगवीसे ते पणरस सत्तरसयं तु बंधि बावीसे ।
बत्तीसं संतसयं सन्नी सामन्नगहणेण ॥२३९॥ (२६८) [२७५]

ठवणा—

बंध०	२२			२२			२२			२२			२२			२२			२२			२२			२२		
उदय	८	६	१०	८	९	१०	८	६	१०	८	६	१०	८	६	१०	८	९	१०	८	६	१०	८	६	१०	८	९	१०
सत्ता	२८ २७	३	३	६			६			९			६			६			६			९			६		

बंध०	२२			२२			२२			२२			२१			२१			२१			२१			२१		
उदय	८	६	१०	८	६	१०	८	६	१०	८	९	१०	७	८	९	७	८	६	७	८	९	७	८	९	७	८	९
सत्ता	६			९			९			६			३			३			३			३			३		

इति जीवस्थानेपु मोह समाप्त ॥

जीवस्थानेपु नाम्नो वन्धोदयसत्तास्थानानि—

पणदुगपणगं पणचउ पणगं पणगा हवंति तिन्नेव ।
पणछप्पणग छच्छप्पणगं अट्ठट्ठदसगं [1]च ॥सू.-२७॥ (२६६) [२७६]

एतद्गाथाद्वयस्य विवरणे L D प्रतौ गाथाप्रतीकानुसारेण पूर्वं सप्तस्वप्यपर्याप्तजीवभेदेषु नाम्नो बन्धोदयसत्तास्थानानि प्रतिपाद्य तत पर्याप्तसूक्ष्मजीवभेदे, पर्याप्तबादरजीवभेदे, पर्याप्तविकलेन्द्रियभेदत्रये पर्याप्ताऽसज्ञिजीवभेदे च क्रमेण भणितानि । J प्रतिप्रेसकोप्या पुन प्राक् त्रयोदशस्वपि जीवभेदेपु बन्धस्थानानि, तत उदयस्थानानि त्रयोदशजीवभेदेपु, तत सत्तास्थानान्यपि त्रयोदशसु जीवभेदेपु प्रतिपादितानि इति गाथाभेद गाथाक्रमभेदश्च J प्रतिप्रेसकोप्यपेक्षया विवरणगाथा-२४१ त २८३ सन्ति । L D प्रतौ विवरणगाथा-३०१ त ३५० भवन्ति ।

तथा L D प्रतौ त्रयोविंशतिबन्धकत्व वैक्रियोदयवता पञ्चविंशति-सप्तविंशत्युदयस्थानद्वयगताना प्रतिषिद्धम् , J प्रतिप्रेसकोप्या न निषिद्धम् , नाम्न एकोनत्रिंशद्बन्धस्थाने एकत्रिंशतिषड्विंशत्युदयस्थानयोस्त्रिनवतिसत्स्थान J प्रतिप्रेसकोप्या निषिद्धमपि L D प्रतौ न प्रतिसिद्धम् । तेन J प्रतिप्रेसकोप्यपेक्षया L D प्रतौ त्रयोविंशतिबन्धस्थाने पञ्चविंशतिषड्विंशत्युदयस्थानयो प्रत्येक द्वे द्वे सत्तास्थाने इति चत्वारि सत्तास्थानानि न्यूनानि, एकोनत्रिंशद्बन्धस्थान एकविंशति-षड्विंशत्युदयस्थानयो प्रत्येक त्रिनवतिसत्स्थानमिति द्वे सत्कर्मस्थाने अधिके । तत पर्याप्तसज्ञिजीवभेदे बन्धाऽबन्धस्थानवर्त्युदयस्थानगतानि समुदितानि सर्वाणि सत्तास्थानानि L, D प्रतौ अष्टोत्तरशतद्वयम् २०८, J प्रतिप्रेस कोप्या दशाधिकद्विशते २१० सन्तीति विशेष ।

१ "ति" इत्यपि पाठ ।

सत्तेव अपज्जत्ता सामी [1]सुहुमो व बायरो चेव ।
विगलिंदिया उ तिन्नि य तह य असन्नी य सन्नी य ॥सू.-२८॥ (३००)[२७७]

[2]पणादुगपणगत्ति एएसि विवरण ॥ पणबंधट्ठाणा ते य इमे—

तिग२३पणवीस२५छवीसा२६गुणतीसा२९तीस३०बंधठाणा उ ।
पढमम्मि जीवठाणे इय नेयं जाव तेरससु ॥२२०॥ [२७८]
पढमम्मि जीवठाणे इय णेयं जाव सत्तसु य । (३०१)

भगा इह मिच्छसमा चारणाहिट्ठा उ कया ॥

चउ ४ पणवीसा २५ सोलस १६ बाणवइसया वि हुंति चालीसा ९२४०
छायालं बत्तीसा ४६३२ सत्तअपज्जेसु पत्तेयं ॥ (३०२)
अमणम्मी पज्जत्ते [3]छट्ठा अडवीमवधिमागच्छे ।
सन्नी पज्जत्ते पुण अट्ठेव य होंति पुव्वुत्ता ॥२४१॥ [२७९]
भंगा इह पुव्वुत्ता सव्वत्थ वि जीवठाणवधेसु ।
पत्तेयं जोइज्जा जे जत्थ व होति संभविया ॥२४२॥ [२८०]
इगचउवीसेगिंदिसु २१।२४ छवीसइगवीस २६।२१ पंचसु तसेसु ।
दो दो उदयअपज्जे[सु] भंगा सव्वे वि [4]पंचंसा ॥२४३॥ (३०३) [२८१]
इगवीसे दो भंगा बायरसुहुमेहि [5]एक्कइक्केण ।
[6]बायरपत्तेगियरे चउरो चउवीसि अजसेण ॥२४४॥ (३०४) [२८२]
अप्पज्जपणतसाणं सव्वासुभपगइमिलिय[7]मेक्केक्कं ।
इगवीसे छव्वीसे पण पण पत्तेय [8]दुण्हं पि ॥२४५॥ (३०५) [२८३]
नवरं मणुयअपज्जे भगा चउ चउरसंतकम्मंसा ।
अट्ठुत्तरी न तेसि सेसा चत्तारि संभविया ॥२४६॥ (३०६) [२८४]
एत्थ अपज्जत्ताणं असन्निसन्नीण भंगया दो दो ।
इगवीसे छव्वीसे मणुजोगे चउरए हुंति ॥२४७॥ [२८५]
पणचउपणगं सुहमे बंधे भंगा अपज्जसमसव्वे ।
उदएसु पुण भंगा चउसु वि उदएसु पत्तेयं ॥ (३१०)

---

१ "तह सुहमवायरा चेव" इत्यपि, 'सुहमा य बायरा चेव" इत्यपि, "सुहुमो य बायरो चेव" इत्यपि, वा पाठ । २ अय पाठ L D. प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति । ३ "छट्ठा" इति वा । ४ "पणासना ॥ (३०३)" इति L D प्रतौ । ५ "एक्कमेक्केण" इति L D प्रतौ । ६ "तह पत्तेगियरेहिं दो दो" इति L D प्रतौ । ७ "एक्कोक्को" इति L D प्रतौ । ८ "भगा उ" इति L D प्रतौ ।

पज्जत्त[1]सुहुम एगो इगवीसे दुगदुगं च इयरेसु ।
साहा[2]रणइयरेहि भंगा पण पंचसंतंसा ॥२४८॥ (३११) [२८६]
इगवीसे चउवीसे इग दुग पणसंतभंगया तिन्नि ।
तह पणवीसछव्वीसे इक्केक्को अजसउदएणं ॥२४९॥ [२८७]
पणवीसे छव्वीसे इक्केक्को पंच सतंसो ॥ (३१०)
[3]दो इह भगा अन्ने साहारणि [4]पणवीस छव्वीसे ।
अट्ठत्तरी न तेसिं तेऊवाऊण संभवइ ॥२५०॥ (३१३) [२८८]
सुहमे पज्जे उदया चउरो पत्तेय पंच संतंसा ।
चउ पंचा इह वीसं बधे बंधे य पत्तेयं ॥ (३१४)

[5]सुहमेगिंदियपज्जत्तठवणाजतइय-

सुहुमे पज्जे पणचउपणग ति पणबंधा चउउदया पणसता				
उदयठा०	२१	२४	२५	२६
पणसता	१	२	प्र १	प्र १
चउसता	०	०	सा १	सा १
सत्तठाणा-	९२	९२	९२	६२
पणसता	८८	८८	८८	८८
चउभगा,	८६	८६	८६	८६
चउसता	८०	८०	८०	८०
दुन्निभगा।	७८	७८	७८	७८

बधठाणा	बधभगा	उदय-भगा	सत्ता-ठाणा
२३	४	७	२०
२५	२५	७	२०
२६	१६	७	२०
२९	९२४०	७	२०
३०	४६३२	७	२०
सव्वे-	१३९१७	३५	१००

सुहुमपज्जत्तबधभगसखा १३९१७

पणगा तिन्नेव त्ति ।

तिविगप्प बायराणं बंधोदयसंत पणग पत्तेयं ।
बंधा उ अपज्जसमा उदया पंचेव पुण एए ॥ (३१५)
बायरइगवीसाए दो भंग जसेयरेहि पणसंता ।
जसपत्तेइयरेहिं चउरो चउवीसि तह चेव ॥२५१॥ (३१६) [२८९]

---

१ '०सुहुमि" इति L D प्रतौ । २ "०रणेय०" इति L D प्रतौ । ३ "दो भगा इह" इति । ४ 'पन्नवीसि" इति च L D. प्रतौ । ५ इद यन्त्र L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्यां नास्ति ।

ते पणवीसछव्वीसे चउरो चउरो य एसि [1]दुगभंगा ।
पत्तेयअजसचरिया पण संता [2]हुंति नायव्वा ॥२५२॥ (३१७) [२९०]

एगिदिअपज्जाणं छब्भंगा सुहमि पज्जि पंचेव ।
अड बायरपज्जत्ते सव्वे उणवीस [3]पंचंसा ॥२५३॥ (३१८) [२९१]

[4]सेसा उज्जोयचरिया चउरो दो आयवेण भंगा उ ।
छव्वीसे सगवीसे तिगवाउविउव्वि पुव्वुत्ता ॥२५४॥ (३१८) [२९२]

पंचेव उदयठाणा चउरो पणसंत एगु पणसंतो ।
चउवीससंतभेया बंधे बंधे य पत्तेयं ॥ (३२०)

उणवीसं पणसत्ता सेसा तेवीस चउरसंता उ ।
बायालीसविगप्पा एगिदियसयलउदएसु ॥२५५॥ [२९३]

पज्जत्तजसजसेहिं [5]दो दो इगवीसि तह य छव्वीसे ।
बेइंदियतियचउरिंदियाण पण पण संतंस पत्तेयं ॥२५६॥ [२९४]

विगलअपज्जत्ताणं तिगतिग इगवीसि तह य छव्वीसे ।
पुव्वुत्ता भंगा बारस पुण एए (त्ति) अट्ठारा ॥२५७॥ [२९५]

सुभगआएज्जजसेयरेहिं अट्ठेव पज्जइगवीसे ।
संघयणागिइ भणिया उदए छव्वीसए भंगा ॥२५८॥ [२९६]

इय सन्निअसन्नीणं तिरियाणं पंच अंसिया नेया ५७६ ।
सेसा उ सव्वभंगा अट्ठत्तरिवज्ज संभविया ॥२५९॥ [२९७]

नामे इह संवेहे जीवठाणेसु बंधसंखाओ ।
बंधेसु उदयसंखा उदएसु य संतसंखा उ ॥२६०॥ (३०९) [२९८]

---

१ "एक्केक्के" इति L D प्रतौ । २ "सेसचउसता" इति L D प्रतौ । ३ "पणसता" इति L D प्रतौ । ४ "अन्ने" इति L D प्रतौ । ५ "दुसु वि उदएसु दुन्नि पत्तेय" इति L D प्रतौ ।

[1]सत्तअपज्जेसु ठवणा—

सत्तअपज्जेसु पण दुग पणग ति, पण बंधठाणा, दो उदयठाणा, पण सत्तठाणा ।

जीवठाणा	सुहु० अ०		बादर० अ०		बेइ० अ०		तेइ० अ०		चउ० अ०		असं० अ०		सं० अ०	
उदयठाणा	२१	२४	२१	२४	२१	२६	२१	२६	२१	२६	२१	२६	२१	२६
उदयभंगा	१	२	१	२	१	१	१	१	१	१	ति १ म १	ति १ म.१	ति.१ म १	ति१ म १
सत्ताठाणा	९२	९२	९२	९२	९२	९२	९२	९२	९२	९२	९२	९२	९२	९२
पयसत्ता	८८	८८	८८	८८	८८	८८	८८	८८	८८	८८	८८	८८	८८	८८
	८६	८६	८६	८६	८६	८६	८६	८६	८६	८६	८६	८६	८६	८६
	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०
	७८	७८	७८	७८	७८	७८	७८	७८	७८	७८	७८ ति	७८ ति	७८ ति	७८ ति

बंधठाणा	बंधभंगा	उदय-ठाणा	उदय-भंगा	सत्ता-ठाणा
२३	४	२	१६	७०
२५	२५	२	१६	७०
२६	१६	२	१६	७०
२९	९२४०	२	१६	७०
३०	४६३२	२	१६	७०
सव्वे →	१३९१७		८०	३५०

सत्तअपज्जेसु पत्तेयबंधभंगा १३९१७

तिगपणवीसछव्वीसे　उणतीसे　तीसबंधठाणेसु　।
नव नव उदयट्ठाणा केवलिए उदय मुत्तूणं ॥२९१॥　[२९९]
इगिबितिचउरपणिंदियतिरिमणुसविउव्विव　पाय　बंधंति　।
नियनियउदयविगप्पे सव्वे जे जस्स संभविया ॥२९२॥　[३००]

१ इदं यन्त्र L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति ।

एगिंदितिरितसेसुं तेऊवाऊणणंतरूप्पन्ना ।
पज्जत्तीअसमत्ता अट्ठत्तरिसंत केसिं वि ॥२६३॥ (३२१) [३०१]

[1]पज्जत्तबायरेगिंदियठवणा जतइय—

बायरपज्जे पणगा हवंति तिन्नेव पण बंधा, पण उदया, पण सता।					
उदयठाणा	२१	२४	२५	२६	२७
पणसतभगा	२	४	१	१	०
चउसतभगा	०	१	४	१०	६
सत्ताठाणा	५	५	५	५	४
अट्ठभगा पणसता अट्ठारस चउसता, वेउव्विभगा ३ तिसता					

बंधठाणा	बंधभगा	उदय-भंगा	सत्ता-ठाणा
२३	४	२६	२४
२५	२५	२६	२४
२६	१६	२६	२४
२९	९२४०	२६	२४
३०	४६३२	२६	२४
(सव्वे →	१३९१७	१४५	१२०)
बायरएगिंदियपज्जत्तबंधभगा ॥१३९१७॥			

पण छप्पण विगलाणं तिविगप्पा एसिं हुंति पत्तेयं ।
पण बंध अपज्जसमा उदया छच्चेव पुव्वुत्ता ॥ (३२२)
पज्जत्तजसजसेहिं दुसु वि उदएसु दुन्नि पत्तेयं ।
नवरं दो उणतीसा सासुज्जोयाण एगयरे ॥ (३२३)
तह तीसाओ तिन्नि उ सरदुगउज्जोयएगयरखेवे ।
सुरदुगएगयरेणं इगतीसा दुन्नि उदएसु ॥ (३२४)
छद्दुगुणा बारसग दो गुणतीसे य चउर तीसुदए ।
दो इगतीसे अहिया सव्वे विगलाण सट्ठि त्ति ॥ (३२५)
बितिचउरिंदियपज्जे दो दो पत्तेय भंग छच्छ ।
इगवीसे छव्वीसे पणसंता सेसचउसंता ॥ (३२६)
एए बितिचउरिंदिय उदया सव्वे वि हुंति पत्तेयं ।
दो पढमा पणसंता चउरुदया चउरसंता उ ॥ (३२७)
बंधेसुं जे भंगा उदया भंगा उ जे उ बंधम्मि ।
उदएसुं जे सत्ता पत्तेयं मग्गणा होइ ॥ (३२८)

१ इद यन्त्र L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति ।

[1]ठवणा—

पण छप्पण विगलाण ति । पण बधा छ उदया पणासतठाणा विगलेसु						
उदयठा०	२१	२६	२८	२९	३०	३१
पणसता	२	२	०	०	०	०
चउसंता	०	०	२	४	६	४
विगलभगा	६	६	६	१२	१८	१२
सत्ताठाणा	५	५	४	४	४	४
एव बेइदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाण पज्जाण पत्तोय						

बधठाणा	वंधभगा	उदय-भगा	सत्ता-ठाणा
२३	४	२०	२६
२५	२५	२०	२६
२६	१६	२०	२६
२९	१२४०	२०	२६
३०	४६३२	२०	२६
(सव्वे→	१३९१७	१००	१३०)
बधे पत्तेयविगलभंगा ॥१३९१७॥			

छ छप्पणाग ति ॥

पज्जामण विगलसमा उदयविगप्पा उ सन्निसारिच्छा ।
बंधेसु संतसंखा विगलाण व तस्स तीससयं (३२९)
तह अडवीसा अन्ना सवियप्पा बंध अमणाणं ।
देवनिरयगइजुग्गा अंतिल्लेहिं दोहि उदएहि ॥ (३३०)
अट्ठासी बाणउई सत्ताठाणा उ दोन्नि पुव्वुत्ता ।
छासीई होइ तहि दोसु वि उदएसु छस्संता (३३१)

[2]ठवणा—

छछप्पणग ति छ बधा, (छ) उदया (पण)सत्ताठाणा उ अमणपज्जे						
उदयठाणा→	२१	२६	२८	२९	३०	३१
पणसतभगा→	८	२८८	०	०	०	०
चउसतभगा→	०	०	५७६	११५२	१७२८	११५२
सत्ताठाणा→	५	५	४	४	४	४

बधठाणा	वधभगा	उदयभगा	सतठाणा
२३	४	४९०४	२६
२५	२५	४९०४	२६
२६	१६	४९०४	२६
२८	९	२८८०	६
२९	१२४०	४९०४	२६
३०	४६३२	४९०४	२६
(सव्वे→	१३९२६	७७४००	१३६)

१-२ इद यन्त्र L, D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति ।

अप्पज्जे पणवंधा दुगदुग उदयाउ पंच[1]सत्तंसा ।
पंचुदया दसठाणा वंधे वंधे य पत्तेय ॥२६४॥ (३०७) [३०२]
पंचगुणा पंचासा सत्त अपज्जत्त [2]तेहि गुणकारो ।
तिन्नि सया [3]पन्नासा संतट्ठाणाण उदएसु ॥२६५॥ (३०८) [३०३]
सुहुमेयर पज्जाणं ठाणा चउ १००पंच१२०उदयसखाए ।
चउ चउ पणसंतंसा एगे चउसंतकम्मंसो ॥२६६॥ [३०४]
वेइंदियाइपज्जत्तयाण छच्चुदयठाण जा अमणा ।
आइमदुग पणसंता अट्ठत्तारि वज्जिया सेसा ॥२६७॥ [३०५]
दुसु दस चउ सोलसगं वंधे वंधे य मिलिय तीससयं ।
वेइंदियाइ अमणे मिलिया सयपंच वीसहिया ॥२६८॥ [३०६]
तह अट्ठवीसबंधे अमणाणं दुन्नि उदयअंतिल्ला ।
बाणउई अट्ठासी छलसी पत्तेय दोसु छट्ठाणा ॥२६९॥ [३०७]
तिण्णि सया पंचासा सयमेगं तह सयं च वीसहियं ।
अप्पज्जसुहुमबारे विगलामण पंचछव्वीसा ॥२७०॥ [३०८]
छन्नउय सहस्सेगं संतट्ठाणाणि जीवठाणेसु ।
तेरससु आइमेसु अट्ठट्ठदसगाण ई भणिमो ॥२७१॥ [३०९]

अट्ठट्ठदसग ति

पुव्वुत्तबंधठाणा अट्ठ उ उदया उ चउर मुत्तूण ।
केवलितिगचउवीसं [4]दस संता अट्ठ नव मुत्तु ॥२७२॥ (३३२) [३१०]
एगिंदियवायाला विगले छावट्ठि केवलीणट्ठ ।
चउरो य अपज्जाणं मोत्तु सेसा उ ७६७१ सण्णिस्स ॥२७३॥ (३३३) [३११]

संतट्ठाणा भन्नइ-

विगलसमा सन्नीसु छस्सु वि उदएसु संतठाणाइं ।
पणवीसे सगवीसे दुग दुग । १२ । ८८ । एए विउव्वीणं ॥२७४॥ (३३४) [३१२]

[5]ठवणा-

उदय-ठाणा →	२१	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	सत्ता ↓
उदयभगा→	२५	२६	५७६	२६	११९६	१७७२	२८९८	११५२	७६७१
सत्ताठाणा→	५	२	५	२	४	४	४	४	३०

१ "सतसा" इति L D. प्रतौ। २ "तेहिं" इति L. D. प्रतौ। ३ "पचासा" इति L D प्रतौ।
४ 'सता दस' इति L D प्रतौ। ५ इद यन्त्र L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति ।

तेवीसबंधगाणं छव्वीसा हुंति संतठाणाणि ।
पणसगवीसे वज्जिय सेसा उदया जओ तेसिं ॥ (३३५)
तेवीसे छव्वीसं तीसं बंधेसु चउसु पत्तेयं ।

[१]ठवणा–

बधठाणा	२३	२५	२६	२९	३०	एव सत्ता ॥१४६॥
बधभगा	४	२५	१६	९२४८	४६४१	(१३९३४)
सत्ताठाणा	२६	३०	३०	३०	३०	(१४६)

उणवीसा पुव्वुत्ता सत्ताठाणा उ अडवीसे ॥ (३३६)
तीसं तु संतठाणा पंचसु बंधेसु होंति पत्तेयं ।
१५० उणवीसा पुव्वुत्ता १९ सत्ताठाणा उ अडवीसे ॥७५॥ [३१३]
तह उणतीसे बंधे सत्त उ उदया उ मणुयमासज्ज ।
तेणवई उणनवई पत्तेयं संतठाणाइं ॥२७६॥ (३३७) [३१४]
मणुतित्थसंतियाणं सत्तसु उदएसु वट्टमाणाणं ।
उणतीस बंधठाणं पंचसु दो । ९३ ८९ । △दोसु उणनवई ॥२७७'। [३१५]

---

१ इद यन्त्र L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति।

△ नाम्न एकोनत्रिंशद्बन्धस्थाने मनुष्याणामेव २५-२७-२८-२९-३० प्रकृत्यात्मकेषु पञ्चस्वेवोदयस्थानेषु वर्तमानाना त्रिनवतिसत्तास्थानस्थान प्राप्यते, नेतरोदयस्थानेषु वर्तमानानाम्, यतो नारकेषु जिननामा-ऽऽहारकसप्तकोभययुगपत्सत्कर्मकाभावात्तिर्यक्षु जिननामसत्ताया एवा ऽऽभावाद्देवेषु नाम्नस्त्रिनवतिसत्कर्मणामेकोनत्रिंशद्बन्धस्थानस्या–ऽभावान्मनुष्या-ऽतिरिक्तगतित्रयगताना जीवाना नाम्न एकोनत्रिंशद्बन्धस्थाने नाम्नस्त्रिनवतिसत्कर्मस्थान ना-ऽवाप्यते, चतुर्विंशत्युदयस्थानस्य केवलानामेकेन्द्रियाणामेव प्रायोग्यत्वेन मनुष्यप्रायोग्याण्युदयस्थानान्येकादश, तत्रा-ऽष्टनव विंशत्ये-कत्रिंशत्प्रकृत्यात्मकोदयस्थानचतुष्कस्य केवलिनामेव सम्भवान्नाम्न एकोनत्रिंशद्बन्धस्थाने वा त्रिनवतिसत्कर्मणि वा तदुदयस्थानचतुष्क नैव प्राप्यते, ततो नाम्न एकोनत्रिंशद्बन्धस्थाने २१, २५, २६, २७, २८, २९, ३० प्रकृत्यात्मकानि सप्तैवोदयस्थानानि, सन्ति, तत्रा-ऽपि २१-२६, एकविंशति षड्विंशतिप्रकृत्यात्मकवर्जशेषेषु पञ्चस्वेवोदयस्थानेषु नाम्नस्त्रिनवतिसत्ता प्राप्यते, २१-२६ एकविंशति षड्विंशतिप्रकृत्यात्मकोदयस्थानद्वये त्रिनवतिसत्कर्मता कथ न प्राप्यते इति चेत् उच्यते–जिननामा-ऽऽहारकसप्तकोभयसत्कर्मणा मनुष्याणा नियमतो वैमानिकदेवेष्वेवोत्पादो ऽस्ति । तेषाञ्च सम्यग्दृष्टित्वेन जघन्यतोऽपि साधिकपल्योपमस्थितिकेष्वेवोत्पादस्य सम्भवेन वैमानिकभवस्थितेरपि जघन्यत पल्योपमप्रमाणत्वेन च पल्योपमतो न्यूनस्थितेरनुत्पादादा-"ऽऽहारकसप्तकोद्वलन कृत्वैव" पुनर्मनुष्येषूत्पादो भवति, तेन तदानीमपर्याप्ता ऽवस्थायामेकविंशति–षड्विंशतिप्रकृत्यात्मकोदयस्थानयोर्वर्तमानाना मनुष्याणामेकोनत्रिंशद्बन्धस्थाने त्रिनवतिसत्ता नामकर्मणो नैव भवति, आहारकसप्तक जिननामोभयसत्कर्मताया अभावात्, आहारकसप्तकस्य जिननाम्नो वा नूतनबन्धस्य तत्राऽसद्भावाच्च ।

देवगईपाउग्गं उणतीसं बंधमाणाणं ॥ (३३८)

[1]सत्ता सव्वेसु दो दो ९३,८९ ॥
ठवणा—

२१	२५	२६	२७	२८	२९	३०
२	२	२	२	२	२	२

एवं तीसे बंधे नवरं सुग मणुयजोग बंधंति ।
छसु निएसु उदएसु बारसठाणाइँ संतस्स १२ ॥२७८॥ (३३९) [३१६]

[2]ठवणा—

उदयठाणा	२१	२५	२७	२८	२९	३०
सत्ताठाणा	२	२	२	२	२	२

बंधम्मि एगतीसे उदओ [3]तीसाइ तिणवई [4]संता ।
तह एगबंधि उदओ सत्ताठाणाइं अट्ठेव ॥२७९॥ (३४०) [३१७]
छायालं सयमेगं छव्वीसुणवीस तह य नव ठाणा ।
अब्बंधि अट्ठ सन्निसु दो सय अड्डुत्तरा सव्वे २०८॥ (३४१)

[4]ठवणा—

वधठाणा	२३	२५	२६	२८	२९	३०	३१	१	०	
उदयठाणा	८	८	८	८	८	८	१	१	१	
सत्ताठाणा	२६	३०	३०	१९	३० १४	३० १२	१	८	८	(२०८)

छव्वीस केवलीणं तिगतिग सत्ता नवऽट्ठ उदएसु ।
तित्था-ऽतित्थगराणं दो दो सेसेसु सव्वेसु ॥ (३४२)

मतान्तरेण सिद्धान्ता-ऽभिप्रायेण पुन सम्यग्दृष्टीना पल्योपमाऽसङ्ख्येयभागादिन्यूनस्थितेष्वपि भवनपत्यादिदेवेपूत्पादोऽस्ति, ततस्तत्रा-ऽऽहारकसप्तकजिननामोभयसत्कर्मा मनुष्यउत्पद्या-ऽऽहारकसप्तकेऽनुद्वलिते सत्येव पुनर्मनुष्यो भवति, तदा तस्य नाम्न एकोनत्रिंशद्बन्धे एकविंशति-षड्विंशत्युदयस्थानद्वये त्रिनवतिसत्कर्मता लभ्यते, एतदभिप्रायेणैव सप्ततिकामूल-चूर्णि वृत्तिषु तथा-ऽत्रैव ग्रन्थे प्राग् ॥२०६॥ दयस्थानद्वये (२५०) तमगाथायामनन्तर ॥२७६॥ तमगाथायाञ्च नाम्न एकोनत्रिंशद्बन्धस्थाने सप्तोदयस्थानेषु त्रिनवति सत्कर्मता प्रतिपादितेति सम्भाव्यते । L D प्रतौ पुनरत्राऽपि-त्रिनवतिसत्कर्मता एकविंशति षड्विंशत्युदयस्थानद्वये निषिद्धा । १ २-५ इद यन्त्र L D प्रतौ। ३ "तीसन्ह" इति L D प्रतौ। ४ "सत" इति L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रे सकोष्ठ्या नास्ति ।

[1]ठवणा—

अट्ठट्ठदसग ति, अट्ठ बंधठाणा अट्ठ उदयट्ठाणा सत्ताठाणा दस सन्निम्मि									बंधठाणा	बंधभंगा	उदय भंगा	सत्ता ठाणा
उदयठाणा	२१	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	२३	४	७५६२	२६
सन्नितिरिभंगा	८	०	२८८	०	५७६	११५२	५७८	११५२	२५	२५	७६५६	३०
मणुयभंगा	८	०	२८८	०	५७६	५७६	११५२	०	२६	१६	७६५६	३०
विउव्वितिरिय.	०	८	०	८	१६	१६	८	०	२८	९	४१२३	१६
आहारकभंगा	०	१	०	१	२	२	१	०	२९	९२४८	७६७१	४४
देवाण भंगा	८	८	०	८	१६	१६	८	०	३०	४६४१	७६६७	४२
नारकाण भंगा	१	१	०	१	१	१	०	०	३१	१	(१४४)	१
विउव्विमणु,,	०	८	०	८	९	९	१	०	१	१	७२	८
सत्ताठाणा	५	२	५	२	४	४	४	४	(सव्वे→	१३७४५	४२-५८१	२००)
सतित्थयरसत्ता	९३ ८९	९३ ८९	९३ ८९	९३ ८९	९३ ८९	९३ ८९	९३ ८९		सामन्न तिरियमणुयचउसु उदएसु भंगा चुन्नीए न भणियत्ति न लिहिया			

अट्ठावीसं बंधं बंधहि तिरिमणुय नियय उदएहि ।
सुरनिरगइपाउग्गं विसुद्ध तह किलिस्समाणा उ ॥ (३४३)

करणि अपज्जत्ता उण आइमचउउदय वट्टमाणा उ ।
सुद्धिगया अडवीसं इयरा उणतीस बंधंति ॥ (३४४)

इह आइम चउउदया इगवीसछवीस तह य अडवीसा ।
उणतीसा विय कमसो वियप्प जे जस्स संभविया ॥ (३४५)

---

१ इदं यन्त्रं L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रे सकोष्या नास्ति । अत्र L D प्रतौ "उदयट्ठ" इति पाठो दृश्यते किन्तु सम्यग् न ज्ञायते इति कृत्वाऽस्माभिरेकत्रिंशद्बन्धसत्कमेकत्रिंशत्प्रकृत्यात्मकमुदयस्थानमाश्रित्य भङ्गा १४४ दर्शिता इति ज्ञेयम् । यदि केषाञ्चिदाचार्याणामभिप्रायेण पुनरुत्तरवैक्रियमनुष्या आहारकमनुष्याश्चापि प्रकृतबन्धकतया विवक्ष्यन्ते तदेहैकोनत्रिंशदुदयस्थानमप्यधिकतया लभ्येत, तथैकोनत्रिंशदुदयस्थानसत्कमङ्गद्वयं त्रिंशदुदयस्थानसम्बन्धिभङ्गद्विकमिति चतुर्णां भङ्गानामधिकतया लाभात्सर्वे उदयभङ्गा १४८ स्युः ।

न य विवरियं पुढो इह भंगा अडवीमि उदयगंभविया ।
चुन्निदुगे वि हु लहुए अहवा न हु अवगया सम्मं ॥ (३४६)
तेण न भंगपमाणं अडवीसम्मि चउउदयसंभवियं ।
तिरिमणुसामन्नाणं इयरुदएसु च पुण एए ॥ (३४७)
पणतीसमणुविउव्विसु छप्पन्नं तह तिरिक्खभगा ।
तीसिगतीसे उदए तिरिमणुसामन्न जे भंगा ॥ (३४८)
पणतीसं छप्पना चालीससया उ अहिय चत्तीसा ।
४०३२ भंगाणं तु पमाणं विउव्विदुगउदयअंतेसु ॥ (३४९)

[1]ठवणा–

अट्ठावीसबधजतइय–

उदय-ठाणा	२१	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	भग-सखा
माणुम०	०	०	०	०	०	०	११५२	०	(११५२)
तिरिय०	०	०	०	०	०	०	१७२८	११५२	(२८८०)
मणुवे-उव्विय०	०	८	०	८	९	९	१	०	(३५)
तिरिवे-उव्विय०	०	८	०	८	१६	१६	८	०	(५६)

सामन्नमणुयतिरियभगा सम्यग् न ज्ञा(यन्)ते चउसु उदएसु ॥
जीवस्थानेषु नाम समाप्तम् ॥

चउपढमट्ठाणाइं ४ तेरसहीणाइँ ४ जाव पत्तेयं । [३१८]
एवं उवरयबंधे सन्नीपज्जत्तसंवेहो ॥२८०॥
पंचासं सयमेगं चउवीसणुवीस तहय सत्तरस ।
दुन्नि सया य दहोत्तर सन्नीपज्जत्तठाणाणि ॥२८१॥ [३१९]
भणियाउ [2]जीवठाणे वंधोदयसंतविवरणं किंचि ।
गुणठाणगेसु [3]तं चिय भणामि किंचि समासेणं ॥२८२॥ (३५०) [३२०]

गुणस्थानकेषु ज्ञानावरणा-ऽन्तराययोर्दर्शनावरणस्य बन्धोदयसत्तास्थानाना भङ्गा –

नाणंतरायतिविहमवि दससु दो [4]होंति दोसु ठाणेसु ।
[5]मिच्छासाणे बोए नव चउ पण नव य संतंसा ॥सू.–३९॥ (३५१) [३२१]

---

१ इद यन्त्र L D. प्रतावस्ति, J. प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति । २ "जीवठाणेसु" इति J प्रतिप्रेसकोप्याम् । ३ "तेच्चिय" इति J प्रतिप्रेसकोप्याम् । ४ 'हुति" इति L. D प्रतौ । ५ "मिच्छासाणा" इति L D. प्रतौ ।

[1]मीसाइनियट्टीओ छच्चउ पण नव य सन्तकम्मंसा ।
चउबंधतिगे चउपणनवस दुसु जुयल छस्संता ॥सू.-४०॥ (३५२) [३२२]
उवसते चउपणनव खीणे चउरुदय छच्च चउसता ।
वेयणियाउयगोए विभज्ज [2]ह पर वोच्छ ॥सू.-४१॥ (३५३) [३२३]

नाणतरायगाहातिगस्स विवरण पुव्वुत्त ॥

दुसु जुयले छस्संता एएण पएण सूइया खवगा ।
तेसि विसेसं विवरे किंची गाहानुसारेण ॥२८३॥ (३५४) [३२४]
अच्चंतविसुद्धत्ता निद्दाउदओ न खवगसेढीए ।
अप्पुव्वाई चउबंधगेसु चउरोदओ तेण ॥२८४॥ (३५५) [३२५]
अप्पुव्वपढमभागे छक्कं उवरि तु चउरबंधुदए ।
जा सुहुमो सत्ताए बायरसंखंस नवसंता ॥२८५॥ (३५६) [३२६]
थीणतिगखविय उवरि छस्संता जाव सुहुमरागंतो ।
बंधोवरमे चउरुदय खीणि संता उ छच्चउरो ॥२८६॥ (३५७) [३२७]

गुणस्थानकेपु वेदनीयगोत्रयोर्बन्धस्थानादिभङ्गा

चउ छस्सु दोन्नि सत्तसु एगे चउ गुणिसु वेयणियभंगा ।
गोए पणचउ दो तिसु एगट्ठसु दोन्नि एगम्मि ॥सू.-०॥ (३५८) [३२८]
छसु आइमेसु पढमा चउरो बंधे य अंतिमा दो दो ।
वेयणिए इय सत्तसु बंधोवरमे चउर एगे ॥२८७॥ (३५९) [३२९]
बंधोवरमि अजोगे सायासायाण उदउ को कस्स ।
जाव दुचरिमो दो दो [3]चरिमे एक्केक्क संताओ ॥२८८॥ (३६०) [३३०]
सायं बंधं तह उदय साय तह सायबंधि दुक्खुदओ ।
दो दो संता दोसु वि इय भंगा सत्तसु गुणेसु ॥२८९॥ (३६१) [३३१]
पढमम्मि पढम पंच उ बीए पढमं विवज्जिया चउरो ।
उच्चं बंधं नीचुच्च उदय दो संत भंगदुगं ॥२९०॥ (३६२ [३३२]
एगेसि मयं नीय वयगहणे नेव होइ उदयम्मि ।
नीया वि हु जइजाई तह वि य ते उच्च वेयति ॥२९१॥ (३६३) [३३३]

---

१ "मिस्साइ०" इति L. D प्रतौ । २ "अतरिउ" इति L D प्रतौ । ३ 'चरमे" इति L. D प्रतौ ।

संजयपमत्तठाणाउ जा चरिमो सुहुमरागगभओ उ ।
[1]बंधोदयम्मि उच्चं सता दुम उच्चनीयाणं ॥२९२॥ (३६३) [३३४]
उवरयबंधे उच्च उदए [2]संताइ दो वि जाजोगी ।
अज्जोगि [4]चरमसमए [5]उदए सता य उच्चस्स ॥२९३॥ (३६४) [३३५]

गुणस्थानकष्वायुषो बन्धादिस्थानभङ्गा –

अट्ठच्छाहिगवीसा सोलस वीस च बार छद्दोसु ।
दो चउसु तीसु एक्क मिच्छाइसु आउगे भगा ॥सू-०॥ (३६६) [३३६]
अट्ठावीसं २८ पढमे २६ बीए नरयाउ नरतिरि न बंधे ।
तइए बंधविवज्जा १६ चउत्थए वीस इय [7]होंति ॥२९४॥ (३६७) [३३७]
अविरयसम्मा जीवा तिरिमणु देवाउ[एक]मेव बधंति ।
नारयसुर मणुयाउं अट्ठ उ भगा अगंभविया ॥२९५॥ (३६८ [३३८]
[8]नरतिरियदेसविरया देवाउ एक्कमेव बधंति ।
[9]पुव्वुत्ता दस जुत्ता भगविगप्पा उ बारस उ ॥२९६॥ (३६९) [३३९]
[10]मणुसरिस पमत्तियरे ६ उवरि मणुउदयमणुयसंताओ ।
खवगे पडुच्च एगं वि य सेढी चउसु सुरसंता ॥२९७॥ (३७०) [३४०]

[11]ठवणा –

गुणठाणा		मि०	सा०	मी०	अ०	दे०	प०	ऽप०
नाणावरण० अंतराय०	बंध	५	५	५	५	५	५	५
	उदय	५	५	५	५	५	५	५
	सत्ता	५	५	५	५	५	५	५
दसणावरण०	बन्ध	६	६	६	६	६	६	६
	उदय	४/५	४/५	४/५	४/५	४/५	४/५	४/५
	सत्ता	६	९	६	६	६	६	६
वेदनीय०	भगा	४	४	४	४	४	४	२
गोत्र०	भगा	५	४	२	२	२	१	१
आउय०	भगा	२८	२६	१६	२०	१२	६	६

१ "बंधे उदए" इति L D. प्रतौ । २ 'दो" इति L D प्रतौ । ३ 'सत्ताए" इति L D प्रतौ । ४ "चरिम०" इति L D प्रतौ । ५ "उदओ" इति L D प्रतौ । ६ "बन्धाभावा" इति L D प्रतौ। ७ "हुति" इति L D प्रतौ। ८ 'अविरयसम्मा [जीवा] तिरिमणु देवाउ एगमेव" इति L D प्रतौ । ९ "पुव्वुत्तदस जुत्त" इति L D प्रतौ । १० 'मणुभग" इति L D प्रतौ । ११ इद यन्त्र L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति ।

नि०	ऽनि०	सु०	उ०	खी०	स०	अजो.	०
५	५	५	०	०	०	०	०
५	५	५	५	५	०	०	०
५	५	५	५	५	०	०	०
६/४	४	४	०	०	०	०	०
४/५	४/५	४/५	४/५	४	०	०	०
६	९/६	९/६	६	६/४	०	०	०
२	२	२	२	२	२	४	०
१	१	१	१	१	१	२	०
२	२	२	२	१	१	१	०

गुणस्थानकेषु मोहनीयस्य बन्धस्थानानि-

गु पागेसु अ सु एक्केक्क मोहबंधठाणं तु ।
पचानियट्टि णं बधोवरमो परं तत्तो ॥सूत्रम्-४२॥ (३७१) [३४१]

गुणस्थानकेषु मोहनीयोदयस्थानानि-

सत्ताइ दस उ मिच्छे सासायणमीसए नवुक्कोसा ।
छाई नव उ अविरए देसे पचाइ अट्ठेव ॥सूत्रम्-४३॥ (३७२) [३४२]

विरए खओवसमिए चउराई सत्त ऽपुव्वम्मि ।
अनिअट्टिबायरे पुण एक्को व दुवे व उदयंसा ॥सू.-४४॥ (३७३) [३४३]

एग सुहुमसरागो वेएइ अवेयगा भवे सेसा ।
भगाणं च पमाणं पुव्वुद्दिट्ठेण नायव्व ॥सूत्रम् ४५॥ (३७४) [३४४]

"गुणठाणगेसु अट्ठसु" इच्चाइगाहाचउक्कस्स विवरण पुव्वं व दट्ठव्व ॥

जइ वि इह मोहविवरण गुणठाण पडुच्च हिट्ठओ भणियं ।
संपइ पुग कम्मपत्तं तस्सऽणुसारेण जंतइयं ॥ (३७५)

ठवणा—

गुणठाणा	मिच्छदिट्ठि				सासादन			मीस			अविरयसम्म				देसवि॰				पमत्त॰			
बधट्ठाणा	२२				२१			१७			१७				१३				९			
बधभगा	६				४			२			२				२				२			
उदयट्ठाणा	७	८	९	१०	७	८	९	७	८	९	६	७	८	९	५	६	७	८	४	५	६	७
चउवीसिया	१	३	३	१	१	२	१	१	२	१	१	३	३	१	१	३	३	१	१	३	३	१
उदयपद	१९२				९६			९६			१९२				१९२				१९२			

ठवणा—

अपमत्त				अपुव्व॰			अनियट्टिबायर॰					सु॰	०
९				९			५	४	३	२	१	०	०
१				१			१	१	१	१	१	०	०
४	५	६	७	४	५	६	२	१	१	१	१	१	०
१	३	३	१	१	२	१	१२	१	१	१	१	१	०
१९२				९६			१२	[illegible] मोहिया जीवा					

मिच्छाइ गुणट्ठाणगेसु उदयसखामाह—

ठवणा[1]—

उदय-ठाणा	चउ-वीसि	मि॰	सा॰	मी॰	ऽवि॰	दे॰	प॰	ऽप॰	नि॰	ऽनि॰	सु॰
१०	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
९	६	३	१	१	१	०	०	०	०	०	०
८	११	३	२	२	३	१	०	०	०	०	०
७	११	१	१	१	३	३	१	१	०	०	०
६	११	०	०	०	१	३	३	३	१	०	०
५	९	०	०	०	०	१	३	३	२	०	०
४	३	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०
२	१२ भ	एव बावन्न चउवीसिया॥ उदयपया चउवीस-							दुगोदयभ॰ १२		
१	५ ,,	गुणा १२४८ ॥ दुगोदयएगोदयपया १७॥							एगोदयभ॰ ५		

१ इद यन्त्र L D प्रतावस्ति, J. प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति ।

नि०	ऽनि०	सु०	उ०	खी०	स०	अजो.	०
५	५	५	०	०	०	०	०
५	५	५	५	५	०	०	०
५	५	५	५	५	०	०	०
६/४	४	४	०	०	०	०	०
४/५	४/५	४/५	४/५	४	०	०	०
६	९/६	९/६	६	६/४	०	०	०
२	२	२	२	२	२	४	०
१	१	१	१	१	१	२	०
२	२	२	२	१	१	१	०

गुणस्थानकेषु मोहनीयस्य बन्धस्थानानि–

गुणठाणगेसु अ ् सु एक्केक्क मोहबंधठाणं तु ।
पचानियट्टि णं बधोवरमो परं तत्तो ॥सूत्रम्-४२॥ (३७१) [३४१]

गुणस्थानकेषु मोहनीयोदयस्थानानि–

सत्ताइ दस उ मिच्छे सासायणमीसए नवुक्कोसा ।
छाई नव उ अविरए देसे पचाइ अट्ठेव ॥सूत्रम्-४३॥ (३७२) [३४२]
विरए खओवसमिए चउराई सत्त ऽपुव्वम्मि ।
अनिअट्टिबायरे पुण एक्को व दुवे व उदयंसा ॥सू.-४४॥ (३७३) [३४३]
एगं सुहुमसरागो वेएइ अवेयगा भवे सेसा ।
भगाणं च पमाणं पुव्वुद्दिट्ठेण नायव्व ॥सूत्रम् ४५॥ (३७४) [३४४]

"गुणठाणगेसु अट्ठसु" इच्चाइगाहाचउक्कस्स विवरणं पुव्वं व दट्ठव्व ॥

जइ वि इह मोहविवरण गुणठाण पडुच्च हिट्ठओ भणियं ।
सपइ पुण कम्मपत्तं तस्सऽणुसारेण जंतइयं ॥ (३७५)

ठवणा–

गुणठाणा	मिच्छदिट्ठि				सासादन			मीस			अविरयसम्म				देसवि०				पमत्त०			
बधट्ठाणा	२२				२१			१७			१७				१३				९			
बधभगा	६				४			२			२				२				२			
उदयट्ठाणा	७	८	९	१०	७	८	९	७	८	९	६	७	८	९	५	६	७	८	४	५	६	७
चउवीसिया	१	३	३	१	१	२	१	१	२	१	१	३	३	१	१	३	३	१	१	३	३	१
उदयपद	१९२				९६			९६			१६२				१९२				१६२			

ठवणा–

अपमत्त				अपुव्व०			अनियट्टिबायर०					सु	०
९				९			५	४	३	२	१	०	०
१				१			१	१	१	१	१	०	०
४	५	६	७	४	५	६	२	१	१	१	१	१	०
१	३	३	१	१	२	१	१२	१	१	१	१	१	०
१६२				९६			१२	मोहिया जीवा					

मिच्छाइ गुणट्ठाणगेसु उदयसखामाह—

[1]ठवणा–

उदयठाणा	चउवीसि	मि०	सा०	मी०	ऽवि०	दे०	प०	ऽप०	नि०	ऽनि०	सु०
१०	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
९	६	३	१	१	१	०	०	०	०	०	०
८	११	३	२	२	३	१	०	०	०	०	०
७	११	१	१	१	३	३	१	१	०	०	०
६	११	०	०	०	१	३	३	३	१	०	०
५	९	०	०	०	०	१	३	३	२	०	०
४	३	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०
२	१२ भ	एवं बावन्न चउवीसिया॥ उदयपया चउवीस-गुणा १२४८ ॥ दुगोदयएगोदयपया १७॥							दुगोदयभ० १२		
१	५ ,,								एगोदयभ० ५		

१ इद यन्त्र L D प्रतावस्ति, J. प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति ।

पत्तेय गुणठाणे पडुच्च मोहुदयपयविंदसखामाह—

[1]ठवणा—

गुणठाणा	मिच्छ	सामा०	मीस०	ऽविरत०	देसवि०	पमत्त	ऽपमत्त०	निय	ऽनियट्टि०					सु०
मोहोदय	१९२	९६	९६	१९२	१९२	१९२	१९२	९६	१२	१	१	१	१	१
पयविंद चउवीसिया	६८	३२	३२	६०	५२	४४	४४	२०	१	भ १	भ १	भ १	भ १	भ १
पयविंदा	१६३२	७६८	७६८	१४४०	१२४८	१०५६	१०५६	४८०	२८					१

एव मोहोदय१२६५।। एव पयविंदचउवीसिया ३५२।। पयविंदा २९।। एव सव्वे पयविंदा ८४७७ ।।

ठवणा—

गुणठाणा	मिच्छ०	सा०	मी०	ऽविरय०	देसवि०	पमत्त०	ऽपमत्त०
पदचउवीसिया	८	४	४	८	८	८	८
पदविंदचउवीसिया	६८	३२	३२	६०	५२	४४	४४
पदविंदा	१६३२	७६८	७६८	१४४०	१२४८	१०५६	१०५६
सत्ताठाणा	२८,२७,२६	२८	२८,२७	२८ २४	२८,२४	२८ २४	२८,२४
			२४	२३,२२ २१	२३,२२,२१	२३,२२,२१	२३,२२,२१

[2]ठवणा—

नि०	अनियट्टि०					सु	उ	
४	१२	१	१	१	१	०	०	उदयपया १२६५ ।।
२०	भ २४	१	१	१	१	१	०	पयविंदचउवीसिया ३५२, भगा २९।।
४८०	२४	१	१	१	१	१	०	पयविंदा ८४७७ ।।
२८,२४ २१	२८,२४, २१, १३, १२,११, ५ ४, ३. २,१					२८ २४ २१ १	२८ २४ २१	

१ इद यन्त्र L. D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति । २ इद यन्त्र J प्रतिप्रेसकोप्यामस्ति, L D. प्रतौ नास्ति ।

मोहनीयस्योदयस्थानभङ्गा –

एक्क[1]छक्केक्कारेक्कारसेव इक्कारसेव नवतिन्नि ।
एए चउवीसगया बारदुगे पंच [2]एगम्मि ॥सूत्रम्-४६॥ (३७६) [३४५]
बारसपणसट्ठिसया उदयविगप्पेहि मोहिया जीवा ।
[4]चुलसीयसत्तसत्तरिपयविदसएहि विन्नेया ॥सू-०॥ (३७७) [३४६]

गुणस्थानकेषु मोहनीयोदयस्थानभङ्गा –

अट्ठगचउचउचउरट्ठगा य चउरो य [5]होंति चउवीसा ।
मिच्छाइ अपुव्वंता बारसपणगं च अनियट्टी ॥सू.-०॥ (३७८) [३४७]
दसगम्मि एग मिच्छे तिग तिग नवअट्ठगम्मि सत्तेगा ।
एगदुग एग साणे नवअट्ठगसत्तगे कमसो ॥२९८॥ (३७९) [३४८]
तह मीसगम्मि एवं अविरयसम्मे छक्केग चउवीसा ।
तिगतिग सत्तग अट्ठग एगा नवगम्मि बोधव्वा ॥२९९॥ (३८०) [३४९]
पंचोदयम्मि एगा तिगतिग छस्सत्तगे य अट्ठेगा ।
देसविरयम्मि एवं अट्ठग चउवीस उदएसु ॥३००॥ (३८१) [३५०]
चउरोदयम्मि एगा तिग तिग पणछक्कगम्मि सत्तेगा ।
संजयपमत्तउदए अपमत्ते तह य एवं तु ॥३०१॥ (३८२) [३५१]
अप्पुव्वे चउरेगा पणगे दो छक्कगम्मि एक्का उ ।
मिच्छाइ अपुव्वंते बावन्ना सव्वचउवीसा ॥३०२॥ (३८३) [३५२]
चउवीसगुणा एए बारस अडयाल हुंति मोहुदया ।
दुग एग उदयभंगा नवमे ते जाण सोलसगं ॥३०३॥ (३८४) [३५३]
बंधोवरमे सुहुमे एगुदओ लोभसुहुमकिट्टीणं ।
इय सव्वुदयविगप्पा बारसपणसट्ठ मोहस्स ॥३०४॥ (३८५) [३५४]
आह कह एक्क उदए [6]हेट्ठा एक्कारभंग नणु वुत्ता ।
इह पुण पंचेव कहं पुव्विं बंधो इहं उदओ ॥३०५॥ (३८६) [३५५]
जे बंधइ ते वेयइ बंधविवक्खाइ भगएक्कारा ।
उदयविवक्खाइ पुणो एक्कुदए पंच भंगा उ ॥ (३८७)

ठवणा-पेज न० ५९ ॥

१ "०छडिक्का०" इति L D प्रतौ । २ "एक्कम्मि" इति L D प्रतौ । ३ "सट्ठ०" इति L D प्रतौ । ४ "चुलसीइ सत्तुत्तरिपय०" इति । ५ 'हुति' इति वा । ६ "उवरिं" इति L D प्रतौ ।

अट्ठट्ठी[1] बत्तीसा बत्तीसा सट्ठिमेव बावन्ना ।
चोयाल दोसु [2]वीसा मिच्छामाई सामन्ने ॥सू.-०॥ (३८८) [३५६]
मिच्छे जो चउवीसा उदयगुणा ते उ मिलिय अट्ठट्ठी ।
बत्तीसाइ कमेणं एस गमो जा अपुव्वते ॥३०६॥ (३८९) [३५७]
[3]एए सव्वेगट्ठा चउवीसाए गुणित्तु कयरासी ।
उणतीसभंगसहिया चुलसी सतहत्तरा एवं ॥३०७॥ (३९०) [३५८]
ठवणा-पेज न० ६० ॥
जोगोवओगलेसाइएहि गुणिया हवंति कायव्वा ।
जे जत्थ गुणट्ठाणे हवंति ते तत्थ गुणकारा ॥सू.-४७॥ (३९१) [३५९]
[4]मोहुदयजोगपयविंदाण च विवरणमाह—
मोहुदयपयविगप्पा गुणि(आ) गुणठाणजोगसंखाए ।
सामन्नं नव जोगा सव्वेसि अहिय केसिंचि ॥३०८॥ (३९२) [३६०]
नव गुणिया उदयपया इक्कारसहस्स तिन्नि पणसीया ११३८५ ।
अन्ने वि चउर जोगा मिच्छे साणे य सम्मम्मि ॥३०९॥ (३९३) [३६१]
तह मीसपमत्तेसु एगो दो जोगअहियया कमसो ।
इत्थ वि लद्धविगप्पा खेप्पिज्जा पुव्वरासिम्मि ॥३१०॥ (३९४) [३६२]
वेउव्विय तह वेउव्विमीसओरालमीसकम्मइया ।
मिच्छम्मि सासणम्मि य अविरयसम्मम्मि ए अहिया ॥३११॥ (३९५) [३६३]
अडचउवीसा वेउव्वियम्मि चउचउरसेसतिगमिच्छे ।
अणउदयरहियउदया न [5]होंति सत्ताइनवगेसु ॥३१२॥ (३९६) [३६४]
॥जओ [6]वुत्त॥
अणउदयरहियमिच्छे जोगा दस कुणइ जं न सो कालं ।
अणणुदओ पुण तदुवलग सम्मदिट्ठिस्स मिच्छुदए ॥३१३॥ (३९७) [३६५]
सासणमीसे चउरो वेउव्वियजोगि दुसु य पत्तेयं ।
तह उरलमीसकम्मणि सासणभावम्मि चउचउरो ॥३१४॥ (३९८) [३६६]
वेउव्विमीसनरए अहोमुहो नेव सासणो गच्छे ।
देवा न संढवेया विउव्विमीसम्मि नपुऊणा ॥३१५॥ (३९९) [३६७]

---

१ "बत्तीस बत्तीस" इति । २ "वीसा वि अमिच्छमा०" इति । ३ "एमठवे एगत्था" इति L. D प्रतौ J प्रतिप्रेसकोप्यामपि । ४ "अय पाठ J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति, किन्तु L D प्रतावस्ति । ५ 'हुन्ति' इति L D प्रतौ । ६ 'वोत्त" इति L D. प्रतौ ।

सोलहया तेण चत्तारि ॥

अविरयसम्मे अट्ठ उ वेउव्वियकायजोगि चउवीसा ।
तह मीसकम्मणेसु[1] नवरं थीवेयपडिसेहो ॥३१६॥ (४००) [३६८]
इह सम्मदिट्ठिजीवो न थीसु उववज्जइत्ति ववहारे ।
अच्छेरउत्ति होज्जा अहवा सुत्तस्स बाहुल्ला ॥३१७॥ (४०१) [३६९]
नपुवेय कहं भन्नइ वेयगरहियाउ जेण तिन्नुदया ।
तह वेयगेण तिन्नि उ नरएसुववज्जमाणाणं ॥३१८॥ (४०२) [३७०]
इत्थ य नपुंसवेओ इयरगईउ पुमवेय संभविया ।
संभावयामि इत्थं नपुंसथीवेयपडिसेहो ॥३१९॥ (४०३) [३७१]
ओरालमीसि सम्मे पुरिसवेएण चेव उववाओ ।
अह तित्थं थीवेए इत्थं वि अच्छेरसंभवओ ॥३२०॥ (४०४) [३७२]
अट्ठट्ठ य सोलहया वेउव्वियमीसकम्मइगजोगे ।
ओरालमीसि चउरो वेउव्विय अट्ठ चउवीसा ॥३२१॥ (४०५) [३७३]
आहारयदुगजोगे सोलहया अट्ठअट्ठउदएसु ।
जम्हा पुव्वधरी वा विक्कियलद्धी य नो इत्थी ॥३२२॥ (४०६) [३७४]
इय वीसं २० तह बारस १२ चउरो अट्ठ व[2] मिलिय चउवीसा ।
मिच्छाइ अविरयंते तह सासणि चउर सोलहिया ॥३२३॥ (४०७) [३७५]
अविरयसम्मे वीसं पमत्तविरियम्मि सोलसोल हया ।
चउवीससोलहेहिं गुणिया खिव पुव्वरासिम्मि ॥३२४॥ (४०८) [३७६]
तेरससहस्स तह इक्कसी य जोग[3]पयसव्वपिंडेण ।
(१३०८१) इय अणुमारा विंदा गुणिज्ज इह सव्वजत्तेणं ॥३२५॥ (४०९) [३७७]
पुव्वं व जोगगुणिया पयविंदा ते हवंति इह दंडा ।
तेणउया [4]दोन्नि सया सहस्सछावत्तरी नवहि (७६२९३) ॥३२६॥ (४१०) [३७८]
वेउव्वियअट्ठट्ठी बत्तीसा इयरजोग पत्तेयं ।
छावत्तरसयमेगं चउवीसियमिच्छदिट्ठिम्मि ॥३२७॥ (४११) [३७९]
सासायण वेउव्वियओरालियमीसकम्मइगजोगे ।
बत्तीसं पत्तेयं वेउव्वियमीस सोलहया ॥ (४१२)

---

१ "च" इति L D प्रतौ । २ "मेलि" इति L. D. प्रतौ । ३ "मय०" इति L D. प्रतौ । ४ "दुन्नि" इति L D प्रतौ ।

मीसे विउव्विजोगे बत्तीसं होंति विंदचउवीसा ।
अविरयसम्मे सट्ठी वेउव्वियकायजोगम्मि ॥ (४१३)
तह मीसकम्मएसु सोलहया सट्ठि होंति पत्तेयं ।
ओरालियमीसम्मी तसट्ठी अट्ठया जाण ॥ (४१४)
आहारग तह आहारमीस सजयपमत्तउदयम्मि ।
चोयालं पत्तेयं सोलहया दोसु जोगेसु ॥ (४१५)
एए गुणित्तु सव्वे नियनियठाणेहि[4] पुव्वरासिम्मि ।
पक्खिवसु सम्मवउत्तो मपुन्ना जेण सा रासी ॥ (४१६)
मोहोदयपयविंदा गुणजोगवियारणाअ उवउत्तो ।
संखा पुण उणनवई महस्स तह तिन्नि उणपन्ना ॥ (८९३४९) (४१७)

[1]ठवणा—

गुणठाणा→	मि०	सा	मी	अवि	देस	पमत्त	ऽपम	ऽपुव्व	ऽनिय	सु	
जोगठाणा→	१३	१३	१०	१३	९	११	९	९	९/१६	६/१	(सव्वे) ↓
जोगपया→	२००८	१२१६	९६०	७२४०	१७ ८	१९८४	१७२८	८६४	१४४	६	१३०८१
जोगपयविंदा	१८ ९१२	६७२८	५६८०	१६-८००	११२-३०	१०६-१२	६५०४	४३२०	२५२	६	८९३४९

मोहोदयपयविंदा गुणिजोगवियारणा तइयसंखा ।
जाया सहस्स उणनवइ तिण्णि सया अउणपण्णा य ८९३४९ ॥३२८॥ [३८०]

भणिया जोगपयदसमग्गणा, इयाणिं उवओगपयदसमग्गणा [2]भण्णइ—

पढमे बीए पंच उ तइए चउ पंचमे व छच्च भवे ।
सेसे सत्तुवओगा मोहुदएहिं गुणिज्जाहिं ॥३२९॥ (४१८) [३८१]
मिच्छे जा चउवीसा उवओगगुणा हवंति तेसिं पया ।
नवसयसट्ठा ९६० सव्वे सेसेसु य एस होइ कमो ३३० । (४१९) [३८२]
जइवि चउवीससंखा गुणिया उवओग इत्थ [4]पयवुत्ता ।
तहवि य चउवीसगुणा मोहपया [5]एत्थ दट्ठव्वा ३३१ । (४२०) [३८३]

---

१ इद यन्त्र L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति । २ 'भन्नइ' इति L D प्रतौ । ३ 'सेस-गुणाण च एस कमो । ४ "पुव्वुत्ता" इति L D प्रतौ । ५ 'इत्थ' इति L D प्रतौ ।

साणे चउसयसीया ४८० मीसे छावत्तरा य पंच भवे ५७६ ।
अविरयसम्मे ११५२ देसे ११५२ एक्कारसयावण्ण इक्केक्के॥३३२॥(४२१) [३८४]
उवओगपय पमत्ते तेरस चोयाल १३४४ तहय इयरे य १३४४।
छन्नावत्तरपुव्वे ६७२ अनियट्टिसय तु बारहियं ११२॥३३३॥ (४२२) [३८५]
सुहमे बंधोवरमे एक्कुदए सत्त हुंति उवओगा ।
सव्वे सत्त सहस्सा नवनउया होंति सत्तसया (७७९९) ॥ (२३)
अट्ठट्ठी बत्तीसा इय अणुसारेण सेसचउवीसा ।
नियउवओगगुणा ते पयदंडा हुंति सव्वे वि ॥ (४२४)
चउवीस पंचभगा सत्तगुणा ते वि खिवसु रासिम्मि ।
एक्कावन्नसहस्सा तेसीया हुंति सव्वे वि ॥ (५१०८३) (४२५)

उपयोगपयदंडा—

वणा[1]—

गुणठाणा →	मि-	सा	मी	अवि०	देस	प	अप	अपु	अनि	सु	
उवओगा→	५/८ चो	५/४	६/४	६/८	६/८	७/८	७/८	७/४	७/१६भ	७/१ भ०	(सव्वे) ↓
उपओगपया→	६६०	४८०	५७६	११५२	११५२	१३४४	१३४४	६७२	११२	७	७७९९
उपओगपय-विंदा →	८१६०	३८४०	४६०८	८६४०	७४८८	७३९२	७३९२	३३६०	१९६	७	५१०८३

इयाणिं लेसपया लेसदंडा य भन्नति—

पढमचउक्के छक्क उवरि तिगे तिन्नि होति लेसाओ ।
सेसेसु सुक्कलेसा मोहुदएहि गुणिज्जाहि ॥ (४२६)
मिच्छम्मि लेसउदया इक्कारसया हवंति बावन्ना ११५२ ।
अविरयसम्मे तेच्चिय[2] लेसगुणा होति ते उदया ११५२ ॥३३४॥ (४२७) [३८६]
सामण ५७६ मीसे ५७६ देसे इयरे य होति लेसुदया ।
छावत्तरपचसया ५७६ पत्तेय पुव्वि छन्नउई ९६ ॥३३५॥ (४२८) [३८७]
सोलस १६ अनियट्टिम्मी सुहुमे एक्को य संखसव्वे वि ।
नउया बावन्नसया सत्त उ भगा उ पिंडेण ५२९७ ॥३३६॥ (४२९) [३८८]
अट्ठट्ठी इच्चाई गुणिया सव्वे वि लेसदंडाओ ।
अट्ठतीससहस्सा दोन्नि सया सत्ततीसाउ ३८२३७ ॥३३७॥ (४३०) [३८९]

१ इद यन्त्र L D प्रतावस्ति, J. प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति । २ "तिच्चिय" L D इति प्रतौ ।

[1]ठवणा—

गुणठाणा →	मि	सा॰	मी	अवि	देस
लेसा →	६	६	६	६	३
लेसापया →	११५२	५७६	५७६	११५२	५७६
लेसापयदडा →	१७१२	४६०८	४६०८	८६४०	३७४४
स ठा॰ सख्या	३	१	३	५	५
सत्ताठाणा →	२८,२७,२६	२८	२८,२७,२४	२८ २४,२३ २२,२१	२८ २४ २३ २२,२१,

पमत्त	अप॰	अपु॰	अनि॰	सु	उ
३	३	१	१	१	१
५७६	५७६	१६	१६	१	स॰उमख॰ ↓ →(१२९७
३११८	३११८	४८०	२८	१	→३८२३७
५	५	३	११	१	३
२८,२४,२३ २२,२१,	२८,२४ २३ २२,२१	२८,२४ २१	२८ २४,२१ १३,१२,११ ५ ४,३,२,	२८,२४ २१,१	२८,२४,२१

गुणस्थानकेषु मोहनीयसत्तास्थानानि

[2]गुणठाणगेसु सत्तासखामाह—

तिन्नेगे एगेग तिगमिस्से पच चउसु तिगपुव्वे ।

एक्कारबायरम्मी सुहुमे चउ तिन्नि उवसंते ॥सू.-४८॥ (४३१) [३९०]

तिन्नेगे एगेग गाहा पुव्वभणिया सत्तट्ठाणा उ [3]मोहे गुणट्ठाणमासज्ज—

इयाणिं नामस्स भन्नइ—

गुणस्थानकेषु नाम्नो बन्धोदयसत्तास्थानानि—

छच्छक्क, तिगसत्तदुग दुगतिगदुग, तिगट्ठचऊ ।

दुगछच्चउ दुगपणचउ चउदुगचउ पणगएगचऊ ॥सू.-४९॥ (४३२) [३९१]

एगेगमट्ठ एगेगमट्ठ छउमत्थकेवलिजिणाणं ।

एगं चउ एगं चउ अट्ठ चउ दुछक्कमुदयंसा ॥सू.-५०॥ (४३३) [३९२]

एएसिं विवरण [4]भण्णइ—

---

१ इदं यन्त्र L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति । २ अयं पाठ J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति । ३ "मोहमासज्ज" इति L. D प्रतौ । ४ "जनइय" इति L D प्रतौ ।

ठवणा—

गुणठाणा→	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बंधट्ठाणा→	६	३	२	३	२	२	४	५	१	१	०	०	०	०
उदयठाणा→	९	७	३	८	६	५	२	१	१	१	१	१	८	२
सतट्ठाणा→	६	२	२	४	४	४	४	४	८	८	४	४	४	६

तीसंत छच्च बंधा उदया नव केवलीण मोत्तूण ।
पणसंता पुव्वुत्ता उणनवई मिच्छदिट्ठिस्स ॥३३८॥ (४३४) [३९३]

बंधभगा—

चउ पणवीसा सोलस नव बाणउई भगा य चत्ताला ।
बत्तीसुत्तरछायालसया मिच्छस्स बंधविही ॥सू.–०॥ (४३५) [३९४]

बंधभगा १३९२६॥

सत्तट्ठहारकेवलि [2]भंगतिगं जइ विउव्वि संभविया ।
[3]मोत्तूण सेस सव्वे मिच्छद्दिट्ठिस्स संभविया ॥३३९॥ (४३६) [३९५]
संवेहो उदएसु बंधे बधे य संतचालीसा ।
नवर उणतीसबधे [4]नेरइय पडुच्च उणनउइ ॥३४०॥ (४३७) [३९६]
इगवीसे पणवीसे सगवीसे अट्ठवीसउणतीसे ।
उणतीसबंधगा ए पंचसु उदएसु नेरइया ॥ (४३८)
तित्थयरमंतकम्मी नरए बंधाउ अंतरमुहुत्तं ।
मिच्छत्तवेयगो सो पंचसु नेरइयउदएसु ॥३४१॥ (४३९) [३९७]
अट्ठावीसे बंधे अंतिल्ला दोन्नि उदय मिच्छस्स ।
चउतिगसत्ताठाणा पुव्वुत्ता सत्त सव्वेवि ॥३४२॥ (४४०) [३९८]
अडवीसे सत्त पंच उणतीसे ।
दोन्नि ठाणाइँ मिच्छम्मि ॥३४३॥ (४४१) [३९९]

बंध०	२३	२५	२६	२८	२९	३०	
सत्ता०	४०	४०	४०	७	४०/५	४०	२१२ ।
उदय०	९	९	९	८	९	९	

(छन्नवछक्क ति गय ॥१॥ इति प्रथमगुणस्थानके)

१ "वीस अट्ठ नव सुन्न ।" इति L D, प्रतौ । २ 'भगा तिग' इति L D प्रतौ । ३ "मुत्तूण" इ‍ति L D प्रतौ । ४ "अहिया उणनवइ पणभेया ॥४३७॥" इति L D प्रत' ।

अडवीसुगुतीसतीसा वंधा साणम्मि वंधभंगा उ ।
अड चउसट्ठिसयाइं बत्तीससयाइं कममो उ ॥३४४॥ (४४२) [४००]

बंधट्ठाणा	२८	२९	३०
भंगा	८	६४००	३२००

छेवट्ठहुंड मुत्तं पणपणगेणं गुणिज्ज थिरगाई ।१२८।
जम्हा न सासणम्मी हुंड छेवट्ठ वज्झंति ॥३४५॥ (४४३) [४०१]
तेण उणतीसवधे चउसट्ठिसया उ मणुयतिरिएसु ।
[1]उज्जोयतीसि भगा बत्तीससया उ तिरियाणं ॥३४६॥ (४४४) [४०२]
चउपढम तिन्नि चरिमा मिच्छगनवगाउ सासणे सत्त ।
अट्ठासी बाणउई सत्ताट्ठाणा उ साणम्मि ॥३४७॥ (४४५) [४०३]
पढमा उ चउरउदया इगिविगलपणिदिलद्धिपज्ञाणं ।
पुव्वभवायायाणं करणि अपज्ञाण संभविया ॥३४८॥ (४४६) [४०४]
चउ पढमा एगिंदिसु चउवीमं मुत्तु ते च्चिय तसेसु ।
णवरि पणवीसउदओ सुरेसु पुव्वुत्त एगिंदी ॥ (४४७)
तिण्णुदया जे चरिमा उवसमसम्मम्मि अणउदय भणिया ।
पज्ञत्तचउगईसु जे जस्स य केइ संभविया ॥३४९॥ (४४८) [४०५]

भंगा उदएसु के कस्स तं भन्नइ-

बत्तीस [2]दोन्नि अट्ठ य बासी य सया य पंच नव उदया ।
बारहिगा तेवीस बावन्नेकारस [3]सया य ॥सूत्रम्-०॥(४४९) [४०६]
दो २ छक्क ६ अट्ठ ८ अट्ठग ८ तह अट्ठग ८ सासणम्मि इगवीसे ।
इगि १ विगल २ सगल ३ मणु ४ सुर ५ पज्ञत्ताणं च संभविया
॥३५०॥ (४५०) [४०७]
बायरपत्तेयवणे पज्ञत्तजसाजसेहि दो भंगा ।
इगवीसे चउवीसे २४ अट्ठय ८ पणवीसि देवाणं ॥३५१॥ (४५१) [४०८]

---

१ "उज्जोयतीसवधे" इति L. D प्रतौ । २ "दुन्निअट्ठ य बासीइ" इत्यपि । ३ "०सयाइ" ॥ L D प्रतौ ।

दोसय अट्ठासीया मणु तह तिरियाण छच्च विगलाणं ।
पंचमया बासीया ५८२ उदए छव्वीसि सव्वे वि ॥३५२॥ (४५२) [४०९]
एगो य अट्ठभगा नारयदेवाण उदइ उणतीसे ।
तीसुदइ तिरियमणुसुर तेवीससया उ बारहिया ॥३५३॥ (४५३) [४१०]
उज्जोयतीसि अट्ठ उ कारसबावन्न ते य सरतीसे ।
देव तह तिरिय भंगा ते च्चिय मणुयाण तिरियसमा ॥३५४॥ (४५४) [४११]
उज्जोयतीसउदओ मिच्छद्दिट्ठिस्स न उण साणस्स ।
उज्जोयएगतीसा सासणभावम्मि कह एवं ॥३५५॥ (४५५) [४१२]
जं मिच्छद्दिट्ठिभणियं [1]सामणुतीसम्मि तस्स पक्खेवा ।
अपजत्ति संभवो तहि साणं भासाइपज्जत्ते ॥३५६॥ (४५६) [४१३]
इगतीसा तिरिउदए सासणभावम्मिकार [2]बावण्णा ।
चउसहससत्तनवई ४०९७ सासणगुणसव्व पिंडेण ॥३५७॥ (४५७) [४१४]
संवेहो य इयाणिं सासणभावम्मि बंधि अडवीसे ।
दो उदया अतिल्ला तिगसंत न तिरिय बाणउई ॥३५८॥ (४५८) [४१५]
मणुतीसुदए सत्ता बाणवई जेण कोइ सेढीओ ।
चुयहारगकम्मंसी सासणभावम्मि गच्छेज्जा ॥३५९॥ (४५९) [४१६]
अडसी तिरिमणुयाणं नियनियउदएसु वट्टमाणाणं ।
अडवीसबंधगाणं तिगठाणा संत संवेहो ॥३६०॥ (४६०) [४१७]
उव्वलियसेमहारगउवसमसम्मं लहित्तु जेसि मयं ।
तत्तो सासणभावं बाणवई तिरिय न विरोहो ॥३६१॥ (४६१) [४१८]

कह भन्नइ —

जो गंठिं ता पढमो गंठि समईअओ भवे बीयं ।
अनियट्टीकरणं पुण सम्मत्तपुरक्खडे जीवे ॥ (४६२)
[3]तस्स य अते उवसमसम्मं तिगपुंज कुणइ मिच्छस्स । (४६३)
वेयगसम्मद्दिट्ठी अणंतरं सव्वविरइ लहिऊण ।
तत्तो विसुज्झमाणो आहारचऊ समज्जेइ ॥ (४६४)
अडवीससंतकम्मी मोहे बाणवइ नाम संतंसी ।

१ 'सासुणती०" इति L D प्रतौ । २ "०बावन्ना" इति L. D प्रतौ । ३ "एषा गाथा-ऽपूर्णा लेखकदोषात् L D प्रतावस्तीति सम्भाव्यते । एतद्गाथोत्तरार्धम्-'तव्वडिओ पुण गच्छइ सम्मे मीसाइ मिच्छे वा ॥ (४६३)" इत्येवंविध स्यादन्यथा वेत्यपि सभावना क्रियते ।

अडवीसुगुतीसतीसा बंधा साणम्मि बंधभंगा उ ।
अड चउसट्ठिसयाइं बत्तीससयाइँ कमसो उ ॥३४४॥ (४४२) [४००]

बंधट्ठाणा	२८	२९	३०
भंगा	८	६४००	३२००

छेवट्टहुंड मुत्तं पणपणगेणं गुणिज्ज थिरगाई ।१२८।
जम्हा न सासणम्मी हुंडं छेवट्ठ बज्झंति ॥३४५॥ (४४३) [४०१]
तेण उणतीसबंधे चउसट्ठिसया उ मणुयतिरिएसु ।
[1]उज्जोयतीसि भंगा बत्तीससया उ तिरियाणं ॥३४६॥ (४४४) [४०२]
चउपढम तिन्नि चरिमा मिच्छगनवगाउ सासणे सत्त ।
अट्ठासी बाणउई सत्ताट्ठाणा उ साणम्मि ॥३४७॥ (४४५) [४०३]
पढमा उ चउरउदया इगिविगलपणिंदिलद्धिपज्जाणं ।
पुव्वभवाययाणं करणि अपज्जाण संभविया ॥३४८॥ (४४६) [४०४]
चउ पढमा एगिंदिसु चउवीसं मुत्तु ते च्चिय तसेसु ।
णवरि पणवीसउदओ सुरेसु पुव्वुत्त एगिंदी ॥ (४४७)
तिण्णुदया जे चरिमा उवसमसम्मम्मि अणउदय भणिया ।
पज्जत्तचउगईसुं जे जस्स य केइ संभविया ॥३४९॥ (४४८) [४०५]

भंगा उदएसु के कस्स तं भन्नइ—

बत्तीस [2]दोन्नि अट्ठ य बासी य सया य पंच नव उदया ।
बारहिगा तेवीसं बावन्नेकारस [3]सया य ॥सूत्रम्–०॥(४४९) [४०६]
दो २ छक्क ६ अट्ठ ८ अट्ठग ८ तह अट्ठग ८ सासणम्मि इगवीसे ।
इगि १ विगल २ सगल ३ मणु ४ सुर ५ पज्जत्ताणं च संभविया
॥३५०॥ (४५०) [४०७]
बायरपत्तेयवणे पज्जत्तजसाजसेहि दो भंगा ।
इगवीसे चउवीसे २४ अट्ठय ८ पणवीसि देवाणं ॥३५१॥ (४५१) [४०८]

१ "उज्जोयतीसबंधे" इति L. D प्रतौ । २ "दुन्निअट्ठ य बासीइ" इत्यपि । ३ "०सयाइ" ॥ L D प्रतौ ।

दोसय अट्ठासीया मणु तह तिरियाण छच्च विगलाणं ।
पंचसया बासीया ५८२ उदए छव्वीसि सव्वे वि ॥३५२॥ (४५२) [४०९]
एगो य अट्ठभंगा नारयदेवाण उदइ उणतीसे ।
तीसुदइ तिरियमणुसुर तेवीससया उ बारहिया ॥३५३॥ (४५३) [४१०]
उज्जोयतीसि अट्ठ उ कारसबावन्न ते य सरतीसे ।
देव तह तिरिय भंगा ते च्चिय मणुयाण तिरियसमा ॥३५४॥ (४५४) [४११]
उज्जोयतीसउदओ मिच्छदिट्ठिस्स न उण साणस्स ।
उज्जोयएगतीसा सासणभावम्मि कह एवं ॥३५५॥ (४५५) [४१२]
जं मिच्छदिट्ठिभणियं [1]सासणतीसम्मि तस्स पक्खेवा ।
अपजत्ति संभवो तहि साणं भासाइपज्जत्ते ॥३५६॥ (४५६) [४१३]
इगतीसा तिरिउदए सासणभावम्मिकार [2]बावण्णा ।
चउसहससत्तनवई ४०९७ सासणगुणसव्व पिंडेण ॥३५७॥ (४५७) [४१४]
संवेहो य इयाणिं सासणभावम्मि बंधि अडवीसे ।
दो उदया अतिल्ला तिगसंत न तिरिय बाणउई ॥३५८॥ (४५८) [४१५]
मणुतीसुदए सत्ता बाणवई जेण कोइ सेढीओ ।
चुयहारगकम्मंसी सासणभावम्मि गच्छेज्जा ॥३५९॥ (४५९) [४१६]
अडसी तिरिमणुयाणं नियनियउदएसु वट्टमाणाणं ।
अडवीसबंधगाणं तिगठाणा संत संवेहो ॥३६०॥ (४६०) [४१७]
उव्वलियसेसमहारगउवसमसम्मं लहित्तु जेसि मयं ।
तत्तो सासणभावं बाणवई तिरिय न विरोहो ॥३६१॥ (४६१) [४१८]
कह भन्नइ —
जो गंठिं ता पढमो गंठि समईअओ भवे बीयं ।
अनियट्टीकरणं पुण सम्मत्तपुरक्खडे जीवे ॥ (४६२)
[3]तस्स य अंते उवसमसम्मं तिगपुंज कुणइ मिच्छस्स । (४६३)
वेयगसम्मद्दिट्ठी अणंतरं सव्वविरइ लहिऊण ।
तत्तो विसुज्झमाणो आहारचऊ समज्जेइ ॥ (४६४)
अडवीससंतकम्मी मोहे बाणवइ नाम संतंसी ।

१ 'सासुणतीο" इति L D प्रतौ । २ "οबावन्ना" इति L D प्रतौ । ३ "एषा गाथा-ऽपूर्णा लेखकदोषात् L D प्रतावस्तीति सम्भाव्यते । एतद्गाथोत्तरार्धम्-' तव्वडिओ पुण गच्छइ सम्मे मीसाइ मिच्छे वा ॥ (४६३)" इत्येवंविध स्यादन्यथा वेत्यपि समावना क्रियते ।

परिवडिउं मिच्छत्तं तह गच्छइ चउसु वि गईसु ॥ (४६५)
मिच्छत्तगओ तिन्नि वि सम्मं मीसं च हारचउपयडी ।
उव्वलिउं आढवई उव्वलइ च संखपल्लंसे ॥ (४६६)
छव्वीससंतकम्मी पुण स च करणेहिँ उवसमं पावे ।
तस्संते अणउदए सासायणभाव गच्छेज्जा ॥ (४६७)
आहारचउव्वलिए अट्ठासी संतकम्म णामस्स ।
अहवा वि पढमसम्मे अते साणो व अट्ठासी ॥ (४६८)
अन्नेसि मयं तिन्निवि उव्वलियं आढवेइ समकालं ।
उव्वलइ कमेण तहा पल्लासंखंसभागेण ॥ (४६९)
उव्वलिए दिट्ठिदुगे हारगसंतम्मि उव्वलियपाए ।
इत्थंतरम्मि उवसमकरणेहिं उवसमइ पावं ॥ (४७०)
तस्संते अणउदए पढमं साणो च वुच्चए सो च ।
बाणवइसंतकम्मं साणे तिरियाण न विरोहो ॥ (४७१)
जे उणतीसं बंधहि सासायणमणुयतिरियपाउग्गं ।
अडसीइमंतठाण सत्तसु उदएसु तह [1]तीसे ॥३६२॥ (४७२) [४१९]
नव तिरिपाउग्गं उज्जोयसहियं तु बधमाणाणं ।
तिगअट्ठअट्ठठाणा सव्वे उणत्तीस पिंडेण ॥३६३॥ (४७३) [४२०]
उणतीसतीसबंधे नियनियउदएसु संत बाणउई ।
पुव्वं व भणियविहिणा तिरिमणुय मयंतरेणेह ॥३६४॥ (४७४) [४२१]

तिगसत्तदुग ति गय ॥ २॥ (इति द्वितीयगुणस्थानके)

उणतीसअट्ठवीसा बंधे उदएसु तीसउणतीसा ।
तह [2]एगतीस उदए दो ठाणा सत मीसस्स ॥३६५॥ (४७५) [४२२]
[illegible]सु भंगसो उदए चउतीस ।३४६५।
भंगा [illegible] चउगइयाणं [illegible] ॥३६६॥ (४७६) [४२३]
एगं अट्ठ य नारयदेवाण ।
तेवीसं चउरुत्तर २३०४ नरतिरियाण च तीसुदए ॥३६७॥ ४७७) [४२४]
इगतीसा तिरियाणं तिरिय त्रिगप्पा [3]इकार बावन्ना ।११५२।
एवं चउतीससया पणसट्ठा मिस्सभंगाणं ॥३६८॥ (४७८)[४२५]

---

१ "तीसि" इति L D प्रतौ । २ "इति" इति L. D. प्रतौ । ३ "य कार" इति J प्रतिप्रेसकोप्य

संवेहो बंधेसुं उदयं उदयं पडुच्च दो ठाणा १२९९ ।
अडवीसि दुअंतिल्ला इयरे [1]उणतीसउदओ उ ॥३६९॥ (४७९) [४२६]

एवं संतट्ठाणा[2] ६ ॥ दुगतिगदुग ति गय ॥३॥ (इति तृतीयगुणस्थानके)

तिगबंधठाण अजए अडवीसु गुतीसु तह य तीसा य ।
थिरसुभजसइयरेहि भंगा अट्ठट्ठ पत्तेयं ॥३७०॥ (४८०) ४२७]
अट्ठ उ उदयट्ठाणा जे पुव्वुत्ता उ बंधि अडवीसे ।
उदयविगप्पा सव्वे जे जेसिं हुंति संभविया ॥३७१॥ (४८१) [४२८]

चउगई उ पडुच्च संतठाणसामित्तसमवमाह-

संतट्ठाणा चउरो पढमा तेणवइ मणुयदेवाणं ।
अपमत्तसंजओ बंधिऊण अजसो मणुस्सदेवो वा ॥३७२॥ (४८२) [४२९]
तं च कहं अपमत्तो अपुव्वकरणो य बंधि इगतीसं ।
परिवडिऊण असंजय मणुओ देवो व मरिउ उववन्नो ॥३७३॥ (४८३) [४३०]
बाणउइ संतकम्मी आहारग बंधिऊण चउगइया ।
ते उव्वलिति अजया अणउव्वलिए य बाणउई ॥३७४॥ (४८४) [४३१]
उणनवइ देवमणुए नेरइयाण च सम्मदिट्ठीणं ।
तिरिए न तित्थसंता निरिमणुमिच्छाण अंतमुहू ॥३७५॥ (४८५) [४३२]
अडसीइ संतठाणं चउसु वि गईसु सम्ममिच्छाणं ।
मणुतिरियाणं सेसा जा जस्स य होइ संभविया ॥३७६॥ [४३३]
तेरसहीणा चउरो पढमाइकमेण खवगाणं ॥ (४८६)
नव तित्थि अट्ठ केवलि सत्ता पयडी अजोगिगुणठाणे ।
छासी तह सीई तिरिमणु अट्ठत्तरि गइतसाणं च ॥ (४८७)

संवेहो भन्नइ—

अट्ठावीसे बंधे अट्ठ उ उदया उ संत दो ठाणा ।
अट्ठासी बाणउई दुग दुग पत्तेय उदएसु १६ ॥३७७॥ (४८८) [४३४]
उणतीसबंधगाणं सामन्नेणं तु सत्त उदया उ ।
इगतीसं वज्जेत्ता तिरियाण न मणुयपाउग्गा ॥३७८॥ (४८९) [४३५]
दुविहोणतीसबंधो मणुगइपाउग्ग तह सुराणं च ।
देवगईपाउग्गं मणुया बंधंति तित्थजुयं ॥३७९॥ (४९०) [४३६]

[1] "तिन्नेव" उदया उ" इति J प्रतिप्रेसकोष्ठ्याम् । [2] "य" इति J. प्रतिप्रेसकोष्याम् ।

इह पंचसु उदएसु तेणउई ९३ तहय होइ उणनवई ।
इगवीसे १ छव्वीसे १ उणनवई संतएगाउ ॥३८०॥ (४९१) [४३७]

कह भन्नइ ॥

इह आहारचउक्कं अविरइ[ए]पत्तो य उव्वलेमाणो ।
उव्वलइ कमेण तहा पलियासंखंसभागेण ॥३८१॥ (४९२) [४३८]
तित्थयरसं म्मी देवा मणुएसु चविउ उववण्णा ।
नाहारसंतकम्मं बंधाभावाउ इह तेसिं ॥३८२॥ (४९३) [४३९]
इगवीसा छव्वीसा दुन्नि उ उदया सरीरअसमत्ते ।
उणतीसबंधगाणं सम्मदिट्ठीण मणुयाणं ॥३८३॥ (४९४) [४४०]
मणुयगईपाउग्गं सुरनेरइया य सम्मदिट्ठी य ।
अट्ठासी बाणउई नियनियउदएसु दो ठाणा १२ ॥३८४॥ (४९४) [४४१]
एवं सुरनेरइया तित्थजुया तीसठाण बधंति ।
तित्थाहारगसंता जेणं बंधि त्ति उववन्ना ॥३८५॥ (४९५) [४४२]
मणुगइजोग्गं तीसं सुरनेरइया उ तित्थजुयबंधे ।
तित्थाहारगसंता जेणं बंधे त्ति उववन्ना ॥ (४९५)
तेणवई उणनवई उदयं उदयं पडुच्च देवाण ।१३॥
निरये नोभयसंता तेणं उणनवइ उदएसु ॥३८६॥ (४९६) [४४३]
सोलस तह चउवीसा बारसठाणा उ तीसु वि कमेण ।
बावन्न संतठाणा अविरयसम्मस्स बंधेसु ॥३८७॥ (४९७) [४४४]

तिअट्ठचउ त्ति गय ॥४॥ (इति चतुर्थगुणस्थानके)

अडवीसा उणतीसा बंधा उदया उ चउर वेउव्वे ।
इगतीसतीसउदया सामन्नं देसविरयाणं ॥३८८॥ (४९८) [४४५]
पुव्वुत्तबंधभंगा। उदयविगप्पा उ सरखगइ चरिया ।
संघयेणतहागिहया - चोयालसयं तु पत्तेयं ॥३८९। (४९९) [४४६]
तीसोदयम्मि । तिरिमणु
[1]पणुउदयतिरिविउव्विय ५,

१ 'पण" इति L. D प्रतौ।

ठवणा—

उदयठाणा →	२५	२७	२८	२९	३०	३१	
उव्वितिरि →	१	१	१	१	१	०	
वेउव्विमणु० →	१	१	१	१	०	०	
सा० तिरि →	०	०	०	०	१४४	१४४	
सा मणु →	०	०	०	०	१४४	०	४४१

इय सवेहो भन्नइ अट्ठावीसा य तिविह बंधंति ।
मणुतिरियकम्मभूमग पलिभागिय देसविरया य ॥३९१॥ (५०१) [४४८]
छच्चेव उदय इत्थं दो दो ठाणाडसी य बाणउई ।
इगतीस न मणुएसुं बारस ठाणा उ उदएसु ॥३९२॥ (५०२) [४४९]
तह देसविरयमणुया अडवीसा तित्थसहिय उणतीसा ।
तेणवई उणनवई पंचसु उदएसु पत्तेयं ॥ (५०३)
बारस तह दस सत्ता सव्वे बावीस देसविरयाणं ।
दुग छच्चउ त्ति गय ॥५॥ (इति पञ्चमगुणस्थानके)
अन्नो उदयविसेसो सत्तय वेउव्वि तह य आहारे ।
चोयालसय तेरस अट्ठावन्नं सयं १५८ संखा ॥ (५०५)
दुगपणचउ त्ति गय ॥६॥ (इति षष्ठगुणस्थानके)
चउवधा अपमत्ते अट्ठावीसाइ जाव इगतीसा ।
[1]इक्केक्कभंगमेसिं दो उदया तीसउणतीसा ॥३९३॥ (५०६) [४५०]
[2]इक्केक्कं च विउव्विसु तह [3]इक्केक्कं च हारगजईणं ।
चोयालसयं तीसे अडयालसयं तु पिंडेणं ॥३९४॥ (५०७) [४५१]
संवेहभंतसंखा दो दो उदया उ बंधि पत्तेयं ।
[4]इक्केक्क संतठाण सव्वे अट्ठेव उदएसुं ॥३९५॥ (५०८) [४५२]
तित्थाहारगसंता [5]हेउसभावा तमेव बंधंति ।
सम्मअपमत्तसंजय इक्केक्कं तेण उदएसु ॥३९६॥ (५०९) [४५३]

१ २ ३ ४-६ "एक्के" इति L. D. प्रतौ । ५ "हेउसभावे" इति L D प्रतौ ।

ठवणा—

बंधठाणा →	२८		२९		३०		३१	
उदयठाणा →	२९	३०	२९	३०	२९	३०	२९	३०
सत्ताठाणा →	८८	८८	८९	८९	९२	९२	९३	९३

चउदुगचउत्ति गय ॥७॥ (इति सप्तमगुणस्थानके)

बंधा जहाऽपमत्ते अपुव्वकरणि जसकित्तिपंचमिया ।
तीसुदओ तह भंगा ७२ पढमतिसंधयणसंभविया ॥३९७॥ (५१०) [४५४]
एगयरे सठाणे सरदुगखगईहिँ होइ चउवीसा ।
पढमतिसंघयणहया बाहत्तरि भंग सव्वे ॥ (५११)
चउपढम संतठाणा अपुव्वकरणस्स एक्कउदयम्मि ।
एत्तो य नवरि वोच्छं जसकीत्ती बंधउदएसु ॥३९८॥ (५१२) [४५५]
जसकित्तीए बंधे उदओ तीसन्ह चउर सत्ताओ ।
एवं सत्ताठाणा अट्ठेव अपुव्वकरणम्मि ॥ (५१३)

पणएगचउ त्ति गय ॥८॥ (इत्यष्टमगुणस्थानके)

एगेगमट्ठ एयं बायरसुहुमाण दुण्ह पत्तेयं ।
जसकित्तिबंधु तीसण्ह उदउ तह संतठाणाइं ॥३९९॥ (५१४) [४५६]
चउपढमा उवसामग खवगा य पडुच्च बायरकसाए ।
तह तेरस खविएहि चउरो खवगाण अट्ठट्ठ ।४००॥ (५१५) [४५७]

एगेगमट्ठ त्ति गय ॥९-१०॥ (इति नवम दशमगुणस्थानकयो)

बंधोवरमे उवसंत खीण तीसण्ह उदय पत्तेयं ।
चउचउरसंतठाणा उवसमखीणम्मि पुव्वुत्ता ॥४०१॥ (५१६) [४५८]
सरखगइविवक्खेहिँ चउरो चउवीस आगिई गुणिया ।
ते संघयणतिगेण बाहत्तरि [१]होंति उवसंते ॥४०२॥ (५१७) [४५९]
सरखगइविप क्खेहि चउरो चउवीस आगिई गुणिया ।
खीणम्मि [illegible] नेया पढमम्मि संघयणे ॥ (५१८)

(एग च [illegible] त्ति ॥११-१२॥ इत्येकादश-द्वादशगुणस्थानकयो)

केवलिसजोगि[illegible]सु अट्ठ उ दो उदयठाण जहसंखं ।
दो दो [illegible]णा तित्थातित्थाण जोगिस्स ॥४०३॥ (५१९) [४६०]
जे चउ[illegible] [illegible]ना आसी छावत्तरी य [२]दो तिन्नि ।

१ "हुति' इति L [illegible] । २ "तित्थयरे' इति L D प्रतौ ।

सामन्नकेवलिदुगं उणसी [1]पण्णत्तरी दुन्नि ॥४०४॥ (५२०) [४६१]
पण पण उदएसु इहं संतट्ठाणाइ वीस जोगिस्स ।
अज्जोगिकेवलिम्मी पगई नव अट्ठ उदओ उ ॥४०५॥ (५२१) [४६२]
नवउदए दो संता तित्थजुया नव य संत इइ तिन्नि ।
अट्ठोदयम्मि एए तित्थविहूणा य इय (६) छच्च ॥४०६॥ (५२२) [४६३]
(अट्ठ चउ त्ति दुछक्क ति य गय ॥१३-१४॥ (इति त्रयोदश-चतुर्दशगुणस्थानकयो)
चउतीससंतठाणा उवरयबंधम्मि सव्वउदएसु ।
भणियाउ विवरणा इह गुणठाणगगाहदुगनामे ॥४०७॥ (५२३) [४६४]
दोछक्कट्ठचउक्कं इच्चाई मग्गणा उ चोद्दस वि ।
सूइ[य] इह सत्थयारेण तेसिं पि करेज्ज अणुसारा ॥४०८॥ (५२४) [४६५]
दोछक्कऽट्ठचउक्कं पणनवए रछक्क बधुदया ।
नेरइयाइ संता ति पच एक्कारस चउक्कं ॥सूत्रम्-५१॥ (५२५)

ठवणा—

जीवभेदा →	निरि	तिरि	मणु	देव
बंधठाणा →	२	६	८	४
उदयठाणा →	५	६	११	६
सत्ताठाणा →	३	५	११	४

निरयगइ दुन्नि बंधा उणतीसा तीस तिरियमणुजोग्गा ।
भंगा इह पुव्वुत्ता संघयणतहागिगुणियाउ ॥ (५२६)
अट्ठुत्तर छायाला उणतीसे दुन्ह तीसि जोयजुये ।
तह तीसे तित्थजुये मणुजोगे अट्ठ भंगा उ ॥ (५२७)

ठवणा—

बंधठाणा →	२९	३०	(सव्वे) ↓
तिरिजोग्गा भ	४६०८	४६०८	(९२१६)
मणु जोग्गा भ०	४६०८	८	(४६१६)
			(१३८३२)

१ "पन्नत्तरी" इति L, D प्रतौ ।

तिरियगई छब्बन्धा तेवीसाई य तीसपज्जंता ।
भंगा इह मिच्छसमा मणुगइ अट्टेव ओघुत्ता ॥ (५२८)

ठवणा—

बन्धट्ठाणा→	२३	२५	२६	२८	२९	३०	३१	१	(सव्वे)
तिरियबंधठाणभ	४	२५	१६	६	६२४०	४६३२	०	०	(१३६२६)
मणुयबंधठाणभ	४	२५	१६	६	६२४८	४६३३	१	१	(१३६३७)

पणवीसा छव्वीसा उणतीसा तीस चउर सुरबंधा ।
आइदुगिगिंदिबायरइयरे मणुतिरियपाउग्गा ॥ (५२९)
पणवीसे अड भंगा छव्वीसे दुगुण आयवुज्जोए ।
बायरएगिंदिगया दोसु य नरयव्व उट्टंति ॥ (५३०)

ठवणा—

बन्धट्ठाणा	२५	२६	२९	३०	सव्वे ↓
तिरियजोग्गभ	८	१६	४६०८	४६०८	(६२४०)
मणुयजोग्गभ	०	०	४६०८	८	(४६१६)
					(१३८५६)

दोछक्कट्ठचउक्क ति गय ॥ (इति नरकादिगतिचतुष्के नाम्नो बन्धस्थानानि)
इगवीसा पणवीसा सगवीसा अडवीस उणतीसा ।
नेरइय पंच उदया एक्केक्को भंगमेएसु ॥ (५३१)

ठवणा—

उदयठाणा→	२१	२५	२७	२८	२९
भंगा →	१	१	१	१	१

पण उदया एगिंदिसु विगले सगले य छच्च पत्तेयं ।
सामन्नतिरि विउव्विय देवुदया पंच न य पढमो ॥ (५३२)
बायाला छावट्ठी इगविगले निययनिययउदएसुं ।
सगलेसुं छच्चुदया उणपन्न छलुत्तरा पिंडे ॥ (५३३)
छप्पन्न तिरिविउव्विसु पिंडे पणसहससयरिजुयउदया ।
तिरियगइ सव्वभंगा ठाणासित्तं तु जंतइयं ॥ (५३४)

ठवणा—

उदयठाणा →	२१	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	(सव्वे) ↓
एगिंदिभ →	५	११	७	१३	६	०	०	०	०	४२
विगलभ →	९	०	०	९	०	६	६ ६	१८	१२	६६
सगल तिरिभ	९	०	०	२८९	०	५७६	५७६ ५७६	५७६ ५७६ ५७६	५७६ ५७६	४९०६
वेउव्वितिरि	०	०	८	०	८	१६	[illegible]	८	०	५६

सामन्नमणुयउदया इगवीस छवीस तह य अडवीसा ।
उणतीसा तीसा तह छव्वीस दुउत्तरा पिंडे ॥ (५३५)
सेसा उ छच्च ठाणा केवलिआहार तह विउव्वाणं ।
अड त्ता पणतीसा भंगा पुव्वुत्त मणुउदए ॥ (५३६)

ठवणा—

उदयठाणा →	२०	२१	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	९	८	सव्व भगा ↓
मणुभग० →	०	९	०	२८९	०	५७६	५७६	११५२	०	०	०	२६०२
आहारभग० →	०	०	१	०	१	२	२	१	०	०	०	७
सामन्नके० →	१	०	०	म० ६	०	म० १२	म० १२	म २४	०	०	१	शेष० २
तित्थयर० →	०	१	०	०	१	०	१	१	१	१	०	६
वेउव्वि०	०	०	८	०	८	९	९	१	०	०	०	३५

इगवीसा पणवीसा सत्तावीसाइ जाव तीसुदओ ।
छच्चुदया देवेसुं भंगा चउसट्ठि सव्वेवि ॥ (५३७)

ठवणा—

उदयठाणा →	२१	२५	२७	२८	२९	३०
उदयभंगा →	८	८	८	१६	१६	८
सव्वभगा	६४॥					

पण नव एक्कार छक्क त्ति गय ॥(इति नरकादिगतिचतुष्के नाम्न उदयस्थानानि)

बाणउई अट्ठासी उणनवई निरय तिन्नि संताओ ।
तिरियगइ पंच संता सामन्नेणं तु इय एवं ॥ (५३८)
बाणउई अट्ठासी छलसी अट्ठत्तरी य चत्तारि ।
तह पंचमिया आसी अट्ठत्तरिवज्ज मणुएसु ॥ (५३९)

मणुयसत्ताठाणा— ९३, ९२, ८९, ८८ ८६, ८०, ७९, ७६, ७५, ९, ८ ।

देवगइ चउर संता तिणवइ बाणवइ तह य अट्ठासी ॥
उणनवई संत भवे इओ(त्तो) संवेहु एएसु ॥ (५४०)

(तिपचएक्कारसचउक्क ति गय ॥ इति गतिचतुष्के नाम्न सत्तास्थानानि)

(अथ गतिमार्गणाचतुष्के नाम्नो बन्धोदयसत्तास्थानसवेध)

उणतीसे बंधम्मी पंचसु उदएसु निरय दुगसंतं ।
बाणवई अट्ठासी तिरिजुग्गे संतया दस उ ॥ (५४१)
तह तीसे उज्जोए उणतीसे तह य मणुयजुग्गम्मि ।
दस दस संतट्ठाणा उणनवई दोसु पणपणगं ॥ (५४२)
तित्थयरसंतकम्मी मिच्छद्दिट्ठी उ अंतमुहुकालं ।
उणतीसबंध संतं उणनवइ नेरइयउदएसु ॥ (५४३)
तह तीसबंध एवं सम्मद्दिट्ठी उ निरयबंधेसु ।
आयमचउअंतमुहू चरिमे निरयाइयं संतं ॥ (५४४)
इय संवेहो वुत्तो नारयबंधुदयसंत चालीसं ।
तिरियगई संवेहो इय अणुसारेण वोच्छामि ॥ (५४५)

ठवणा—

बधठाणे २९, उदएसु सतठाणा तु एव सव्वा २५॥						बधठाणे ३०, उदएसु सतठाणा				
उदयठाणा	२१	२५	२७	२८	२९	२१	२५	२७	२८	२९
सगलतिरिजुग्गे	९२ ८८	९२ ८८	९२ ८८	९२ ८८	९२ ८८	९२ ८८	९२ ८८	९२ ८८	९२ ८८	९२ ८८
मणुयगइजुग्गे	२	२	२	२	२	८९	८९	८९	८९	८९
तित्थयरसतकम्मी	१	१	१	१	१	एव सव्वेवि १५॥				

तिरियगइसवेहो भन्नइ-

पणबधा हिट्ठसमा बंधे बंधे य नव उदयठाणा ।
आइमचउ पणसंता चरिमा नियमा उ चउसंता ॥ (५४६)

चालीससंतठाणा बंधे बंधे य होंति पत्तेयं ।
दुन्निसय संतभेया अट्ठावीसम्मि पुण एए ॥ (५४७)
अट्ठावीसे बंधे उदयट्ठाणा उ अट्ठ पुव्वुत्ता ।
इह कम्मभोगभूमियवेउव्वियतिरियमासज्ज ॥ (५४८)
दो दो संतट्ठाणा अट्ठसु उदएसु होंति पत्तेयं ।
नवरं दोअंतिल्लिसु छलसी अट्ठार सव्वेवि ॥ (५४९)

मणुयगइसवेहमाह-

मणुउदया पुण सत्त उ उदए उदए य चउर संताउ ।
बाणवई अट्ठासी छलसी तहऽसीइ तुरिया उ ॥ (५५०)
नवरं दो वेउव्विय दो दो पढमाउ संतभेया उ ।
बाणउई अट्ठासी पणवीसे तह य सगवीसे ॥ (५५१)
संवेहो बंधेसु बंधे बंधे य सत्त सव्वुदया ।
चउवीस संतठाणा पंचसु बंधेसु पत्तेयं ॥ (५५२)
पढमतिगबंधु मिच्छे उणतीसा तीस सम्म तह मिच्छे ।
सव्वेसु संतठाणा चउवीसे पंच गुणिया उ ॥ (५५३)
तित्थयरसंतियाणं तिणवइ उणनवइ दुन्नि उदएसु ।
उणतीस बंधठाणे सत्तसु उदएसु पत्तेयं ॥ (५५४)
अट्ठावीसे बंधे सत्तसु उदएसु संतसोलसगं ।
तीसे तह इगतीसे बाणउई तह य तेणउई ॥ (५५५)
जसकित्तिबंध अट्ठ उ उवरयबंधम्मि तीस पुव्वुत्ता ।
नउयसयमंतसखा मणुयगई नामसंवेहो ॥ (५५६)

(देवगइसवेहमाह-)

देवगई सवेहो बंधे बंधे य सव्वुदयठाणा ।
बाणउई अट्ठासी दो दो संता उ उदएसु ॥ (५५७)
तित्थयरसंतिया जे मणुयगईजोग्गतीस बंधंता ।
तेणउई उणनवई छसु वि उदएसु पत्तेयं ॥ (५५८)
तेणवइसंतकम्मं पलियासंखंसआउवोलीणो ।
न घडइ देवगईए आहारचउक उव्वलइ ॥ (५५९)
केसिंचि मए एवं आहारुव्वलिय सचरमखंडस्स ।
संता अहिया विहु तेणवई तेण बहुकालं ॥ (५६०)

दे छक्कट्ठचउक्कं इच्चाइट्ठाण गइचउक्कस्स ।
बंधोदयसवियप्पा संतट्ठाणा य इय वुत्ता ॥ (५६१)
इय अणुसारेण तहा नेया इह मग्गणाण तेरससु ।
बंधोदयसंतगया भेयवियप्पाउ सव्वत्थ ॥ (५६२)
इय एउ सुमरणत्थ टिप्पणमित्तं पि किंचि उद्धरियं ।
लक्खणछंदवियारो न य कायव्वो य को वि इहं ॥ (५६३) [४६६]
इत्थ य सुत्तविरुन्नं मइमोहा किंचि उद्धरिय होज्जा ।
सोहिंतु जाणमाणा मज्झ य मिच्छुकडं होउ ॥ (५६४) [४६७]
सिरिजिणवल्लहसूरी आसी सूरुव्व भुवणविक्खाओ ।
तस्सेव विणेएणं उद्धरियं रामदेवेणं ॥ (५६५)

॥ इति श्रीरामदेवगणिकृत सप्ततिकाटिप्पनक समाप्तम् ॥



इगिविगलिंदिय सगले पण पंच य अट्ठ बंधठाणाणि ।
पण छक्केक्कारुदया पण पण बारसगसंताणि ॥सूत्रम्-५२॥
इय कम्मपगडिठाणाणि सुट्ठु बंधुदयसंतकम्मसा ।
गइआइएहिँ अट्ठसु चउप्पगारेण नेयाणि ॥सूत्रम्-५३॥
गइ १इंदिए २य काए ३ जोए ४ वेए ५ कसाय ६ नाणे य ।
संजम ८ दंसण ९ लेसा १० भव ११ सम्मे १२ सन्नि
१३ आहारे १४ ॥सूत्रम्-०॥
संतपयपरूवणया १ दव्वपमाणं च २ खेत्त ३ फुसणा य ।
काल ५ तर च ६ भावो ७ अप्पाबहुयं च ८ दाराइ ॥सूत्रम्-०॥
×उदयस्सुदीरणस्स य सामित्ताओ न विज्जइ विसेसो ।
मुत्तूणं इयाल सेसाणं सव्वपयडीणं ॥सूत्रम्-५४॥
×नाणंतरायदसगं १० दंसण नव ९ वेयणिज्ज मिच्छत्तं ।
सम्मत्त १ भ १ वेया ३ उयाणि ४नवनाम ९ उच्चं १ च ॥सूत्रम्-०॥
मणुयगइजाइतसबायरं च पज्जत्त भगमाइज्ज ।
जसकित्ती तित्थगर नामस्स हवंति नव एया ॥सूत्रम्-०॥
तित्थयराहारगविरहिया उ अज्जेइ सव्वपयडीओ ।
मिच्छत्तवेयगो सासणो वि उगवीससेसाओ ॥सूत्रम्-५६॥
छायालसेस मीसो अविरयसम्मो तियालपरिसेसं ।
तेवन्न देसविरओ विरओ सगवन्नसेसाओ ॥सूत्रम्-५७॥
इगुसट्ठिमप्पमत्तो बंधइ देवाउगस्स इयरो वि ।
अट्ठावन्नमपुव्वो छप्पन्न वावि छव्वीस ॥सूत्रम्-५८॥
बावीसा एगूणं बंधइ अट्ठारसंति अनियट्टी ।
सत्तर सुहुमसरागो, सायममोहो सजोगि त्ति ॥सूत्रम्-५९॥

× उदयस्सु गाहा ॥ नाणतरायगाहा ॥ निद्दापणगाण सरीरपज्जत्तीए पज्जयाण बीयसमयाउ आढवित्तु उदओ हवइ,उदीरणाए विणा ताव जाव इंदियपज्जत्तीए पज्जत्तगु त्ति तओ बीयसमयपभिइ दोवि हुंति त्ति ॥ मिच्छत्तस्स पढमसम्मत्तमुप्पइतेण अतरकरण कय तत्थ पढमठिईअ आवलियसेसाए उदीरणा नत्थि उदओ चेव ॥ सम्मत्तस्स बावीससतकम्मे आवलियसेसे उदओ चेव ॥ अहवा उवसमसेढिं पडिवज्जतस्स अतरकरणे कए पढमठिईए आवलियसेसाए उदओ चेव ॥ तिण्ह वेयाण जेण वेएण सेढिं पडिवज्जस्स अतरकरणे कए पढमठिईए आवलियासेसाए उदओ चेव ॥

एसो उ बंधसामित्तोघो गइयाइए वि तहेव ।
ओहाओ साहिज्जा जत्थ जहा पयडिसब्भावो ।।सूत्रम्–६०।।
तित्थयरदेवनिरयाउयं च तिसु तिसु गईसु बोधव्व ।
अवसेसा पयडीओ हवंति सव्वासु वि गईसु ।।सूत्रम्–६१।।
पढमकसायचउक्कं दसणतिगसत्तया वि उवसता ।
अविरयसम्मत्ताओ जावऽनियट्टित्ति नायव्वा ।।सूत्रम्–६२।।
सत्तट्ठ नव य पन्नरस सोलस अट्ठारसेव इगुवीसा ।
एगाहिदुचउवीसा पणवीसा बायरे जाण ।।सूत्रम्–०।।
सत्तावीसं सुहुमे अट्ठावीस वि मोहपयडीओ ।
उवसंतवीयरागे उवसता हुंति नायव्वा ।।सूत्रम्–०।।
पढम ायचउक्कं एत्तो मिच्छत्तमीससम्मत्तं ।
अविरयसम्मे देसे [1]पमत्तअपमत्त खीयति ।।सूत्रम्–६३।।
अनियट्टिबायरे थीणगिद्धितिगनिरयतिरियनामाउ ।
सखिज्जइमे सेसे तप्पाओगा उ खीयति ।।सूत्रम्–०।।
एत्तो हणइ कसायट्ठगं पि पच्छा णपुसग इत्थी ।
तो णोकसायछक्क पि छुहइ सजलणकोहम्मि ।।सूत्रम्–०।।
पुरिसं कोहे कोह माणे माणं च छुहइ मायाए ।
मायं च छुहइ लोभे लोभ सुहुम पि तो हणइ ।।सूत्रम्–६४।।
खीणकसायदुचरिमे निद्द पयल च हणइ छउमत्थो ।
आवरणमंतराए छउमत्थो चरिमसमयम्मि ।।सूत्रम्–०।।
संभिन्नं पासंतो लोगमलोगं य सव्वओ सव्वं ।
तं नत्थि ज न पासइ भूयं भव्वं भविस्सं य ।।सूत्रम्–०।।
देवगइसहगयाओ दुचरिमस भवियम्मि खीयति ।
सविवागेयरनामा नीयागोयपि तत्थेव ।।सूत्रम्–६५।।
अन्नयरवेयणिज्जं मणुयाऊ उच्चगोय नामे य ।
वेएइ अजोगिजिणो उक्कोस जहन्न एक्कार ।।सूत्रम्–६६।।
मणुयगइजाइतसबायरं च त्तसुभगमाएज्ज ।
जसकि ^ तित्थयर नामस्स हवति नव एया ।।सूत्रम्–६७।।

---

१. "पमत्तअपमत्तगे य खीयंति" इति पाठ ।

तच्चाणुपुव्विसहिया तेरस भवसिद्धियस्स चरिमम्मि ।
सन्तंसगमुक्कोसं जहन्नयं बारस हवन्ति ॥सूत्रम्-६८॥
मणुयगइसहगयाओ भवखित्तविवागजीववागत्ति ।
वेयणिअन्नयरुच्च च चरिमसमयम्मि खीयति ॥सूत्रम्-६९॥
अह सुचिरसयलजयसिहरमरुयनिरुवमसहावसिद्धिसुह ।
अणिहणमव्वाबाह तिरयणसारं अणुहवति ॥सूत्रम्-७०॥
दुरहिगमणिउण परमत्थरुइलबहुभगदिट्ठिवायाओ ।
अत्था अणुसरियव्वा बधोदयसतकम्माणं ॥सूत्रम्-७१॥
जो जत्थ अपडिपुन्नो अत्थो अप्पागमेण बद्धोत्ति ।
तं खमिऊण बहुसुया पूरेऊणं परिकहितु ॥सूत्रम्-७२॥
गाहग्गं सयरीए चदमहत्तरयथाणुसारीए ।
टीकाएँ नियमियाणं एगूणा होइ नउईओ ॥सूत्रम्-०॥

॥ सप्ततिका समाप्ता ॥



❀ सप्ततिकाभिधः षष्ठः कर्मग्रन्थः

सिद्धपएहि महत्थं, बंधोदयसंत [1]पयडिठाणाणं ।
[2]वुच्छं सुण संखेवं, [3]नीसंदं दिट्ठिवायस्स ॥ १ ॥

कइ बंधंतो वेयइ, कइ कइ वा [4]संतपयडिठाणाणि ।
मूलुत्तर[5] पगईसुं, भंगविगप्पा [6]उ बोद्धव्वा ॥ २ ॥

अट्ठविहसत्तछब्बंध [7]एसु, अट्ठेव उदय [8]संतंसा ।
एगविहे तिविगप्पो, एगविगप्पो अबंधंमि ॥ ३ ॥

सत्तट्ठबंध अट्ठुदय–संत तेरससु जीवठाणेसु ।
एगंमि पंच भंगा, दो भंगा [9]हुंति केवलिणो ॥ ४ ॥

अट्ठसु एगविगप्पो, छस्सु वि गुणसन्निएसु दुविगप्पो ।
पत्तेअं पत्तेअं, बंधोदयसंतकम्माण ॥ ५ ॥

पंच नव[10]दुन्नि अट्ठा–वीसा चउरो तहेव बायाला ।
[11]दुन्नि[12]अ पंच य भणिया, पयडीओ आणुपुव्वीए ॥ ६ ॥

(प्रक्षेपगाथा)

बंधोदयसंतंसा, नाणावरणंतराइए पंच ।
बंधोवरमेवि [13]उदय, संतंसा हुंति पंचेव ॥ ६ ॥ ७ ॥

❀ सप्ततिकाख्यस्य षष्ठस्य कर्मग्रन्थस्य मूलगाथा सप्ततिकाचूर्णावेकसप्ततिसङ्ख्याका गृहीताः सन्ति। ताश्चात्रा-ऽङ्कतो दर्शिता तथाऽन्या अपि प्रक्षिप्तगाथा मुद्रितपुस्तकेपूपलभ्यन्ते ता अप्यत्र सगृहीता, ताभिः प्रक्षिप्तगाथाभिः सह मूलगाथाना क्रमाङ्क एकनवतिसङ्ख्यान्त प्रदर्शित स च मुद्रितपुस्तकेपु दृश्यते। हस्तलिखितप्रतौ पुनरेकनवतिगाथाङ्कक्रमानुसारेण ६६-६७ तमगाथयोर्मध्ये द्वे गाथे अधिकतया स्त, ६२ तमगाथा नास्ति, ६८-६९ तमगाथयोर्मध्येऽधिकतयैकगाथा-ऽस्ति, तेन हस्तलिखित प्रतौ सर्वा गाथास्त्रिनवतिर्भवति। मुद्रितपुस्तकापेक्षया हस्तलिखितप्रतौ २१-२२ तमगाथयो, २७-२८ तमगाथयो, ५५-५६ तमगाथयोश्च क्रमव्यत्ययोऽस्ति। ८९ तमगाथा च भिन्नैवास्ति। तथा श्रीमन्मलयगिरिपादकृतवृत्तावपि चूर्णिवन्मूलगाथा सन्ति, केवल तत्र २४-२५ तमगाथयोर्मध्ये भाष्यसत्काऽशीतितमा गाथा २५ तमगाथातयाऽधिका प्रक्षिप्ता विद्यते, तेन तत्र सर्वा गाथा द्वासप्ततिर्भवति।

१ "पगइ" इति वा "पगडि" इति वा। २ "वोच्छं" इत्यपि। ३ "निस्सद" इत्यपि। ४ "सति पगडिठाणाणि" इति वा "पयडिसतठाणाणि" इति वा "पयइठाणकम्मसा" इति वा "पयडिठाणसतसा" इति वा पाठः। ५ "पयडीसु" इति वा "पयडीणं" इति वा पाठः। ६ "उ बोधव्वा" इति वा "मुणेयव्वा" इति वा पाठः। ७ "०गेसु" इति वा। ८ "सताइं" इत्यपि। ९ "होंति" इत्यपि। १०-११ "दोन्नि" इत्यपि। १२ "य" इत्यपि। १३ तहा उद-सता होंति पचेव ॥६॥" इति वा, "तहा उदसता हुति पञ्चेव ॥६॥" इति वा, "पुणो पञ्चेव य उदयसतसा ॥७॥ इति वा।

बंधस्स य संतस्स य, [1]पगडट्ठाणाइँ तिण्णि तुल्लाइं ।
[2]उदयट्ठाणाइँ दुवे, चउ पणगं दंसणावरणे ॥ ७ ॥ ८ ॥
बीआवरणे नवबंध[3]एसु, चउपंचउदय नवसंता ।
छच्चउबंधे चेवं, चउबंधुदए छलंसा य ॥ ८ ॥ ९ ॥
उवरयबंधे चउ [4]पण, नवंस चउरुदय [5]छच्च चउ संता ।
वेअणिआउयगोए, विभज्ज मोहं परं [6]वुच्छं ॥ ९ ॥ १० ॥
गोअंमि सत्त भंगा, अट्ठ य भंगा हवंति वेअणिए ।
पण नव नव पण भंगा, आउचउक्के वि कमसो [7]उ ॥११॥(प्र०)
बावीस [8]इक्कवीसा, [9]सत्तरसं तेरसेव नव पंच ।
चउ तिग दुगं च [10]इक्कं, बंधट्ठाणाणि मोहस्स ॥१०॥१२॥
[11]एगं व दो व चउरो, एत्तो [12]एगाहिआ दसुक्कोसा ।
ओहेण मोह[13]णिज्जे, उदय[14]ट्ठाणाणि नव हुंति ॥११॥१३॥
[15]अट्ठय-सत्तय-छ-च्चउ-तिग-दुग-[16]एगाहिआ भवे वीसा ।
तेरस [17]बारिक्कारस, [18]इत्तो पंचाइ [19]एगूणा ॥१२॥१४॥
संतस्स[20]पयडिठाणाणि, ताणि मोहस्स[21]हुंति पन्नरस ।
बंधोदयसंते पुण, भंग[22]विगप्पा [23]बहू जाण ॥१३॥१५॥
छब्बावीसे चउ इगवीसे, सत्तरस तेरसे दो दो ।
[24]नवबंधगे वि[25]दुण्णि उ, [26]इक्किक्कमओ पर भंगा ॥१४॥१६॥
दस बावीसे नव [27]इगवीसे, सत्ताइ उदय[28]कम्मंसा ।
छाई नव सत्तरसे, तेरे पंचाइ अट्ठेव ॥१५॥१७॥

---

१ "पगईठाणाणि तिन्नि तुल्लाणि" इति वा, "पगडिट्ठाणाणि तिन्नि सरिसाणि।" इति वा। २ "उदयट्ठाणाणि" इति वा। ३ "०गेसु" इति वा। ४ 'पच उदय नवसत छच्च चउजुयल।" इत्यपि पाठ। ५ "छ चउसताइ' इत्यपि। ६ "वोच्छ" इति वा। ७ "य" इत्यपि। ८. "एक्कवीसा" इत्यपि। ९ "सत्तरसा" इत्यपि। १० "एक्क" इति वा 'एग" इति वा ११ "एक्क" इति वा, 'एक्को" इति वा, "एक्को' इति वा, "एग च दो य चउरो' इति वा। १२ "एक्काहिया" इत्यपि। १३ "०णिज्जा" इति वा। १४ "०ट्ठाणा नव हवंति" इत्यपि। १५ "अट्ठगसत्तग" इति। १६ "एक्का०" इत्यपि। १७ "बारेक्कारस' इति वा "बारेक्कारा" इति वा। १८ "एत्तो" इति वा। १९. 'एक्कूणा" इत्यपि, "एकूणा' इत्यपि वा। २० "पगडि०" इति वा, "पगइ०" इति वा, "पगइठाणाइँ" इति वा। २१ 'होंति" इति वा। २२ "०विगप्पे" इति वा। २३ "बहु" इत्यपि। २४ 'णव०" इत्यपि। २५ "दोन्नि" इत्यपि। २६ "एक्केक्क०" इत्यपि। २७ "इक्कवीस" इति वा "एगवीस" इति वा। २८ "ठाणाणि" इति वा "०ठाणाइ" इति वा।

चत्तारि [1]आइ [2]नवबंध [3]एसु [4]उक्कोम सत्तसुदयसा ।
पंचविहबंधगे पुण, उदओ [5]दुण्हं मुणेअव्वो ॥१६॥१८॥
[6]इत्तो चउ[7]बंधाई, [8]इगिकक्कुदया हवंति सव्वेवि ।
बंधोवरमे वि तहा, उदयाभावे वि [9]वा [10]हुज्जा ॥१७॥१९॥
[11]इक्कग छक्किक्कारस, दस सत्त चउक्क [12]इक्कगं चेव ।
एए चउवीसगया, [13]चउवीस दुगेक्कमेक्कारा ॥१८॥२०॥
[14]नवतेसीइसएहिं, उदय[15]विगप्पेहि मोहिआ जीवा ।
[16]अउणुत्तरिसीआला, पय[17]विंदसएहिं विन्नेआ ॥२०॥२१॥
नवपंचा[18]णउअसए, उदयविगप्पेहिं [19]मोहिआ जीवा ।
[20]अउणुत्तरि एगुत्तरि, पयविंदसएहिं विन्नेआ ॥१९॥२२॥
[21]तिन्नेव य बावीसे इगवीसे अट्ठवीस [22]सत्तरसे ।
छच्चेव तेर[23]नव-बंध[24]एसु पंचेव [25]ठाणाणि ॥२१॥२३॥
पंचविहचउविहेसुं, छछक्क सेसेसु जाण पंचेव ।
[26]पत्तेअं, पत्तेअं चत्तारि [27]अ बंध[28]वुच्छेए ॥२२॥२४॥
दसनवपन्नरसाइं. बंधोदयसंत[29]पयडिठाणाणि ।
[30]भणिआणि मोहणिज्जे, [31]इत्तो [32]नामं परं [33]वुच्छं ॥२३॥२५॥

---

१ "०माइ' इति वा। २ "णव0" इति वा। ३ "०गेसु" इति वा। ४ 'सत्तुक्कमेण उदयसा" इति वा "उक्कोससत्त उदयसा" इति वा। ५ "दोण्ह" इति वा। ६ 'एत्तो' इति वा। ७ "बधादी" इत्यपि। ८ "एक्कुक्कु" इत्यपि, "इक्केक्कु०" इत्यपि वा। ९. "ता होज्जा ॥१६॥" इति वा। १० "होज्जा" इत्यपि। ११ 'एक्का छक्केक्कारस" इत्यपि। १२ "एक्कगा" इति वा, "एक्कग" इति वा। १३ 'चउवीसदुगेक्कमिक्कारा ॥१८॥" इत्यपि, "चउवीस दुगिक्कमिकारा ॥२०॥" इत्यपि वा, "बार दुगिक्कमि इक्कारा ॥२०॥" इत्यपि वा। १४ इयं गाथा हस्तलिखितप्रतौ द्वाविंशतितमी द्वाविंशतितमी चैकविंशतितमीति व्यत्यय। १५ "विगप्पेहिं मोहिया" इत्यपि। १६ "अउणत्तरिसीयाला" इत्यपि। १७ "०वद०" इत्यपि। १८ '०णाउयसए" इति वा, '०णाउइसएहुदय०" इति वा, "०णुयसएहिं" इति वा। १९ "मोहिया" इत्यपि। २० "अउणत्तरि" इति वा, "अउणत्तरि एगुत्तरि" इति वा। २१ 'तिण्णेव उ" इति वा, "तिन्नेव उ" इति वा। २२ "कम्मसा। सत्तरसे छस्सते तेरस नववधए पच ॥२३॥" इति हस्तलिखितप्रतौ। २३ "णव०" इति वा। २४ "०गेसु" इति वा। २५ "ठाणाइ ॥२१॥" इति वा २६ "पत्तेय पत्तेय" इत्यपि। २७ "य" इति वा, "उ" इति वा। २८ "वोच्छेए" इत्यपि। २९ "०पगइ०" इति वा '०पयइ०" इत्यपि वा। ३० "भणियाइँ" २। ३१ "एत्तो" इति वा। ३२ 'णाम' इति वा। ३३ "वोच्छं" इत्यपि।

बंधस्स य संतस्स य, [1]पगइट्ठाणाइँ तिण्णि तुल्लाइं ।
[2]उदयट्ठाणाइँ दुवे, चउ पणगं दंसणावरणे ॥ ७ ॥ ८ ॥
बीआवरणे नवबंध[3]एसु, चउपंचउदय नवसंता ।
छच्चउबंधे चेवं, चउबंधुदए छलंसा य ॥ ८ ॥ ९ ॥
उवरयबंधे चउ [4]पण, नवंस चउरुदय [5]छच्च चउ संता ।
वेअणिआउयगोए, विभज्ज मोहं परं [6]वुच्छं ॥ ९ ॥ १० ॥
गोअंमि सत्त भंगा, अट्ठ य भंगा हवंति वेअणिए ।
पण नव नव पण भंगा, आउचउक्के वि कमसो [7]उ ॥११॥(प्र०)
बावीस [8]इक्कवीसा, [9]सत्तरसं तेरसेव नव पंच ।
चउ तिग दुगं च [10]इक्कं, बंधट्ठाणाणि मोहस्स ॥१०॥१२॥
[11]एगं व दो व चउरो, एत्तो [12]एगाहिआ दसुक्कोसा ।
ओहेण मोह[13]णिज्जे, उदय[14]ट्ठाणाणि नव हुंति ॥११॥१३॥
[15]अट्ठय-सत्तय-छ-च्चउ-तिग-दुग-[16]एगाहिआ भवे वीसा ।
तेरस [17]बारिक्कारस, [18]इत्तो पंचाइ [19]एगूणा ॥१२॥१४॥
संतस्स[20]पयडिठाणाणि, ताणि मोहस्स[21]हुंति पन्नरस ।
बंधोदयसंते पुण, भंग[22]विगप्पा [23]बहू जाण ॥१३॥१५॥
छब्बावीसे चउ इगवीसे, सत्तरस तेरसे दो दो ।
[24]नवबंधगे वि[25]दुण्णि उ, [26]इक्किक्कमओ परं भंगा ॥१४॥१६॥
दस बावीसे नव [27]इगवीसे, सत्ताइ उदय[28]कम्मंसा ।
छाई नव सत्तरसे, तेरे पंचाइ अट्ठेव ॥१५॥१७॥

---

१ "पगईठाणाणि तिन्नि तुल्लाणि" इति वा, "पगडिट्ठाणाणि तिन्नि सरिसाणि ।" इति वा । २ "उदयट्ठाणाणि" इति वा । ३ "०गेसु" इति वा । ४ 'पच उदय नवसत छच्च चउजुयल ।" इत्यपि पाठ । ५ "छ चउसताइ" इत्यपि । ६ "वोच्छं" इति वा । ७ "य" इत्यपि । ८. "एक्कवीसा" इत्यपि । ९ "सत्तरसा" इत्यपि । १० "एक्क" इति वा 'एग" इति वा ११ "एक्क" इति वा, 'एक्को" इति वा, "एको" इति वा, "एग च दो य चउरो' इति वा । १२ "एक्काहिया" इत्यपि । १३ "०णिज्जा" इति वा । १४ "०ट्ठाणा नव हवंति" इत्यपि । १५ "अट्ठगसत्तग" इति । १६ "एक्का०" इत्यपि । १७ "बारेक्कारस" इति वा "बारेक्कारा" इति वा । १८ "एत्तो" इति वा । १९. 'एक्कूणा" इत्यपि, "एकूणा' इत्यपि वा । २० "पगडि०" इति वा, "पगइ०" इति वा, "पगइठाणाइँ" इति वा । २१ 'होंति" इति वा । २२ "०विगप्पे" इति वा । २३ "वहु" इत्यपि । २४ 'नव०" इत्यपि । २५ "दोन्नि" इत्यपि । २६ "एक्केक्क०" इत्यपि । २७ "इक्कवीस" इति वा "एगवीस" इति वा । २८ "ठाणाणि" इति वा "०ठाणाइ" इति वा ।

चत्तारि [1]आइ [2]नवबंध [3]एसु [4]उक्कोस सत्तमुदयंसा ।
पंचविहबंधगे पुण, उदओ [5]दुण्हं मुणेअव्वो ॥१६॥१८॥
[6]इत्तो चउ[7]बंधाई, [8]इविकक्कुदया हवंति सव्वेवि ।
बंधोवरमे वि तहा, उदयाभावे वि [9]वा [10]हुज्जा ॥१७॥१९॥
[11]इक्कग छक्किक्कारस, दस सत्त चउक्क [12]इक्कगं चेव ।
एए चउवीसगया, [13]चउवीस दुगेक्कमेक्कारा ॥१८॥२०॥
[14]नवतेसीइसएहिं, उदय[15]विगप्पेहि मोहिआ जीवा ।
[16]अउणुत्तरिसीआला, पय[17]विंदसएहिं विन्नेआ ॥२०॥२१॥
नवपंचा[18]णउअसए, उदयविगप्पेहिं [19]मोहिआ जीवा ।
[20]अउणुत्तरि एगुत्तरि, पयविंदसएहिं विन्नेआ ॥१९॥२२॥
[21]तिन्नेव य बावीसे इगवीसे अट्ठवीस [22]सत्तरसे ।
छच्चेव तेर [23]नव-बंध[24]एसु पंचेव [25]ठाणाणि ॥२१॥२३॥
पंचविहचउविहेसुं, छछक्क सेसेसु जाण पंचेव ।
[26]पत्तेअ, पत्तेअं चत्तारि [27]अ बंध[28]वुच्छेए ॥२२॥२४॥
दसनवपन्नरसाइं, बंधोदयसंत[29]पयडिठाणाणि ।
[30]भणिआणि मोहणिज्जे, [31]इत्तो [32]नामं परं [33]वुच्छं ॥२३॥२५॥

---

१ "०माइ" इति वा । २ "णव०" इति वा । ३ "०गेसु" इति वा । ४ 'सत्तुक्कमेण उदयसा" इति वा "उक्कोससत्त उदयसा' इति वा । ५ "दोण्ह" इति वा । ६ 'एत्तो' इति वा । ७ "बधादी" इत्यपि । ८ "एक्कुक्कु" इत्यपि, "इक्केक्कु०" इत्यपि वा । ९. "ता होज्जा ॥१६॥" इति वा । १० "होज्जा" इत्यपि । ११ 'एक्का छक्केक्कारस" इत्यपि । १२ "एक्का" इति वा, "एक्कग" इति वा । १३ 'चउवीसदुगेक्कमिक्कारा ॥१८॥" इत्यपि, "चउवीस दुगिक्कमिक्कारा ॥२०॥" इत्यपि वा, "बार दुगिक्कमि इक्कारा ॥२०॥" इत्यपि वा । १४ इयं गाथा हस्तलिखितप्रतौ द्वाविंशतितमी द्वाविंशतितमी चैकविंशतितमीति व्यत्यय । १५ "विगप्पेहिं मोहिया" इत्यपि । १६ "अउणत्तरिसीयाला" इत्यपि । १७ '०वद०" इत्यपि । १८ '०णाउयसए" इति वा, '०णाउइसएहुद०" इति वा, "०णुयसएहिं" इति वा । १९ "मोहिया" इत्यपि । २०. "अउणत्तरि" इति वा, "अउणत्तरि एगुत्तरि" इति वा । २१ 'तिण्णेव उ" इति वा, 'तिन्नेव उ" इति वा । २२ "कस्मसा । सत्तरसे छस्सते तेरस नवबधए पच ॥२३॥" इति हस्तलिखितप्रतौ । २३ "णव०" इति वा । २४ "०गेसु" इति वा । २५ "ठाणाइ ॥२१॥" इति वा २६ "पत्तेय पत्तेय" इत्यपि । २७ "य" इति वा, "उ" इति वा । २८ "वोच्छेए" इत्यपि । २९ "०पगइ०" इति वा '०पयइ०" इत्यपि वा । ३०. "भणियाइं" २। ३१ "एत्तो" इति वा । ३२ 'णाम' इति वा । ३३ "वोच्छं" इत्यपि ।

तेवीस [1]पणवीसा, छव्वीसा अट्ठवीस [2]गुणतीसा ।
[3]तीसेगतीस [4]मेग, बंध [5]ट्ठाणाणि नामस्स ॥२४॥२६॥
[6]चउ पणवीसा सोलस नव बाणउईसया य अडयाला ।
एयालुत्तरछाया-लसया [7]इक्किक्क बंधविही ॥२७॥(प्र०)
वीसिगवीसा चउवीसगा उ एगाहिआ य इगतीसा ।
उदयट्ठाणाणि भवे नव अट्ठ य [9]हुंति नामस्स ॥२५॥२८॥
[10]इक्क बिआलिक्कारस, [11]तित्तीसा छस्सयाणि [12]तित्तीसा ।
बारससत्तरससयाण-हिगाणि बिपंचसीईहिं ॥२६॥२९॥
अउणत्ती[13]सिक्कारससयाणिहिअसतरपंचसट्ठीहिं ।
[14]इक्किक्कगं च वीसा-दट्ठुदयंतेसु उदयविही ॥२७॥३०॥
तिदुनउई [15]गुणनउई, [16]अडसी छलसी असीइ [17]गुणसीई ।
[18]अट्ठयछप्पन्नत्तरि, नव अट्ठ य [19]नामसंताणि ॥२८॥३१॥
अट्ठ य बारस बारस, बंधोदय[20]संतपयडि[21]ठाणाणि ।
ओहेणाएसेण य, जत्थ जहासंभवं [22]विभजे ॥२९॥३२॥
नव [23]पणगोदयसंता तेवीसे [24]पन्नवीस छव्वीसे ।
अट्ठ चउरट्ठवीसे, नव [25]सगि गुणतीस तीसंमि ॥३०॥३३॥
[26]एगेगमेगतीसे, एगे एगुदय अट्ठ संतंमि ।
उवरयबंधे दस दस, वेअगसंतमि [27]ठाणाणि ॥३१॥३४॥

---

१ "पन्नवीसा" इत्यपि । २ "गुणतीसा" इति, "उगुतीसा" इत्यपि वा । ३ "तीसिक्क०" इत्यपि, "तीसेक्क०" इत्यपि । ४ "०मेक्क" इत्यपि । ५ "०ट्ठाणाइँ" इत्यपि । ६ इयं गाथा मूलगाथातया चूर्णौ नास्ति, श्रीमन्मलयगिरिविहितवृत्त्युपेतसप्ततिकायां चाऽस्ति । २७-२८ तमगाथयोर्हस्तलिखितप्रतौ व्यत्ययोऽस्ति । २७ तमगाथास्थानेऽष्टाविंशतितमी गाथा, अष्टाविंशतितम्या स्थाने सप्तविंशतितमीति । ७ "एक्केक्क०"इत्यपि । ८ "०गाइ इगतीसगत एगहिया" इत्यपि । "०गादि-गतीसगति एगहिया ।" इत्यपि "०गाति एगाहिया उ इगतीसा ।" इत्यपि, "०गाइ एगाहिया उ इगतीसा" इत्यपि वा । ९ "होंति" इत्यपि । १० "एगवियालेकारस" इत्यपि, एगवियारेक्कारस" इत्यपि वा । ११-१२ "तेतीसा" इत्यपि । १३ "०सेक्कारससयऽहिगसत्तरस पंच०" इत्यपि, "०सेक्कारससयाहिगा सतरसपंच०" इत्यपि, "सेक्कारससयाणहिगसतरपंच०" इत्यपि वा १४ "इक्केक्कग" इत्यपि, "एक्केक्कग" इत्यपि वा । १५ "इगु०" इत्यपि, "उगु०" इत्यपि वा । १६. "अट्ठच्छलसी" इत्यपि "अट्ठयच्छलसी" इत्यपि वा । १७ "उगु०" इत्यपि । १[8] "अट्ठयछप्पणत्तरि" इत्यपि, "अट्ठच्छप्पणत्तरि" इत्यपि । १९ "णाम०" इत्यपि । २० "संतपगडिठाणाइ" इत्यपि । २१ "०ठाणाइ" इत्यपि । २२ "विभए" इत्यपि । २३ "पंचोदय०" इत्यपि "पंच उदय०" इत्यपि । २४ "पण्णवीस" इत्यपि । २५ "सत्तुगतीस०" इत्यपि, "सत्तागुतीस" इत्यपि, "सत्तिगुतीस०" इत्यपि वा । २६ "एगेग इगतीसे" इत्यपि । २७ "ठाणाइ" इत्यपि ।

तिविगप्पपगइठाणेहिं, जीवगुणसन्निएसु ठाणेसु ।
भंगा पउंजियव्वा, जत्थ जहा संभवो [1]भवइ ॥३२॥३५॥
तेरससु जीवसखेवएसु, नाणंतरायतिविगप्पो ।
[2]इक्कंमि तिदुविगप्पो, करणं पइ [3]इत्थ अविगप्पो ॥३३॥३६॥
तेरे नव चउ पणगं, नव संतेगंमि भंगमिक्कारा ।
वेअणिआउगगोए, विभज्ज मोहं परं [4]वुच्छं ॥३४॥३७॥
पज्जत्तगसन्नि[5]अरे, अट्ठ चउक्कं च [6]वेअणियभंगा ।
[7]सत्त य तिगं च गोए, [8]पत्तेअं जीवठाणेसु ॥३८॥(प्र०)
पज्जत्ताऽपज्जत्तग, समणे पज्जत्तअमण सेसेसु ।
अट्ठावीसं दसगं, नवगं पणगं च आउस्स ॥३९॥(प्र०)
अट्ठसु पंचसु एगे, एग दुगं दस य मोहबंधगए ।
तिग चउ नव उदयगए, तिग तिग पन्नरस संतंमि ॥३५॥४०॥
पण दुग पणगं पण चउ, पणगं पणगा हवंति तिन्नेव ।
पण छप्पणगं छच्छ,-प्पणाग अट्ठट्ठ दसग ति ॥३६॥४१॥
सत्तेव अपज्जत्ता, सामी [9]सुहुमा य बायरा चेव ।
विगलिंदिआ [10]उ तिन्नि उ, तह य असन्नी [11]अ सन्नी [12]अ ॥३७॥४२॥
नाणंतराय तिविहमवि, दससु दो [13]हुंति दोसु ठाणेसु ।
मिच्छा[14]साणे [15]बीए, नव चउ पण नव य [16]संतंसा ॥३८॥४३॥
[17]मिस्साइ [18]नियट्टीओ, छ च्चउ पण नव य संतकम्मंसा ।
चउबंध तिगे चउपण, नवंस दुसु जुअल[19]छस्संता ॥३९॥४४॥
उवसंते चउ पण नव, खीणे चउरुदय छच्च चउ[20]संता ।
वेअणिआउअगोए, विभज्ज मोहं परं [21]वुच्छं ॥४०॥४५॥
चउ छस्सु दुन्नि सत्तसु, एगे चउगुणिसु वेअणिअभंगा ।
गोए पण चउ दो तिसु, एगट्ठसु [22]दुन्नि इक्कंमि ॥४६॥(प्र०)

---

१ "होइ" इत्यपि । २ "एक्कम्मि" इत्यपि । ३ "एत्थ" इत्यपि । ४ "वोच्छं" इत्यपि । ५ "०यरे" इत्यपि । ६ "वेय०" इत्यपि । ७ "सत्तग०" इत्यपि । ८ "पत्तेय" इत्यपि । ९ 'तह सुहुमबायरा०" इत्यपि । १० "य" इत्यपि । ११ १२ "य" इत्यपि । १३ "होंति" इत्यपि । १४ "सासण" इत्यपि । १५ "बिइए" इत्यपि । १६ 'सत्तासा" इत्यपि । १७ "मीसाइ" इत्यपि । १८ "नियट्टीए" इत्यपि । १९ "छस्सत" इत्यपि । २० "सत" इत्यपि । २१ "वोच्छं" इत्यपि । २२ "दोन्नि" इत्यपि ।

अट्ठ[1]च्छाहिगवीसा, सोलस वीसं च [2]बारस छ दोसु ।
दो चउसु तीसु इक्कं, [3]मिच्छाइसु आउए भंगा ॥४७॥(प्र०)
गुणठाणएसु अट्ठसु, इक्किक्कं मोह [4]बंधगाणं तु ।
[5]पञ्च अनिअट्टिठाणे, बंधोवरमो पर तत्तो ॥४१॥४८॥
सत्ताइ दस उ मिच्छे, सासायणमीसए [6]नवुक्कोसा ।
छाई [7]नव उ अविरए देसे पंचाइ अट्ठेव ॥४२॥४९॥
विरए खओवसमिए, चउराई सत्त छच्चऽपुव्वंमि ।
[8]अनिअट्टिबायरे पुण, [9]इक्को व दुवे व उदयंसा ॥४३॥५०॥
एगं सुहुमसरागो, वेएइ अवेअगा भवे सेसा ।
भंगाणं च पमाणं, पुव्वुद्दिट्ठेण नायव्व ॥४४॥५१॥
[10]इक्क छडिक्कारिक्का रसेव इक्कारसेव [11]नव तिन्नि ।
एए चउवीसगया, बार दुगे पंच [12]इक्कंमि ॥४५॥५२॥
बारसपणसट्ठिसया, उदयविगप्पेहिँ [13]मोहिआ जीवा ।
चुलसीई सत्तुत्तरि, पय[14]विंदसएहिँ [15]विन्नेआ ॥५३॥(प्र०)
अट्ठग चउ चउ चउरट्ठगा य, चउरो [16]अ हुंति चउवीसा ।
मिच्छाइअपुव्वंता, बारस पणगं च [17]अनिअट्टी ॥५४॥(प्र०)
[18]जोगोवओगलेसा-इएहिँ गुणिआ हवंति [19]कायव्वा ।
जे जत्थ [20]गुणट्ठाणे, हवंति ते तत्थ गुणकारा ॥४६॥५५॥
अट्ठट्ठी बत्तीसं, बत्तीसं सट्ठिमेव [21]बावन्ना ।
[22]चोआल दोसु वीसा, [23]विअ मिच्छमाईसु [24]सामन्नं ॥५६॥(प्र०)

---

१ "च्छाहिय०" इत्यपि । २ "बार छ दोसु" इत्यपि । ३ "मिच्छाइसु आउगे" इत्यपि । ४. "०बधठाण" इत्यपि । ५. 'पचानि०" इत्यपि । ६ "णवु०" इत्यपि । ७ "णव" इत्यपि । ८ "अणि०" इत्यपि । ९ 'एक्को" इत्यपि । १० "एक्कछडेक्कारसेव एक्कारसेव" इत्यपि । ११ "णव" इत्यपि । १२ 'एक्कम्मि" इत्यपि । १३ 'मोहिया" इत्यपि । १४. "०बधसएहिँ" इत्यपि । १५ "विन्नेया" इत्यपि । १६ 'य" इत्यपि, "य होंति" इत्यपि वा । १७ "अनियट्टे" इत्यपि, "अणियट्टे" इत्यपि वा । १८ ५५-५६ तमगाथयोर्हस्तलिखितप्रतौ व्यत्ययोऽस्ति । १९ "नायव्वा" इत्यपि । २० "गुणट्ठाणेसु हुति" इत्यपि । 'गुणट्ठाणेसु होंति" इत्यपि । २१ "बावण्णा" इत्यपि । २२ "चोयालु" इत्यपि । 'चोयाल चउल वीसा विय मिच्छमाईसु ॥" इत्यपि । २३ "मिच्छामाईसु" इत्यपि । २४ "सामण्ण" इत्यपि ।

[1]तिन्नेगे एगेगं, तिग मीसे पंच [2]चउसु तिगऽपुव्वे ।
[3]इक्कार बायरम्मि उ, सुहुमे चउ तिन्नि उवसंते ॥४७॥५७॥
[4]छन्नव छक्कं तिग सत्त, दुगं दुग तिग दुग ति अट्ठ चउ ।
दुग[5]छच्चउदुगपणचउ, चउदुगचउपणगएगचऊ ॥४८॥५८॥
एगेगमट्ठ एगे-गमट्ठ छउमत्थकेवलिजिणाणं ।
एग चऊ एग चऊ, अट्ठ चऊ दु छक्कमुदयंसा ॥४९॥५९॥
चउ [6]पणवीसा सोलस, नव चत्ताला सया य बाणउई ।
बत्तीसुत्तरछायाल-सया मिच्छस्स बंधविही ॥६०॥(प्र.)
अट्ठ [7]सया चउसट्ठी, बत्तीससयाइं सासणे भेआ ।
अट्ठावीसाईसुं, सव्वाणऽट्ठहिग [8]छन्नउई ॥६१॥(प्र.)
[9]इगचत्तिगार बत्तीस, छसय इगतीसिगारनवनउई ।
सतरिगसि गुतीसचउद इगारचउसट्ठि मिच्छुदया ॥६२॥(प्र.)
बत्तीस [10]दुन्नि अट्ठय बासीइसया य पंच नव उदया ।
[11]बारहिआ तेवीसा, [12]बावन्निक्कारस सया य ॥६३॥(प्र.)
दो छक्कट्ठ चउक्कं, पण [13]नव इक्कार छक्कगं उदया ।
[14]नेरइआइसु [15]सत्ता, ति पंच इक्कारस चउक्कं ॥५०॥६४॥
[16]इग विगलिंदिअ सगले, पण पंच य अट्ठ बंधठाणाणि ।
पण [17]छक्किक्कारुदया, पण पण बारस य संताणि ॥५१॥६५॥
[18]इअ कम्मपगइठाणाणि, सुट्ठु बंधुदय संतकम्माणं ।
[19]गइआइएहिं अट्ठसु, [20]चउप्पयारेण नेयाणि ॥५२॥६६॥[21]

---

१ तिण्णगे" इत्यपि । २. "अयमेव पाठ समीचीनोऽस्ति । तथाऽन्यत्र चूर्णिकारै टीकाकृद्भिश्च "चउसु नियट्टिए तिन्नि" इति पाठो विवृतः । हस्तलिखितप्रतौ पुन 'पच" इतिशब्दो नास्ति तथा "चउ नु पुण नियट्टितिग" इति पाठ उपलभ्यते । ३. "एक्कार बायरम्मी" इत्यपि । ४ 'छण्णव" इत्यपि । ५ ' छक्क चऊ पणेगचऊ ॥५८॥" इत्यपि । ६ "पणु०" इत्यपि । ७ "य सय चोवट्ठिं बत्तीससया य" इत्यपि । ८ "छण्णउई" इत्यपि । ९. इय गाथा हस्तलिखितप्रतौ नास्ति मुद्रितग्रन्थकेषूपलभ्यते । १०. "दोन्नि" इत्यपि । ११ "बारहिगा" इत्यपि । १२ "बावन्ने०" इत्यपि । १३ 'नवगेक्कार" इत्यपि । "नवएक्कार" इत्यपि वा । १४ "०ओर०" इत्यपि । १५ "सता" इत्यपि । १६ "इगि" इत्यपि । १७ "छक्के०"इत्यपि । १८ "इय कम्मपगडि०" इत्यपि, 'इय कम्मपगइठाणाइँ" इत्यपि । १९ "गइयाइएसु" इत्यपि, "गइयाइएहिँ" इत्यपि । २० "चउप्पगारेण" इत्यपि ।

२१ "गइइंदिए य काए जोए वेए कसायनाणे य । संजमदंसणलेसा भवसम्मे सन्निआहारे ॥ ॥
सतपयपरूवणया दव्वपमाणं च खित्तफुसणा य । कालंतरं च भावो अप्पाबहुयं च दारस्य । ॥
इति गाथाद्वय ६६-६७ तमगाथायोर्मध्येऽधिकतया हस्तलिखितप्रतौ प्रक्षिप्त दृश्यते ।

उदयस्सुदीरणाए, [1]सामित्ताओ न विज्जइ विसेसो ।
[2]मुत्तूण य [3]इगयालं, सेसाणं सव्व[4]पयडीणं ॥५३॥६७॥
नाणंतरायदसग, दंसणनव वेअणिज्जमिच्छत्तं ।
सम्मत्त लोभ वेआ-उआणि नवनाम उच्चं च ॥५४॥६८॥[5]
[6]तित्थयराहारग [7]विरहिआओ, अज्जेइ सव्व[8]पयडीओ ।
मिच्छत्त[9]वेअगो सा—सणो[10]वि गुणवीससेसाओ॥५५॥६९॥
छायालसेसमीसो, अविरयसम्मो [11]तिआल[12]परिसेसा ।
[13]तेवन्न देसविरओ, विरओ [14]सगवन्नसेसाओ ॥५६॥७०॥
[15]इगुणट्ठिमप्पमत्तो, बंधइ देवा[16]उअस्स इअरो वि ।
[17]अट्ठावन्नमपुव्वो, [18]छप्पन्न वावि छव्वीसं ॥५७॥७१॥
बावीसा एगूणं बंधइ [19]अट्ठारसंतमनिअट्टी ।
[20]सतरस सुहुमसरागो, सायममोहो[21]सजोगुत्ति ॥५८॥७२॥
एसो उ बंध[22]सामित्त,—ओहो गइआइ[23]एसु वि तहेव ।
ओहाओ [24]साहिज्जइ, जत्थ जहा [25]पगइसब्भावो ॥५९॥७३॥
तित्थयरदेवनिरया-[26]उअं च तिसु तिसु गईसु [27]बोधव्वं ।
अवसेसा [28]पयडीओ, हवति सव्वासु वि गईसु ॥६०॥७४॥
पढमकसायचउक्कं, दंसण[29]तिग सत्तगा वि उवसंता,
[30]अविरयसम्मत्ताओ, जाव [31]निअट्टित्ति नायव्वा ॥६१॥७५॥

---

१ "सामित्ताए" इत्यपि । २ "मोत्तूण" इत्यपि । ३. "ईयाल" इत्यपि, "इगुयाल" इत्यपि वा । ४ "०पगडीण" इत्यपि, "पगईण" इत्यपि । ५ "मणुयगइजाइतसबायरं च पज्जत्तसुभगमाएज्जं । जसकित्ती तित्थयरं नामस्स हवति नवए य ॥ ॥" इतिगाथा । ६८-६९ तमगाथयोर्मध्येऽधिकतया हस्तलिखितप्रतौ प्रक्षिप्ता दृश्यते । ६ 'तित्थगरा-" इत्यपि । ७ '०विरहिआउ" इत्यपि "०वज्जियाउ" इत्यपि । ८ 'पगईओ" इत्यपि, पगडीओ" इत्यपि वा । ९ '०वेयगो" इत्यपि । १० "वि इगुवीससेसाओ" इत्यपि "वि इगुवीससेसाओ" इत्यपि, 'उ उणवीससेसाओ" इत्यपि वा । ११ "तियाल०" इत्यपि । १२ "०परिसेस" इत्यपि । १३ 'तेवण्ण " इत्यपि, "तेपन्न०" इत्यपि वा । १४ "सगवण्ण०" इत्यपि, 'सगपन्न०" इत्यपि । १५ "इगुसट्ठि०" इत्यपि, "उगुसट्ठि० ' इत्यपि वा । १६ "०उयस्स इयरो वि" इत्यपि, "०उग च इयरो वि' इत्यपि वा । १७ "अट्ठावण्ण०" इत्यपि । १८ "छप्पण्ण" इत्यपि । १९ 'अट्ठारस त्ति अनियट्टी" इत्यपि, 'अट्ठारस ति अनियट्टी" इत्यपि वा । २० "सत्तर" इत्यपि । २१ "सजोगित्ति" इत्यपि । २२ 'सामित्तोहो" इत्यपि, "सामित्तओघो" इत्यपि । २३ "०ए वि तह चेव" इत्यपि । २४ "साहेज्जा" इत्यपि । २५ "पगडि०" इत्यपि । २६ "०उग च" इत्यपि, "०उय च" इत्यपि वा । २७ "बोद्धव्व" इत्यपि । २८ "पगडीओ" इत्यपि । २९ "तिय सत्तया वि" त्यपि । ३० "अविरत०" इत्यपि । ३१ 'नियट्टी" इत्यपि ।

सत्तट्ठ नव य पनरस, सोलस अट्ठारसेव [1]गुणवीसा ।
एगाहि दु चउवीसा, [2]पणवीसा बायरे जाण ॥७६॥(प्र.)
सत्तावीसं सुहुमे, अट्ठावीसं [3]च मोह [4]पयडीओ ।
उवसंत [5]वीअराए, उवसता हुंति नायव्वा ॥७७॥(प्र.)
पढमकसायचउक्कं, [7]इत्तो मिच्छत्तमीससम्मत्तं ।
[8]अविरयसम्मे देसे, [9]पमत्ति अपमत्ति खीअंति ॥६२॥७८॥
अनिअट्टिबायरे थीण-गिद्धितिगनिरय[10]तिरिअनामाओ ।
[11]संखिज्जइमे सेसे, तप्पाउग्गाओ [12]खीअंति ॥७६॥(प्र.)
[13]इत्तो हणइ कसाय-ट्ठगंपि पच्छा [14]नपुंसगं इत्थी ।
तो [15]नोकसायछक्कं, [16]छुहेइ संजलणकोहंमि ॥८०॥(प्र.)
पुरिसं कोहे कोहं, माणे माणं च छुहइ मायाए ।
मायं च छुहइ [17]लोहे, लोहं सुहमंपि तो हणइ ॥६३॥८१॥
खीणकसायदुचरिमे, [18]निद्दं पयलं च हणइ छउमत्थो ।
आवरणमंतराए, छउमत्थो चरमसमयमि ॥८२॥(प्र.)
देवगइसहगयाओ, दुचरमसमयभविअंमि [19]खीअति ।
सविवा[20]गेअरनामा, [21]नीआगोअ पि तत्थेव ॥६४॥८३॥
अन्नयर[22]वेयणीअं, मणुआ[23]उअमुच्चगोअ[24]नवनामे ।
वेएइ अजोगिजिणो, उक्कोसजह[25]न्नमिकारा ॥६५॥८४॥
[26]मणुअगइजाइतसबायरं च, पज्जत्तसुभग[27]माइज्जं ।
जसकित्ती तित्थयरं, [28]नामस्स हवंति नव एआ ॥६६॥८५

१ "इगुवीसा" इत्यपि, "उगुवीसा" इत्यपि, "उगवीसा" इत्यपि । २ "पणुवीसा" इत्यपि । ३ "पि" इत्यपि । ४ "पगडीओ" इत्यपि । ५ "वीयरागे" इत्यपि । ६ "होंति" इत्यपि । ७ "एत्तो" इत्यपि । ८ "अविरयदेसे विरए" इत्यपि। "अविरयदेसे विरयपमत्तऽपमत्ते य" इत्यपि वा।६ "पमत्तअपमत्त खीयति" इत्यपि । १० 'तिरिय०" इत्यपि, "०तिरियणामाउ" इत्यपि । ११ "सखे०" इत्यपि । १२ "खीयति" इत्यपि । १३ 'एत्तो" इत्यपि । १४ "णपु ०" इत्यपि । १५ 'णो०" इत्यपि । १६ "छुभइ" इत्यपि । १७ "लोभे लोभ" इत्यपि । १८ 'निद्दा पयला य" इत्यपि । १६ "खीयति" इत्यपि । २० "०गेयर०" इत्यपि । २१ "नीया गोय०" इत्यपि । २२ "वेयणीय" इत्यपि, "वेयणिज्ज" इत्यपि । २३ "०उय उच्चगोय०" इत्यपि । २४ "णाम च" इत्यपि, "नाम नव" इत्यपि । २५ "०न्नएक्कारं ॥" इत्यपि, "न्नमिक्कारे ॥" इत्यपि । २६ 'मणय०" इत्यपि । २७ "०माएज्जं" इत्यपि । २८ "णामस्स हवति णव एया" इत्यपि ।

उदयस्सुदीरणाए, [1]सामित्ताओ न विज्जइ विसेसो ।
[2]मुत्तूण य [3]इगयालं, सेसाणं सव्व[4]पयडीणं ॥५३॥६७॥
नाणंतरायदसगं, दंसणनव वेअणिज्जमिच्छत्तं ।
सम्मत्त लोभ वेआ-उआणि नवनाम उच्चं च ॥५४॥६८॥[5]
[6]तित्थयराहारग [7]विरहिआओ, अज्जेइ सव्व[8]पयडीओ ।
मिच्छत्त[9]वेअगो सा—सणो[10]वि गुणवीससेसाओ॥५५॥६९॥
छायालसेससीमो, अविरयसम्मो [11]तिआल[12]परिसेसा ।
[13]तेवन्न देसविरओ, विरओ [14]सगवन्नसेसाओ ॥५६॥७०॥
[15]इगुणट्ठिमप्पमत्तो, बंधइ देवा[16]उअस्स इअरो वि ।
[17]अट्ठावन्नमपुव्वो, [18]छप्पन्नं वावि छव्वीसं ॥५७॥७१॥
बावीसा एगूणं बंधइ [19]अट्ठारसंतमनिअट्टी ।
[20]सतरस सुहुमसरागो, सायममोहो[21]सजोगुत्ति ॥५८॥७२॥
एसो उ बंध[22]सामित्त,–ओहो गइआइ[23]एसु वि तहेव ।
ओहाओ [24]साहिज्जइ, जत्थ जहा [25]पगइसब्भावो ॥५९॥७३॥
तित्थयरदेवनिरया-[26]उअं च तिसु तिसु गईसु [27]बोधव्वं ।
अवसेसा [28]पयडीओ, हवंति सव्वासु वि गईसु ॥६०॥७४॥
पढमकसायचउक्कं, दंसण[29]तिग सत्तगा वि उवसंता,
[30]अविरयसम्मत्ताओ, जाव[31]निअट्टित्ति नायव्वा ॥६१॥७५॥

---

१ "सामित्ताए" इत्यपि । २ "मोत्तूण" इत्यपि । ३ "ईयाल" इत्यपि, "इगुयाल" इत्यपि वा । ४ "०पगडीण" इत्यपि, "पगईण" इत्यपि । ५ "मणुयगइजाइतसबायरं च पज्जत्तसुभगमाएज्जं । जसकित्ती तित्थयरं नामस्स हवंति नवए य ॥ ॥" इतिगाथा । ६८-६९ तमग थयोर्मध्येऽधिकृतया हस्तलिखितप्रतौ प्रक्षिप्ता दृश्यते । ६ 'तित्थगरा-" इत्यपि । ७ '०विरहिआउ" इत्यपि, "०वज्जियाउ" इत्यपि । ८ 'पगईओ" इत्यपि, 'पगडीओ" इत्यपि वा । ९ '०वेयगो" इत्यपि । १० "वि इगुवीससेसाओ" इत्यपि "वि इगुवीससेसाओ" इत्यपि, 'उ उणवीससेसाओ" इत्यपि वा । ११ "तियाल०" इत्यपि । १२ "०परिसेस" इत्यपि । १३ 'तेवण्ण" इत्यपि, "तेपन्न०" इत्यपि वा । १४ "सगवण्ण०" इत्यपि, 'सगपन्न०" इत्यपि । १५ "इगुसट्ठि०" इत्यपि, 'उगुसट्ठि०' इत्यपि वा । १६ "०उयस्स इयरो वि" इत्यपि, "०उग च इयरो वि' इत्यपि वा । १७ "अट्ठावण्ण०" इत्यपि । १८ "छप्पण्ण" इत्यपि । १९ 'अट्ठारस त्ति अनियट्टी" इत्यपि, 'अट्ठारस ति अनियट्टी" इत्यपि वा । २० "सत्तर" इत्यपि । २१ "सजोगित्ति" इत्यपि । २२ 'सामित्तोहो" इत्यपि, "सामित्तओघो" इत्यपि । २३ "०ए वि तह चेव" इत्यपि । २४ "साहेज्जा" इत्यपि । २५ "पगडि०" इत्यपि । २६ "०उग च" इत्यपि, "०उय च" इत्यपि वा । २७ "बोद्धव्व" इत्यपि । २८ "पगडीओ" इत्यपि । २९ "तिय सत्तया वि" इत्यपि । ३० "अविरत०" इत्यपि । ३१ 'नियट्टी" इत्यपि ।

सत्तट्ठ नव य पनरस, सोलस अट्ठारसेव [1]गुणवीसा ।
एगाहि दु चउवीसा, [2]पणवीसा बायरे जाण ॥७६॥(प्र.)
सत्तावीसं सुहुमे, अट्ठावीसं [3]च मोह [4]पयडीओ ।
उवसंत [5]वीअराए, उवसत्ता [6]हुंति नायव्वा ॥७७॥(प्र.)
पढमकसायचउक्कं, [7]इत्तो मिच्छत्तमीससम्मत्तं ।
[8]अविरयसम्मे देसे, [9]पमत्ति अपमत्ति खीअंति ॥६२॥७८॥
अनिअट्टिबायरे थीण-गिद्धितिगनिरय[10]तिरिअनामाओ ।
[11]संखिज्जइमे सेसे, तप्पाउग्गाओ [12]खीअंति ॥७९॥(प्र.)
[13]इत्तो हणइ कसाय-ट्ठगंपि पच्छा [14]नपुंसगं इत्थी ।
तो [15]नोकसायछक्कं, [16]छुहेइ संजलणकोहंमि ॥८०॥(प्र.)
पुरिसं कोहे कोहं, माणे माणं च छुहइ मायाए ।
मायं च छुहइ [17]लोहे, लोहं सुहमंपि तो हणइ ॥६३॥८१॥
खीणकसायदुचरिमे, [18]निद्दं पयलं च हणइ छउमत्थो ।
आवरणमंतराए, छउमत्थो चरमसमयंमि ॥८२॥(प्र.)
देवगइसहगयाओ, दुचरमसमयभविअंमि [19]खीअंति ।
सविवा[20]गेअरनामा, [21]नीआगोअं पि तत्थेव ॥६४॥८३॥
अन्नयर[22]वेयणीअं, मणुआ[23]उअमुच्चगोअ[24]नवनामे ।
वेएइ अजोगिजिणो, उक्कोसजहन्न[25]मिक्कारा ॥६५॥८४॥
[26]मणुअगइजाइतसबायरं च, पज्जत्तसुभग[27]माइज्जं ।
जसकित्ती तित्थयरं, [28]नामस्स हवंति नव एआ ॥६६॥८५

---

१ "इगुवीसा" इत्यपि, "उगुवीसा" इत्यपि, "उगवीसा" इत्यपि । २ "पणुवीसा" इत्यपि । ३ "पि" इत्यपि । ४ "पगडीओ" इत्यपि । ५ "वीयरागे" इत्यपि । ६ "होंति" इत्यपि । ७ "एत्तो" इत्यपि । ८ "अविरयदेसे विरए" इत्यपि। "अविरयदेसे विरयपमत्तऽप्पमत्तो य" इत्यपिवा॥९ "पमत्तअपमत्त खीयति" इत्यपि । १० 'तिरिय०" इत्यपि, "०तिरियणामाउ" इत्यपि । ११ "सखे०" इत्यपि । १२ "खीयत्ति" इत्यपि । १३ 'एत्तो" इत्यपि । १४ "णपु ०" इत्यपि । १५ ' णो०" इत्यपि । १६ "छुब्भइ" इत्यपि । १७ "लोभे लोभ" इत्यपि । १८ ' निद्दा पयला य" इत्यपि । १९ "खीयति" इत्यपि । २० "०गेयर०" इत्यपि । २१ "नीया गोय०" इत्यपि । २२ "वेयणीय" इत्यपि, "वेयणिज्ज" इत्यपि । २३ "०उय उच्चगोय०" इत्यपि । २४ "णाम च" इत्यपि, "नाम नव" इत्यपि । २५ "०न्नएक्कारं ॥" इत्यपि, "न्नमिक्कारे ॥" इत्यपि । २६ ' मणय०" इत्यपि । २७ "०माएज्जं" इत्यपि । २८ "णामस्स हवति णव एया" इत्यपि ।

[1]तच्चाणुपुव्विसहिआ, तेरस भवसिद्धि[2]अस्स चरमंमि ।
संतंसग उक्कोसं, [3]जहन्नयं बारस हवंति ॥६७॥८६॥
[4]मणुअगइसहगयाओ, भवखित्तविवा[5]गजिअविवागाओ ।
[6]वेअणिअन्नयरुच्चं, [7]चरमसमयमि खीअति ॥६८॥८७॥
अह [8]सुइअसयल जगसिहर—[10]मरुअ[11]निरुवम[12]सहा—
वसिद्धिसुहं ।
[13]अनिहणमव्वाबाहं, तिरयणसारं अणुहवंति ॥६९॥८८॥
दुरहिगम- -निउण--परमत्थ--[14]रुइरबहुभंगदिट्ठिवायाओ ।
अत्था अणुसरिअव्वा, बंधोदयसंतकम्माणं ॥७०॥८९॥
जो जत्थ अपडिपुन्नो, अत्थो अप्पागमेण बद्धोत्ति ।
तं खमिऊण बहु[15]सुआ, पूरेऊणं परि[16]कहंतु ॥७१॥९०॥
गाहग्गं [17]सयरीए, चंदमहत्तरमयाणुसारीए ।
[18]टीगाइनिअमिआणं, एगूणा होइ [19]नउईओ ॥९१॥(प्र.)

---

१ अस्या गाथाया स्थाने हस्तलिखितप्रतौ निम्ना गाथा दृश्यते । 'ता एव हुति नेया बारस भवसिद्धिगस्स चरमते । सतस्स उ उक्कोस जहन्न एक्कारस हवति ।८८॥" इति । २ "०यस्स" इत्यपि, '०गस्स" इत्यपि वा । ३ "जहन्नग" इत्यपि । ४ "मणुय०" इत्यपि । ५ '०गजियविवागाओ ।" इत्यपि, "०गजीववागुत्ति ।" इत्यपि, '०गजीववागत्ति' इत्यपि, "हवति भवजीवपावकम्मसा" इत्यपि । ६ "वेयणिय०" इत्यपि । ७ "चरिमे समयम्मि खीयति ॥७६॥" इत्यपि, "च चरिमभवियस्स खीयति ॥६९। ६८॥" इत्यपि, "अचरिमसमयम्मि खीयति ॥६८॥" इत्यपि । ८ "सुइय०" इत्यपि "सुइरसइजलमसिहर । ९ "जय०" इत्यपि । १० "मरुय०" इत्यपि । ११ 'णिरुवम" इत्यपि १२ "०सभाव०" इत्यपि । १३ "अणि०" इत्यपि । १४ "रुइल०" इत्यपि । १५ "०सुया" इत्यपि । १६ '-कहितु" इत्यपि । १७ सत्तरिए" इत्यपि, "सतरीए" इत्यपि वा । १८ "टीकाएं नियमियाण" इत्यपि, "टिक्काएँ णियमियाण" इत्यपि । १९ "णउईउ" इत्यपि ।



* सप्ततिकाभाष्यम् *

णमिऊण महावीरं कम्मट्ठपरूवणं करिस्सामि ।
वंधोदयसंतेहिं सत्तरियाचुन्निअणुसारा ॥१॥
णाणंतरायदंसणवरणे वेयणियआउगोयाणं ।
सुगमित्ति किंपि दंसिय सेसंपि समासओ वोच्छं ॥२॥
णाणंतरायदसगं [1]वंधहि मिच्छाउ जाव सुहुमोत्ति ।
उदसंत जा खीणो आवरणं दंसणस्सित्तो ॥३॥
जा सायणु नव [2]वंधी मिच्छा उवरि छवंधि जाऽपुव्वो ।
अप्पुव्वा जा सुहुमो निद्दादुगविरहिचउवंधी ॥४॥
मिच्छा जा उवसंतं नवसंतं उदयचारिपणगं वा ।
खवगाण वि नवसन्तं जा बायर [3]भागसंखेज्जो ॥५॥
उवरिं खीणदुचरिमं जा छ उ चउ संति चरिमि खीणस्स ।
उदए पुण खवगाणं चत्तारि उ दंसणावणे ॥६॥
चउपणगं वा उदए खीणदुचरिमं तु जाव अन्ने उ ।
भणियं दंसणावरणं संपइ पभणामि वेयणियं ॥७॥
जाव पमत्तु असायं सायं जोगंत [4]जयहि मिच्छादी ।
अस्सायं सायं वा उदए दो संति भंगचऊ ॥८॥
वंधविणा उ अजोगी जाव दुचरिमं दुसंति ते वुदया ।
चरिमे वि ते वि उदया उदयगयं [5]संति भंगचऊ ॥९॥
आउस्सेगं वंधे एगं उदयम्मि संति दो हुंति ।
जा वंधो उदएगं दो संतं वंधविरमम्मि ॥१०॥
एवं नरतिरियाणं दुसंत अट्ठट्ठभंग चउगइसु ।
आउचए [6]जोग्गाणं नेरइयसुराण पुण एवं ॥११॥
भंगचऊ पत्तेयं जं ते वंधंति आउदुगमेव ।
सव्वेसिमुदयसत एगेगं वंधपुव्विं तु ॥१२॥

---

१ "वधहिँ" इत्यपि । २ "वधा" इत्यपि । ३ 'भागुसखिज्जो इत्यपि मुद्रितप्रतौ । ४ "जयहिँ" इत्यपि ।
५ "सत" इत्यपि । ६ "जुग्गाण" इत्यपि ।

(गतिः समाप्ता)

अट्ठच्छाहिगवीसा सोलस वीसं च बार छा दोसु ।
दो चउसु तीसु [1]एक्कं मिच्छाइसु आउगे भंगा ॥१३॥

गुणठाणेसु आउस्स भंगा इति ॥

आऊ अडवीसविहं भणिय पभणामि [2]संपयं गोयं ।
बंधोदयसंतेहिं णीयं तिरियाण मिच्छाण ॥१४॥
ते वि हु तेऊ वाऊ तत्तो वा आगया पुढविमाई ।
जाव न उच्चागोयं बंधहि तावेस भंगो उ ॥१५॥
दो संत नीयबंधं नीउच्चं उदइ सासणो जाव ।
उच्चं बंधं नीयं च वेयए जाव देसोत्ति ॥१६॥
दो [3]संतमुच्चबंधं उच्चं उदयम्मि जाव सुहुमोत्ति ।
दो संतमुच्चमुदयं उवसंताओ अजोगंतं ॥१७॥
उदमंतं उच्चं चिय अजोगिचरिमम्मि सत्तमो भंगो ।
भणियं गोयं संपइ भणामि मोहं समासेणं ॥१८॥
बावीस [4]एगवीसा सत्तरसं तेरसव नव पंच ।
चउतिगदुगं च एगं बंधट्ठाणाणि दस मोहे ॥१९॥
मिच्छं कसायसोलस भयं दुगंछा तिवेय[5]अन्नयरं ।
हासरई इयरे वा छ भंग मिच्छस्स बावीसा ॥२०॥
मिच्छनपुंसगरहिया इगवीसा सासणस्स चउभंगा ।
अणइत्थिरहिय सतरस दो भंगा मीसअजयाण ॥२१॥
दुतियकसायविहूणा तेरस देसम्मि नव य विरयम्मि ।
दो दो भंगा नवरं अपमत्ताईण एगेगो ॥२२॥
ज ते हासरइदुगं [6]बंधहि नन्नं तु [7]जाव अपुव्वो ।
हासरइभयदुगुंछारहिया पंचेव ते हुंति ॥२३॥
तो पुंकोहाईणं कमेण वोच्छेइ सेसठाणाइं ।
अनियट्टि पंच बंधइ न सेस उदयं च [8]एत्तो य ॥२४॥
एको [9]व दो [10]व चउरो [11]एत्तो एकाहिया दसुकोसा ।
ओहेण मोहणिज्जे उदयट्ठाणाणि नव हुंति ॥२५॥

---

१ "इक्क" इत्यपि । २ "संपइ" इत्यपि । ३ "सत उ" इत्यपि । ४ "इक्कवीसा सत्तरसा" इत्यपि । ५ "मन्नयर" इत्यपि । ६ "बंधहिँ" इत्यपि । ७ "जाइ" इत्यपि । ८-११ "इत्तो" इत्यपि । ९-१० "य" इत्यपि । ११ "इत्तो इक्काहिया" इत्यपि ।

चउ कोहाइ अणाई दुजुयल हासरइअरइसोगाणं ।
वेयतियं एएहि भंगा चउवीसतिजनामा ॥२६॥

सज्ञाकरण

अणविणु तिन्नि कसाया जुयलन्नयर तिवेयअन्नयरं ।
मिच्छ च सत्त उ चउ मिच्छे भंगा तिजा हुंति ॥२७॥
चउवीस संतु सम्मी मिच्छं गंतु अणतचयमाणो
बधावलिया पढमा तत्थुदओ नत्थि णंताणं ॥२८॥
भयगुच्छअणंताणं एगयरे अट्ठ नव य पुण हुंति ।
दुगजोगतिण्हमेगयरखिवणि–तिगुणा ३ तिजा दुसुवि ॥२९॥
दस तिण्हं पि हु खिवणे तिजभंगा २४ अट्ठ सन्वि हुंति तिजा ।
॥२४॥८॥
सत्तट्ठनवा एवं सासणमिस्से य नवरं तु ॥३०॥
मिच्छाठाणेणंताणुवंधे मिस्सं च खिवसु जहसंखं ।
चउ चउ तिजा य[1] दोसु वि मिच्छविणासम्मि छक्कुदओ ॥३१॥
भयगुच्छवेयगाणेगयरे सग ७ अट्ठ ८ एगदुगखिवणे ।
तिण्हं दुगजोगाणं[2] ति३ तिज २४ नव तिहिं वि एगतिजो ॥३२॥
सव्वट्ठ तिजा २४ । एवं विइयकसाएहिँ विरहिया देसे ।
पंचाई अट्ठंता उदया[3] सव्वेऽट्ठ तिज हुंति ॥३३॥
तइयकसायविहूणा विरए चउराइ सत्तगता उ ।
उदया[4] सव्वट्ठ तिजा ४।२८ तत्थ उ सम्मे विसेसो यं ॥३४॥
जा वेयगसम्मधरा उदया ताणं तु हुंति न [5]उ पढमा ।
खइयगउवसमियाणं चउत्थउदया नवि य हुंति ॥३५॥
पणवंधि वार भंगा कसायवेएहिँ दुन्ह उदयम्मि ।
पंचाओ य चउक्क संकममाणस्स [6]ते चन्ने ॥३६॥
जावइया[7] वज्झंती तस्समभंगा य तत्थ य हवंति ।
एगो अवंधगस्स उ एगारस सव्वि एगुदए ॥३७॥
चउरो जईउ देसाउ पंच अजयाउ छाउ जाऽपुव्वा ।
सत्तापमत्त देसट्ठ नव उ अजयंत मिच्छाउ ॥३८॥

---

१ "दो वि हु मिस्स विणा" इत्यपि । २ "ति ति तिज नव तिहिँ वि" इत्यपि । ३ "सव्व-ऽट्ठ" इत्यपि । ४ "सव्वेऽट्ठ" इत्यपि । ५ "हु" इत्यपि । ६ "ते वऽन्ने" इत्यपि । ७ "वधती इत्यपि ।

दस मिच्छे अनियट्टी वेयइ दो एगु वा सहुमु एगं ।
उदया गुणेसु एवं भंगविगप्पा इमे तेसु ॥३९॥
अट्ठ य चउ चउ चउरट्ठगा य चउरो य हुंति तिज२४ नामा ।
चउतीस भंग ८ एगो ९ सुहुमंता हुंति जहसंखं ॥४०॥

उदओ सम्मत्तो ॥

अट्ठग सत्तग छच्चउ[1] तियदुगएकाहिया भवे वीसा ।
तेरस बारेकारस एत्तो पंचाइ एगूणा ॥४१॥
मोहो सव्वो अडवीस मम्मि [2]उव्वलिइ होइ सगवीसा ।
मिस्सुव्वलिए छव्वीस अणाइमिच्छस्स वा होइ ॥४२॥
जहसंखं अणचउ ४ मिच्छा [3]मिस्स २ सम्मं च अट्ठ य कसाया८।
नपु१२ [4]मित्थिहासछप्पु खविए मोहाउ २८ जा चउरो ॥४३॥
[5]एक्केक्कम्मि य खीणे संजलणे सेस संत जावेगो ।

गुणस्थानेषु सत्तास्थानान्याह—

मिच्छे जा छव्वीसा अट्ठावीसा य सासाणे ॥४४॥
चउवीसंता छव्वीसवज्जिया मिस्सि हुंति संताउ ।
अडचउतिदुएगहिया वीसा अजयाइचउसु पि ॥४५॥
तो अडचउएगहिया वीसा [6] उवसंत जाव सव्वेसिं ।
तेराइ खवगि बायरि एगंता [7]एगु सुहुमम्मि ॥४६॥
अडवीससंतकम्मो सम्मं उव्वलिय जाइ मीसम्मि ।
[8]मिच्छादिट्ठी एवं सत्तावीसा हवइ मीसे ॥४७॥

सांप्रत गुणस्थानविषयबन्धोदयेषु सत्तास्थानान्याह—

जे गुणठाणगसंता ते ते ताणं पि बंधउदएसु ।
[9]मोत्तुं बायरखवगो अणसम्मविसेसिउदए वि ॥४८॥
[10]इयवीसाई चउरो पणचइ चउचइ इगार पण चारि ।
तिव्वंधाइसु संतं बंधसमं एगअहियं च ॥४९॥

---

१ "तिगदुगएगाहिया" इत्यपि । २ 'उव्वलिए" इत्यपि । ३ "०मीस०" इत्यपि । ४ "इत्थि" इत्यपि । ५ "इक्किक्कम्मि उ" इत्यपि । ६ "उवसंतु" इत्यपि । ७ "एग" इत्यपि । ८ 'मिच्छद्दि०" इत्यपि । ९ 'अणसम्मविसेसुदए बायरखवगं च मुत्तूणं ॥४८॥" इति मुद्रितप्रतौ पाठान्तरम् । १० इय गाथाद्वयी हस्तलिखितप्रतौ, मुद्रितप्रतौ पुनरित्थं दृश्यते । 'मिच्छुदए अणरहिए अट्ठावीसे च हुंति संतम्मि । सम्मजुइ उदइ इगवीस नत्थि तिदुवीससम्मिविणा ॥४९॥ इगवीसाई चउरो पणचइ चउचइ इगार पण चारि । तियबंधाइसु संत बंधसमं एगअहियं च ॥५०॥ इति ।

सम्मजुय उदइ इगवीस नत्थि तिदुवीम नत्थि विणा ।
मिच्छुदए अणरहिए अट्ठावीसेव मतम्मि ॥५०॥
पुंचयनपित्थिमंते जुगवं थक्के अवेइ एक्कुदओ ।
चउवध संतिगारस जुगवं सत्तक्खए चउरो ।५१॥
पंडगपट्ठवगेयं एवं थीए चि नवरि नपि खीणे ।
[1]ता इत्थिउदयसंतं पुंबंधं जुगवुच्छेएइ ॥५२॥
पुरिसो पट्ठवगो पुण सव्विगवीमाइफासए कमसो ।
हासछगखवणकाले पुंबंधुदया परं थक्का ॥५३॥
सम्म विणा उदएसुं संतविभागो उ अजयमाईणं ।
चउरट्ठवीस उवसंतसम्मि खीणम्मि इगवीसा ॥५४॥

जीवस्थानेषु बन्धादीनाह —

अट्ठसु पंचसु एगे जियठाणे एग दुन्नि दस बंधा ।
तिग चउ नव उदयम्मि उ तिग तिग पन्नरस संतम्मि ॥५५॥

गतिषु बधादीनाह—

चधट्ठाणा तिन्नि उ पढमा सुरनारएसु चउ तिरिसु ।
सुरनारयाण छाई तिरि पंचाई दसंतुदया ॥५६॥
इगवीसंता तेवीसवज्जिया छावि संति तिसु गइसु ।
मणुयगईए सव्वे बंधोदयसंतठाणाणि ॥५७॥

मोहो सम्मत्तो ॥

तेवीसपन्नवीसा छव्वीसा अट्ठवीस गुणतीसा ।
[2]तीसेगतीसमेगं बंधट्ठाणाणि नामस्स ॥५८॥
वन्नचउतेयकम्मा निम्माणुवघायमगुरुलहुयं च ।
नव धुवबंधा एए सव्वत्थ मिलंति जा बंधो ॥५९॥
थिरसुभ२ सुस्सर३ सुखगइ४ सुभग५ जसा६ देय७ सियरसत्तदुगा
संघयणा ६ संठाणा छद्धा-पिंडा हवंतेए ॥६०॥
[3]नवगाविरुद्धगहणे तज्जा भंगा हवति सव्वत्थ ।
छायालसयाणि अडुत्तराणि अविसेसिए धुवओ ॥६१॥

---

१ "तो इत्थिउदय सन्त पुबध जुगव छेएइ" इति पाठो मुद्रितप्रतो दृश्यते । किन्तु स छन्दभङ्गादिहेतुना ऽशुद्ध प्रतिभाति। २ "तिसिक्कतिसमेग" इति मुद्रितप्रतौ पाठोऽस्ति, किन्तु सोऽशुद्ध. ।
३ 'नवए वि० इत्यपि ।

जत्थ य अट्ठ य भंगा तत्थ य थिरसुभ२ जसेहिँ३ सियरेहिँ ३ ।
उट्ठिंति संकरहिया आयवउज्जोय [1]दुगि दुगुणा ॥६२॥

बंधस्थानानि विवरयन्नाहगाथादशकेन-

नियगइदुगनियजाई उरलं हुंडं च थावरं अथिरं ।
अणएज्ज असुभदूभग अपज्जनवधुवय अजसं च ॥६३॥
पत्तेयदुगेगयरं सुहुमदुगेगयरिगिंदितेवीसा ।
[2]एगिंदियाइतिरिनर बंधहिँ मिच्छेण चउभंगा ॥६४॥
सोसासपराधाए खित्ते पणुवीसिगिंदिपज्जस्स ।
[3]पत्तयसुहुमसुभथिर जसजुयलिहिँ वीस भंगाओ ॥६५॥

विरुद्धपरित्यागेन ज्ञेया ।

नेरइयवज्ज मिच्छो बंधइ एसा वि होइ छव्वीसा ।
उज्जोयआयवाणं एगयरे भंगसोलसगं ॥६६॥
साहारणसुहमेहिं उज्जोयजसायवा न [4]वज्झंति ।
अपजत्तेणं च तहा पमत्थपरियत्तमाणीओ ॥६७॥
[5] एगिंदिवज्जतिरिमणुअपज्ज पणवीस एत्थ पणभंगा ।
तसबायरउरलदुगं सेवट्टं तहय पत्तेयं ॥६८॥
[6] तेवीससेससहियं नरतिरिएगिंदियाइ बंधंति ।
नारयअडवीसेवं बंधहिँ तिरिमणुयपंचिंदी ।।६९॥

सा एव-

नियगइदुगनियजाईबायरपरघाय[7]पज्जपत्तेयं ।
नवधुव सासु तसं चिय वेउव्विदुगं च हुंडं च ॥७०॥
अपसत्थपिंडसहिया सघयणं [8]मोत्तु मिच्छ बंधेइ ।
भंग विणा मिच्छाईपुव्वंता सा वि सुरजोग्गा ॥७१॥
नवरं भगा अट्ठ उ समचउरंसं पसत्थपिंडं च ।
सा तित्थि इगुणतीसा [9]बंधहिँ अजयाइणो अहवा ॥७२॥

---

१ "दुवि" इत्यपि ह० प्रतौ । २ एगिंदिया य तिरि०" इत्यपि । ह० प्रतौ ३ "बायरपत्तेयथिरासुभजसि सियरेहिँ वीसाम्भा ॥६५॥" इत्यपि मुद्रितप्रतौ पाठान्तरम् । ४ 'बधति" इति मु० प्रतौ । ५ "अपिजत्तविगलतिरिमणुयजुग्गपणवीसइत्थ पण भगा" इति मुद्रितप्रतौ पाठान्तरम् । ६ "सेसतेवीस०" इति मुद्रितप्रतौ पाठोऽस्ति पर तु स छन्दभङ्गकारणेणाऽशुद्धो भाति । ७ "पज्जत्त०" इति तु मुद्रितप्रतौ पाठोऽस्ति, किन्तु स न सम्यक्, छन्दोभङ्गत्वात् । ८ "मुत्तु मिच्छु" इत्यपि । ६ 'बधइ" इति मु० प्रतौ ।

नियगइदुगनियजाई उरलदुगं वायरं पराघायं ।
पत्तेय पज्ज नव धुव नवपिंडा उ तमं सामं ॥७३॥
नरतिरिय [1]जोग्गमिच्छाइ [2]दोन्नि बंधंति पिंडजा भंगा ।
विगलट्ठभंग हुंडं [3]सेवट्ठं हीणपिंडिल्ला ।७४॥
संघयणा संठाणा छावि हु मिच्छाण हुंति बंधम्मि ।
[4]सेवट्ठहुंडविरहे पण सामणि तयणुभंगा उ ॥७५॥
[5]पढमं सुरनेरइया मिस्साइजया नराण पाउग्गं ।
अडभंग [6]सत्थपिंडा एस विसेसो इगुणतीसे ॥७६॥
नरइगुणतीस तीसा तित्थेणं होइ [7]अजउ बंधेइ ।
अहवु [8]ज्जोयण तीसा तिरि गुण[9]तीसाइ तह सव्वं ॥७७॥
अहवा सुरअडवीसाऽऽ[10]हारगदुजुया अभग वरतीसा ।
तित्थेणं इगतीसा [11]बंधहि अपमत्तअप्पुव्वा ॥७८॥
जसकित्तिमपुव्वाई [12]बंधहि उवसमतमाइ न उ नामं ।
इय नामबंध[13]ठाणाइ भंगसंखा इमा तेसु ॥७९॥
चउ४[14]पणवीसा२५सोलस१६नवइ९ बाणउई सया य अडयाला ।
[15]इगयाउत्तरछायालसया४६४१[16]एक्के क्कबंधविही ॥८०॥

गुणस्थानेषु बन्धस्थानान्याह–

मिच्छो छ उ तीसता सासणु[17]अजया य तिन्नि तीसंता ।
देसपमत्ता सीसा बंधहिं वीसा नवट्ठहिया ॥८१॥
अडवीसाई चउगे बंधइ अपमत्तु पंच अप्पुव्वो ।
एगमनियट्टिसुहुमा सेसा नामं न बंधंति ॥८२॥

जीवस्थानेषु बन्धस्थानान्याह–

एगेगतीस सन्नी पज्जो अडवीस पज्जु असणो वि ।
सेसा उ पंचठाणा [18]बंधइ सव्वे वि जियठाणा ॥८३॥

---

१ "जुगा०" इत्यपि २ "दुन्नि" इत्यपि । ३ "छेवट्ठ" इत्यपि । ४ "छेवट्ठ०" इत्यपि । ५ बधवि सुरनेरइया मिस्सा अजया य मणुयपाउग्ग ।" इति मुद्रितप्रतौ पाठान्तरम् । ६ "०पसत्थ०" इति मु० प्रतौ । ७ "अजय" इति मु प्रतौ । ८ "ज्जोइण०" इत्यपि मु प्रतौ । ९ "०तीसाएँ" इत्यपि मु० प्रतौ १० "०हारदुगजुया" इत्यपि मु० प्रतौ । ११-१२ "बंधहिं" इत्यपि मु० । १३ "०ठाणाइँ" इत्यपि मु० १४ "पणु०" इत्यपि मु० । १५ "इगुयालुत्तर०" इत्यपि मु० । १६ "इक्किक" इत्यपि मु० । १७ "अजआ" इत्यपि मु० । १८ "बंधहिं" इत्यपि मु० ।

गतिषु तान्याह-

मणुएसु सन्नि बंधा पणछन्नवबीस तीस देवेसु ।
तिरिएसु छ ६ तीसंता नरए गुणतीसतीसा य ॥८४॥
पणयाल सन्नि नरि सत्ततीस तेरस सहस्स नव य सया ।
तिरि पज्जि अमणि मिच्छे ते छव्वीसा असम्मजया ॥८५॥
ते सतरसहिय [1]जियबारसेसु अट्ठसय तेरस सहस्सा ।
छप्पन्नहिय सुरेसु बत्तीसहिया य ते नरए ॥८६॥
छन्नवइसयट्ठहिया सोलस बत्तीस सोल सोलस य ।
चउ पंच एगमेगं साणाइसु भंग जा सुहुमो ॥८७॥

॥ इति जीवस्थानादिषु भङ्गाः॥

॥ बंधो समत्तो ॥

वीसिगवीसा चउवीसि [2]गाउ इगतीसमंत एगहिया ।
उदयट्ठाणाणि भवे नव अट्ठ य हुंति नामस्स ॥८८॥
[3]तेयाकम्मागुरुलहु थिरसुभजुयलाणि निम्म वन्नचउ ।
एया बारस पयडी धुवोदया हुंति नामस्स ॥८९॥
[4]संघयणा६संठाणा६सुभगं१आदेय१जस१ति३जुयलाणि ।
[5]रासीगुणेण भंगा अडसीया दो सया हुंति ॥९०॥ करण ॥
पज्जत्तजसादेयं सूभगजुयलेहिं नव य भंगाओ ।
अपसत्थेगु अपज्जे पज्जट्ठ उ करणजवडिल्लं ॥९१॥
[6]साहारणे ण आयवु-जोयजसायव अपज्जसुहमेहिं ।
साहारुज्जोयजसायवे य नोदिति सुहुमतसे ॥९२॥

उदयस्थानानि विवरयन्नाह त्रिंशद्भिर्गाथाभिः-

नियगइदुगनियजाई थावरनादेय[7]दुहयधुवपयडी ।
सुहुमापज्जजसाणं दुगदुग[8]एगयरि पणभंगा ॥९३॥
थावरइगवीसेसा अवणिय अणुपुव्वि [9]घत्तियं एयं ।
पत्तेयदुगेगयरं हुंडं उरलं [10]उवग्घायं, ॥९४॥

१. "०बारसजिएसु" इत्यपि मु० । २ "०गाइ०" इत्यपि । ३ "इय गाथा हस्तलिखितप्रतौ नास्ति । ४ सघयणं सठाण सूभगआ०" इति मु प्रतौ । ५ "रासिगुणणे" इति मु प्रतौ । ६ "साहारणे न" इति मु० प्रतौ । ७ "दुभग०" इत्यपि मु । ८ "एगयरे य" इति ह प्रतौ । ९ "घित्तिउ" इत्यपि मु प्रतौ । १० "च उवघाय" इत्यपि मु प्रतौ ।

दस भंगा [1]उरलम्मी विउव्विपज्जेगु [2]जाण चउवीसे ।
[3]बायरविउव्विदेहं पत्तेयं [4]वित्थ य विसेसो ॥९५॥
पज्जचउवीस पणुवीस होइ परघाय सत्त तहिं भंगा ।
पत्तेय१सुहुम२जसजुयलि [5]छाओ एक्को य वेउव्वे ॥९६॥
ऊसासे छव्वीसा तत्थ वि ते सत्त अहव [6]उज्जोयं ।४।
अहवा वि आयवेणं २ चउरो ४ दोर गिंदि [7]छव्वीसा ॥९७॥
सा व्वीसमज्झे आयवउज्जोयएगयरि छूढे ।
सत्तावीस छ ६ भंगा एगिंदियभंगबायाले ॥९८॥
जा इगवीसा एगिंदियस्स विगलाण होइ सा चेव ।
किंतु तसबायरं चिय पाठो भंगा य [8]तिन्नेवं ॥९९॥
अपसत्थपज्जभंगो एगो नरएसु अट्ठ वि सुरेसु ।
नव तिरिनरेसु जवडि भंग सेसो उ विगलकमो ॥१००॥
विगलइग [9]वीसि अणुपुव्विविरहिए खिवसु हुंडसेवट्टे ।
उरलदुगं उवघायं पत्तेयं चेव छव्वीसा ॥१०१॥
तं भंगतियं सा वि हु दुखगइ [10]परघायखिवणि अडवीसा ।
भंगा य [11]दोन्नि इत्थं अपज्जभंगा जओ नत्थि ॥१०२॥
ऊसासुज्जोयाणेगयरे गुणतीस भंग चत्तारि ।
सासगुणतीसतीसा सुरदुगउज्जोय एगयरे ॥१०३॥
[12]छब्भंगा सर तीसा इगतीसोज्जोयएण भंगचऊ ।
बेइंदियबावीसा छावट्ठी सव्वविगलाणं ॥१०४॥
सगलाणं छव्वीसा एवं नवरं तु रासिजा भंगा २८८ ।
अप्पज्जभंग अप्पसत्थजुत्त १ अडवीस पुण एवं ॥१०५॥
खगईदुगएगयरे परघाए खित्ति रासिजा २८८ दुगुणा ।
रासिज२८८भंग चउगुणा४ गुणतीसे सासि जोए वा ॥१०६॥
ऊसासे गुणतीसे सरदुगउज्जोयएगयरखेवे ।

---

१ "उरलम्मि उ" इत्यपि मु । २ "जाणि" इति ह प्रतौ । ३ "बायर०" इति मु । ४ "इत्थ" इत्यपि मु० । ५ "छा इक्को उ" इति मु० । ६ "उज्जोए" इत्यपि मु. । ७ "छव्वीसे" इत्यपि । ८ "तिन्नेव" इत्यपि मु । ९ "०वीस" इति मु. । १० "परिघा०" इति मु. । ११ "दुन्नि" इति मु । १२ "छ य" इत्यपि मु ।

[1]छग्गुणरासिजभंगा२८८ तीसाइ पुणो वि सगतीसा ॥१०७॥
उज्जोएणिगतीसा चउग्गुणा ४ रासिजा उ उदयंसा ।
छलहियगुणवन्नसया भंगा पंचिंदितिरियाणं ॥१०८॥
उज्जोयरहियतिरिविहि सामन्ननराण अत्थि सव्वो वि ।
दुगहियछव्वीससया भंगाणं ताण तो हुंति ॥१०९॥
वेउव्वियपणुवीसा वेउव्विदुगं समंतचउरंसं ।
पत्तेय उवघायं सिगवीसणुपुव्विरहिया य ॥११०॥
अडभंग सत्तवीस वि सुखगइ [2]परघायसंजुय तहेव ।
सासुज्जोएगयरे अडवीस दु अट्ठ २।८ जवड्डिल्ला ॥१११॥
उज्जोयसूसरेगयरि सास अडवीस होइ गुणतीसा ।
जवडिल्ला दो य अठा उज्जोए तीस जवडट्ठा ॥११२॥
तिरि छप्पन्नं भंगा नरेसु एमेव भंगपणतीसा ।
जं उज्जोओ जईणं तहिं [3]पसत्था य जवडिल्ला ॥११३॥
आहारसंजयाण वि एवं आहारगं तहिं वच्चं ।
[4]एक्केक्को वि य भंगा सव्वत्थ वि सत्त मिलिया वि ॥११४॥
नरगइपणिंदिजाई तसबायरपज्जसुभगधुवपयडी ।
आदेयजसा वीसं तित्थेणिगवीस केवलिणो ॥११५॥
उरलदुगं सट्ठाणं [5]पत्तेगुवघायवज्जरिसहं च ।
सह वीसाए छवीसा सत्तावीसा य तित्थेणं ॥११६॥
स च्चेव य छव्वीसा परघाउस्सासगइसरेगयरं ।
पक्खिविय भवे तीसा एगत्तीसा य तित्थेण ॥११७॥
केवलिणो तीसुदए सरंमि रुद्धे भवे इगुणतीसा ।
अडवीस सासरोहे अहवा तित्थयर इगतीसा ॥११८॥
सररोहि तीस सासम्मि गूणिया एवमट्ठ मणुयगई ।
तमसुहयपज्जबायरपणिंदिया-ऽऽ[6]एज्जयजसेहिं ॥११९॥
नव तित्थिण केवलिणो सव्वे भंगट्ठ पुव्वगहणेण ।
मणुयाण सव्वि भंगा छव्वीससया उ बावन्ना ॥१२०॥

---

१ "छगुणा" इत्यपि मु । २ "०परिघाय०" इति ह प्रतौ । ३ "च सत्था" इति ह । ४ "इक्किक्को च्चिय" इत्यपि मु । ५ "पत्तेयु०" इत्यपि मु । ६ "०इज्ज०" इत्यपि मु० ।

नियएगवीसजुत्ता विउव्वितिरिसरिस हुंति देवुदया ।
चउसट्ठि देवभंगा अपसत्था पंच नरएसु ॥१२१॥

उदयेपु भङ्गसख्या ॥

इग बेयालिक्कारस तेत्तीसा छस्सयाणि तेत्तीसा ।
बारस सत्तरससयाणहिगाणि बिपंचसीईहिं ॥१२२॥
अउणत्तीसेगारससयहियसत्तरसपंचसट्ठीहिं ।
एक्केक्कगं च वीसादट्ठुदयंतेसु उदयविही ॥१२३॥

उदयस्थान	२०	२१	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	९	८
भङ्ग	१	४२	११	२३	६००	३३	१२०२	१७८५	२९१७	११६५	१	१

बन्धस्थानेपु उदयानाह–

इगतीसता इगवीसमाइणो सव्वि उदय विज्जंति ।
तीसंतबंधगेसु[1] चउवीसा [2]मोत्तु अडवीसे ॥१२४॥
गुणतीसतीस उदया इगतीसे एगबंधि तीसेव ।
चउवीसा [3]पणवीसा [4]मोत्तुमबंधम्मि दस सेसा ॥१२५॥

साम्प्रत सर्वोदयभङ्गसख्यापूर्वक सर्वस्थानेपु सम्भवितोदयभङ्गसख्यामाह–

सत्तत्तरी सयाइं एक्काणउयाइं सव्वभंगाणं ७७९१।
जइ१८सुर६११नरय५विहूणा तेवीसे बंधि सेसुदया७७०४॥१२६॥
[5]नारय५जई१८विहूणा पुण छव्वीसे य पन्नवीसे य ७७६८।
केवलिरहिया८उदया गुणतीसे तीसबंधे य ७७८३॥१२७॥
पन्नसया [6]बासीया ५०८२ अडवीसे बंधि जमिह तिरिउरला ।
देहेणापडिपुन्ना पढमे संघयणसंठाणे ॥१२८॥
अडयालं भंगसयं१४८इगतीसे एगबंधि दुगसयरी ।७२
अट्ठाणवई सव्वे अवधए हुंति उदयसा ॥१२९॥

॥ इति बन्धस्थानेपु उदयभङ्गसख्या ॥

साम्प्रत गुणस्थानेपु उदयस्थानान्याह–

१ "मुत्तु" इत्यपि मु । २ "०उदओ" इत्यपि ह० । ३ "पणु०" इत्यपि मु । ४ "मुत्तु" इत्यपि मु । ५ "नरयजइविहूणा पुण छव्वीसे पन्नवीसबंधे य" । इत्यपि मुद्रितप्रतौ । ६ 'बासीती" इत्यपि मु ।

[1]छग्गुणरासिजभंगा२८८ तीसाइ पुणो वि सत्तीसा ॥१०७॥
उज्जोएणिगतीसा चउग्गुणा ४ रासिजा उ उदयंसा ।
छलहियगुणवन्नसया भंगा पंचिंदितिरियाणं ॥१०८॥
उज्जोयरहियतिरिविहि सामन्ननराण अत्थि सव्वो वि ।
दुगहियछव्वीससया भंगाणं ताण तो हुंति ॥१०९॥
वेउव्वियपणुवीसा वेउव्विदुगं समंतचउरंसं ।
पत्तेयं उवघायं सिगवीसगुपुव्विरहिया य ॥११०॥
अडभंग सत्तवीस वि सुखगइ [2]परघायसंजुय तहेव ।
सासुज्जोएगयरे अडवीस दु अट्ठ २।८ जवडिल्ला ॥१११॥
उज्जोयसूसरेगयरि सास अडवीस होइ गुणतीसा ।
जवडिल्ला दो य अठा उज्जोए तीस जवडट्ठा ॥११२॥
तिरि छप्पन्नं भंगा नरेसु एमेव भंगपणतीसा ।
जं उज्जोओ जईणं तहिं [3]पसत्था य जवडिल्ला ॥११३॥
आहारसंजयाण वि एवं आहारगं तहिं वच्चं ।
[4]एक्केक्को वि य भंगा सव्वत्थ वि सत्त मिलिया वि ॥११४॥
नरगइपणिंदिजाई तसवायरपज्जसुभगधुवपयडी ।
आदेयजसा वीसं तित्थेणिगवीस केवलिणो ॥११५॥
उरलदुगं सट्ठाणं [5]पत्तेगुवघायवज्जरिसहं च ।
मह वीसाए छवीसा सत्तावीसा य तित्थेणं ॥११६॥
स च्चेव य छव्वीसा परघाउस्सासगइसरेगयरं ।
पक्खिवविय भवे तीसा एगत्तीसा य तित्थेण ॥११७॥
केवलिणो तीसुदए सरंमि रुद्धे भवे इगुणतीसा ।
अडवीस सासरोहे अहवा तित्थयर इगतीसा ॥११८॥
सरगेहि तीस सासम्मि गूणिया एवमट्ठ मणुयगई ।
तमसुहयपज्जबायरपणिंदिया-ऽऽ[6]एज्जयजसेहिं ॥११९॥
नव तित्थिण केवलिणो सव्वे भंगट्ठ पुव्वगहणेण ।
मणुयाण सव्वि भंगा छव्वीससया उ बावन्ना ॥१२०॥

---

१ "छगुणा" इत्यपि मु । २ "०परिघाय०" इति ह प्रतौ । ३ "च सत्था" इति ह । ४ "इकिको च्चिय" इत्यपि मु । ५ "पत्तेयु०" इत्यपि मु । ६ "०इज्जज०" इत्यपि मु ।

नियएगवीसतुत्ता विउव्वितिरिसरिस हुंति देवुदया ।
चउमट्ठि देवभंगा अपमत्था पंच नरएसु ॥१२१॥

उदयेपु भङ्गसख्या ॥

इग वेयालिक्कारस तेत्तीमा छस्सयाणि तेत्तीसा ।
बारम सत्तरससयाणहिगाणि विपंचसीईहिं ॥१२२॥
अउणत्तीसेगारमसयहियसत्तरसपचसट्ठीहिं ।
एक्केक्कगं च वीसादट्ठुदयंतेसु उदयविही ॥१२३॥

उदयस्थान	२०	२१	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	९	८
भङ्ग	१	४२	११	३३	६००	३३	१२०२	१७८५	२९१७	११६५	१	१

बन्धस्थानेपु उदयानाह–

इगतीमता इगवीसमाइणो सव्वि उदय विज्जंति ।
तीसंतबंधगेसु[1] चउवीसा [2]मोत्तु अडवीसे ॥१२४॥
गुणतीमतीस उदया इगतीसे एगबंधि तीसेव ।
चउवीमा [3]पणवीसा [4]मोत्तुमबंधम्मि दस सेसा ॥१२५॥

साप्रत सर्वोदयमङ्गसख्यापूर्वक सर्वस्थानेपु सभवितोदयभङ्गसख्यामाह–

सत्तत्तरी सयाइं एक्काणउयाइं सव्वभंगाणं ७७९१।
जइ१८सुर६१नरय५विहूणा तेवीसे बंधि सेसुदया७७०४॥१२६॥
[5]नारय५जई१८विहूणा पुण छव्वीसे य पन्नवीसे य ७७६८।
केवलिरहियाऽऽउदया गुणतीसे तीसबंधे य ७७८३॥१२७॥
पन्नसया [6]बासीया ५०८२ अडवीसे बंधि जमिह तिरिउरला ।
देहेणापडिपुन्ना पढमे संघयणसठाणे ॥१२८॥
अडयालं भंगसयं१४८इगतीसे एगबंधि दुगसयरी ।७२
अट्ठाणवई सव्वे अबंधए हुंति उदयसा ॥१२९॥

॥ इति बन्धस्थानेपु उदयभङ्गसख्या ॥

साप्रत गुणस्थानेपु उदयस्थानान्याह–

१ "मुत्तु" इत्यपि मु । २ "०उदओ" इत्यपि ह० । ३ "पणु०" इत्यपि मु । ४ "मुत्तु" इत्यपि मु । ५ "नरयजइविहूणा पुण छव्वीसे पन्नवीसबंधे य" । इत्यपि मुद्रितप्रतौ । ६ 'वासीती" इत्यपि मु ।

इगतीसंता इगवीसमाइणो मिच्छि सव्वि उदयाओ ।
सत्तट्ठवीसरहिया ते चेव उ सत्त सासाणे ॥१३०॥
गुणतीसाई तिन्नि उ इगतीसंता उ मिस्सगुणठाणे ।
चउवीसरहिय अजए देसे चउछेग-२४-२६-२१-वीसूणा ॥१३१॥
विरए वेवं नवरं इगतीसाए य रहिय अपमत्तो ।
गुणतीसतीस पुव्वा जा खीणो तीस जोगेवं ॥१३२॥
चउपणअहिया वीसा नव अट्ठ य [1]मोत्तु अट्ठ उदयाओ ।
नव अट्ठ अजोगंमी भंगोवाओ इमो तेसु ॥१३३॥
सुहुमतिगं सुहु सा मिच्छे इगविगल जाव सासाणे ।
उदया [2]वि न संतेए सासाणे नरगइगवीसा ॥१३४॥
[3]एगिंदिसु छव्वीसा नरतिरि गुणतीसतीस वुज्जोई ।
सुरवज्जा पणवीसा इगतीसा तिरिसगलसेसा ॥१३५॥

मिश्रे विशेषमाह–

नरतिरिए गुणतीसा तीस वि जोएण नत्थिणमीसाण ।
अण[4]एज्जदुहयमजसं देसाईणं न य उदेइ ॥१३६॥
गुणतीसंतुद[5]एहि संजयदेसा न हुंतुरलदेहा ।
आहारनरूज्जोया जइस्सऽपुव्वऽट्ठ केवलिणो ॥१३७॥
संघयणे पढमे च्चिय सेढी तिन्नाइ अन्नि उवसमगे ।
तित्थयरे सम रं सरखगई सुप्पसत्थित्ति ॥१३८॥
नि दयभंगसंखा अजोग्गरहिया भवे निययसंखा ।
गुणठाणे गुणठाणे भंग च्चिय [6]संपय वुच्छं ॥१३९॥
सत्तत्तरितेवत्तरि ७७७३ भंगसया मिच्छसासणे एवं ।
चारि सहस्सा सगनउय ४०९७ मीसि चउतीस पणसट्ठा३४६५
॥१४०॥
अजए इगवन्नसया इगचत्ता ५१४१ देसि चउसय ४४३ ।
अट्ठवन्नसयं छट्ठे १५८ अडयालसयं १४८ तु अपमत्ते ॥१४१॥

---

१ "मुत्त" इत्यपि मु । २ "य" इत्यपि मु । ३ इयगाथा मुद्रितप्रताविस्थम्–' तिरिसेसइ-गतीस असुरपणुवीसिगिंदि छव्वीसा । तिरिजोई विगलतीसा तिरिमणुयाणं च गुणतीसा" इति । ४ "अणुइज्ज" इत्यपि मु० । ५ "०एसु" इत्यपि मु० । ६ "संपई" इत्यपि मु० ।

उवरिं जा उवसंतो बिसत्तरी ७२ खीणमोहि चउवीसा २४ ।
अडचत्त ४८ सजोगम्मी दो भंगा चरिमगुणठाणे ॥१४२॥

जीवस्थानेषूदयानाह—

छव्वीसंता सुहुमे सगवीसता य बायरे उदया ।
इगतीसंता चउवीसहीण समणेगवीसाई ॥१४३॥
विगलामणेसु ते वि हु पणुवीसा सत्तवीस विणु छाओ ।
पज्जि [1]अपज्ञाण निज दो दो उरलोदया पढमा ॥१४४॥

जीवस्थानेषु उदयस्थानकभङ्गसख्यामाह—

सुहमेयरेसु तिय तिय ३ अपज्जि पज्जेसु सत्त गुणतीसं ।
सन्नि अपज्जे चउरो दो दो सेसेसु ऽपज्जेसु ॥१४५॥
छावत्तरि इगसत्तरि समणे विगलेसु वीस पत्तेयं ।
अमणे गुणवन्नसया चउसहिया जीवउदयंसा ॥१४६॥

गतिषूदयस्थानान्याह-

इगपणसगट्ठनवहियवीसा नरगे सुरेसु तीसा वि ।
नरुदय-चउवीसूणा नवट्ठवीसूण-तिरिएसु ॥१४७॥
उदयंस पंच नरए तिरिए पण सहस सयरि भंगाणं ।
देवेसु चउसट्ठी नरेसु छव्वीसवावन्ना ॥१४८॥

गुणस्थानजीवस्थानगतीनां बन्धेषूदयानतिदिशन्नाह-

गुणतीसंता उदया अडवीसे नत्थि जाव मीसोत्ति ।
निगतीस तित्थबंधे इगतीसचयाइ ३१ गुणसरिसा ॥१४९॥
पणसगअहिया वीसा तेवीसचए न होइ सगलाणं ।
गुणजियगईण सरिसावसेसबंधेसु उदयाओ ॥१५०॥

मिश्रस्यैकोनत्रिंशद्बन्धे एकोनत्रिंशदुदय ॥
॥ उदओ सम्मत्तो ॥

तिदुनवई गुणनवई [2]अट्ठच्छडसी असी य गुणसी य ।
अट्ठयछप्पन्नत्तरि नव अट्ठ य नामसंताणि ॥१५१॥
[3]पडिपुन्नु नामु तिणवइ तित्थविणा दुणवई य सा होइ ।
चउआहारगरहिया ता ९३-९२ गुणनवई य अडसीया ॥१५२॥

१ "अपज्जत्ताण निय दो" इत्यपि । २ 'अडसी छडसी असीइ गुणसीइ ।" इत्यपि मु० । ३ "पडि पुन्न" इत्यपि मु० ।

[1]सुरदुगनरयदुगे वा एगयरे नासिए हवइ छासी ।
असइ विउव्विचउक्के दुगअन्नयरे य उव्वलिए ॥१५३॥
मणुयदुगे उव्वलिए [2]अडसत्तरि सत्तखवणरहियाण ।
खवगाणं पुण सव्वे छासी [3]अडसत्तरी मोत्तुं ॥१५४॥
तेणवइमाइयाओ चउरो नामस्स तेरसे खविए ।
जायंति अमी गुणसी छसयरि पणसयरि जहसंखं ॥१५५॥
नरयदुगं तिरियदुगं विगलिगजाई य थावरं सुहुमं ।
आयावं उज्जोयं [4]साहारण तेरस इमाओ ॥१५६॥
दुणवइअडसीयाओ उवसंतो जाव संति मिच्छाओ ।
तिणवइ गुणणवईओ दो वि हु अजयाउ अट्ठण्हं ।१५७॥
गुणनवइ असी छासी [5]अडसत्तरि मिच्छि थूलखवगाओ ।
पणछन्नवहियसत्तरि असी अजोगंतऽणुवसंते ॥१५८॥
नव अट्ठ अजोगि[6]म्मी सत्ता गुणठाणगेसु इय भणिया ।
गुणबंधुदएसेव नवरं तत्थ य विसेसोयं ॥१५९॥
अडवीसचयं [7]मोत्तुं दुणवइ छडसी८६ असी८८य सव्वत्थ ।
छव्वीसंतुदएसुं अडसयरी पंचमी मिच्छो ॥१६०॥
गुणतीसचए ॰रगोदएसु २१ २५, २७, २८, २९ नवसी वि बंधि अडवीसे।
दुणवइ नवट्ठछासी नवसी विणु एक्कतीसुदए ॥१६१॥
सासणि तीसे तुदए दुणवइ [8]अडसी य सेसि पुण अडसी ।
अजए गुणतीसचए तिनवइ नवसी छवीसुदए ॥१६२॥
[9]देसपमत्ति गुण[10]तीसे २९ चइ अजए तीसि तिणवई नवसी ।
अडवीसचए दुणवइ अडसी अजयाइतिण्हंपि ॥१६३॥
अडसी नवमी दुणवइ तिणवइ संता कमेण बधेसु ।
अपमत्तअपुव्वाण इगतीसंतेसु चउसुं पि ॥१६४॥

---

१ "अस्या गाथाया स्थाने मुद्रितप्रताविय गाथाऽस्ति । "छासीइ असइ सुरदुगि नरगाचियछक्कगे असइ असिईं । सुरदुगि नरयदुगेण व छक्कचए सइ पुणो छासी ।," इति । २ "अट्टत्तरि" इत्यपि मु० । ३ ' अडहत्तरि मुत्तु ॥" इत्यपि मु० । ४ "साहारण्" इत्यपि मु० । ५ अडहत्तरि इत्यपि मु० । ६ "०म्मि उ" इत्यपि मु० । ७ "मुत्तु दुनवई छडसी असीइ" इत्यपि मु० । ८ "अडसीइ" इत्यपि मु० ९ "देसि" इत्यपि मु० । १० "०निसे" इत्यपि मु० ।

तित्थविणा उदएसु अतित्थसंताइँ हुंति केवलिणो ।
तित्थेण सतित्थाइं सेसा संता गुणकमेण ॥१६५॥

जीवस्थानेषु सत्तामाह–

दुणवइ अडसी छासी असीइ अडहत्तरी य तेरससु ।
पन्नत्तरिपज्जंता दस संता सन्निपज्जत्ते ॥१६६॥

जीवस्थानविषयबन्धोदयेषु सत्तामाह–

[1]बंधोदइ तेरेवं नवरं उरलोदए छवीसंते ।
अडसयरि संति बंधे अडवीसि अतित्थि मिच्छविही ॥१६७॥
छव्वीसंतचएसु सन्निम्मि वि होइ विगलविहि नवरं ।
पणसगवीसुदएसु दुणवइ अडसी अ तेवीसा ॥१६८॥
अडवीसाई तीसंतबंधि संताइँ निययउदएसु ।
अजयजुयमिच्छविहिणा छलसीमाई उरलि चेव ॥१६९॥
इगतीसएगबंधे अबंधि उदएसु जइविही होइ ।
करणं पइ सन्निम्मि वि विहि केवलिणो निरवसेसो ॥१७०॥

गतिषु सत्तामाह–

एगचउ पंच छहिए वीसे उदयम्मि जे तिरियउरला ।
तेसिं चेवडसयरी तिरिजोग्गचईण नवरं तु ॥१७१॥
छप्पणवीसुदएसु अडसयरी नत्थिगिंदिपज्जस्स ।
जससाहारणआयवउज्जोएहिं तु मिस्सेसु ॥१७२॥
दुणवइ अडसी चउगइ [2]असी य छासी य मणुयतिरिएसु ।
सुरणर तिणवइ नरगे वि गुणवई पंच नरि सेसा ॥१७३॥

गतिविषयबन्धोदयेषु सत्तामाह–

बंधोदएसु गइविहि णारयतिरिएसु णवरि अडसयरी ।
[3]जीवे व्व तिरिगईए अडवीसि अतित्थि सन्निविही ॥१७४॥
तिरि सयलि२९ ८विगलि१८सव्वे [4]पणसिगा एगवीसछव्वीसे ।
उरलेगिंदियभंगा एवं इगवीसचउवीसे ॥१७५॥
पत्तेयअजसभंगा दो दो छव्वीसपन्नवीसेसु ।
एवं च पंच [5]सत्तिगतिन्निसया [6]होंति पणतीसा ॥१७६॥

---

१ "बन्धोदय" इति मु० प्रतौ । २ 'असीइ छासीइ" इत्यपि मु० ३ "जीवव्व" इत्यपि मु० । ४ "पणं-सगा" इति वा । ५ "सतिग" इत्यपि मु० । ६ "हुंति" इत्यपि मु० ।

मणुएसु वि मन्निविही णवरं अडसयरि नत्थि तह तीसे ।
बंधे तिनवइ नवसी इगतीसुदओ नसइ बंधो ॥१७७॥
देवाण तीसबंधे संता चउरो वि नियमउदएसु ।
दुनवइ अडसी मता सेसेसु बंधउदएसु ॥१७८॥
सव्वत्थ वि अडसयरी अन्ने तिरियाण उरलउदएसु ।
पणसगवीसुदएसु [1]तेवीसचयं नरे चिंति ॥१७९॥

सामान्येन सर्वबन्धेषु सत्तास्थानान्याह—

तीसंतऽडवीसविणा बंधेसुदएसु एगतीसंते ।
इगवीसाइसु दुणवइ अडसी छासी असी ठवसु ॥१८०॥
छव्वीसंतुदएसु अडसयरी [2] पंचमी तहा ठवसु ।
गुणनवई तह तिणवइ ठवेसु एएसु उदएसु ॥१८१॥
गुणतीसबंधगस्स उ चउवीसिगतीसवज्जि सेसेसु ।
[3]छच्चउअहिया वीसिगतीसा वज्जित्तु तीसचए ॥१८२॥
इगतीसबंधि उदया गुणतीसा तीस सति तेणवई ।
इगबंधिअबंधीणं तीसुदए अट्ठ संताणि ॥१८३॥
तिदुनवई गुणनवई [4] अडसी य असी य तह य गुणसीया ।
छप्पणहत्तरि [5] एत्तो अबंधि सेसेसु उदएसु ॥१८४॥
वीसछव्वीसऽडवीसे गुणसी पन्नत्तरी य संताइं ।
गुणतीसे इगुणासी छप्पणसयरी असी चेव ॥१८५॥
णवउदए संताइं असीइ छावत्तरी य नव चेव ।
अट्ठुदए ते चेव उ एगूणा तित्थनामेण ॥१८६॥
असीइ छसयरि दुन्नि उ इगवीसिगतीससत्तवीसाए ।
ऽडवीसे पुण बंधे नवइ [6]अडसी य सव्वत्थ ॥१८७॥
इगतीसुदए छासी छासी गुणनवइ [7]तीसुदयअहिया ।
गुणनवइ कस्स भन्नइ मिच्छद्दिट्ठिस्स नन्नस्स ॥१८८॥

---

१ "तेवीसचओ वि मणुएसु ॥" इत्यपि मुद्रितप्रतौ पाठ । २ "पचम" इति मु० प्रतौ । ३ 'छक्कचउअहियवी०" इत्यपि मु० । ४ 'अडसी[ई]इ असीइ तह य गुणसीइ ॥" इत्यपि मु० । ५ "इत्तो" इत्यपि मु० । ६ "अडसीइ सव्वत्थ" इत्यपि मु० । ७ ' तिसुदए अहिया ।" इत्यपि मु० ।

गुणनवइ कहं भन्नइ चियतित्थो [1]वेयगे गओ मिच्छं ।
बंधेइ नरगजो[2]ग्गा अडवीसा तीसउदयंमि ॥१८९॥
पत्तरस तस्स नगरे उदइगवीसाइ बंधि गुणतीसा ।
अन्तमुहुत्तं तत्तो सतित्थ[3]तीसा चिणइ सम्मे ॥१९०॥
इय सव्वकम्मबंधाइरूवणा लेसओ मए भणिया ।
संतंताताणंतं अत्तपुरं इच्छमाणेण ॥१९१॥

---

१ 'वेयगो" इत्यपि मु० । २ 'ऽग्गं अडवीस" इत्यपि मु० । ३ "तीस" इत्यपि । "अभयपुर" इत्यपि ।

इति सप्ततिकाभाष्यं समाप्तम्

मणुएसु वि सन्निविही णवरं अडसयरि नत्थि तह तीसे ।
बंधे तिनवइ नवसी इगतीसुदओ नसइ बंधो ॥१७७॥
देवाण तीसबंधे संता चउरो वि नियमउदएसु ।
दुनवइ अडसी मता सेसेसुं बंधउदएसु ॥१७८॥
सव्वत्थ वि अडसयरी अन्ने तिरियाण उरलउदएसुं ।
पणसगवीसुदएसुं [1]तेवीसचयं नरे विंति ॥१७९॥

सामान्येन सर्वबन्धेषु सत्तास्थानान्याह—

तीसंतऽडवीसविणा बंधेसुदएसु एगतीसंते ।
इगवीसाइसु दुणवइ अडसी छासी असी ठवसु ॥१८०॥
छव्वीसंतुदएसुं अडसयरी [2] पंचमी तहा ठवसु ।
गुणनवई तह तिणवइ ठवेसु एएसु उदएसु ॥१८१॥
गुणतीसबंधगस्स उ चउवीसिगतीसवज्जि सेसेसु ।
[3]छक्कचउअहिया वीसिगतीसा वज्जित्तु तीसचए ॥१८२॥
इगतीसबंधि उदया गुणतीसा तीस संति तेणवई ।
इगबंधिअबंधीणं तीसुदए अट्ठ संताणि ॥१८३॥
तिदुनवई गुणनवई [4] अडसी य असी य तह य गुणसीया ।
छप्पणहत्तरि [5] एत्तो अबंधि सेसेसु उदएसु ॥१८४॥
वीसछवीसऽडवीसे गुणसी पन्नत्तरी य संताइं ।
गुणतीसे इगुणासी छप्पणसयरी असी चेव ॥१८५॥
णवउदए संताइं असीइ छावत्तरी य नव चेव ।
अट्ठुदए ते चेव उ एगूणा तित्थनामेणं ॥१८६॥
असीइ छसयरि दुन्नि उ इगवीसिगतीससत्तवीसाए ।
अडवीसे पुण बंधे नवइ [6]अडसी य सव्वत्थ ॥१८७॥
इगतीसुदए छासी छासी गुणनवइ [7]तीसुदयअहिया ।
गुणनवइ कस्स सन्नइ मिच्छद्दिट्ठिस्स नन्नस्स ॥१८८॥

---

१ "तेवीसचओ वि मणुएसु ॥" इत्यपि मुद्रितप्रतौ पाठ । २ "पचम" इति मु० प्रतौ । ३ 'छक-चउअहियवी०" इत्यपि मु० । ४ 'अडसी[ई]इ असीइ तह य गुणसीइ ॥" इत्यपि मु० । ५ "इत्तो" इत्यपि मु० । ६ "अडसीइ सव्वत्थ" इत्यपि मु० । ७ 'तिसुदए अहिया ।" इत्यपि मु० ।

संतट्ठाणा पनरस अडवीसा ताव इत्थ सुपसिद्धा ।
सम्मत्ते उव्वलिए सगवीसा होइ संतम्मि ॥१५॥
मीसम्मि उ छव्वीसा अणाइमिच्छस्स अहविमो नेया ।
अणुवधीणुव्वल्लणे चउवीसा मिच्छपुंजम्मि ॥१६॥
खवियंमी तेवीसा बावीसा मिस्सपुंजखवणम्मि ।
सम्मत्तपुंजखवणे इगुवीसा खवगसम्मस्स ॥१७॥
अट्ठकसाए खविए तेरस बारस नपुंसवेयखए ।
थीवेयखएक्कारस खीणे छक्कम्मि पंचेव ॥१८॥
पुमवेयखए चउरो तिन्नि उ कोवम्मि दुन्नि माणम्मि ।
मायाखयम्मि एक्को इय भणियं सयलमोहणियं ॥१९॥
तेवीस पन्नवीसा छव्वीसा अट्ठवीस इगुतीसा ।
तीसेगतीसमेगं बंधट्ठाणाणि नामस्स ॥२०॥
तेवीसा पणवीसा छन्नवहिय वीस तीस एयाणि ।
मिच्छदिट्ठी बंधइ तिरियगईए निमित्ताइं ॥२१॥
एगिंदियपाउग्गाणि बंधठाणाणि तिन्नि पढमाणि ।
तत्थ च तेयगकम्मगवन्नाइचउक्कयं चेव ॥२२॥
अगुरुलहू उवघायं निम्माणं नव इमाउ धुवबंधा ।
तिरियगई एगिंदियजाई ओरालियं हुंड ॥२३॥
तिरियाणुपुव्विथावरबायरसुहमाण दुन्हमेगयरं ।
अप्पज्जत्तगपत्तेयइयरमेगियरथिरगं च ॥२४॥
असुभं दूभगअणइज्जअजसधुवबंधिणीहि सुह एसा ।
अप्पज्जत्तगएगिंदियाण पाउग्गतेवीसा ॥२५॥
परघाउस्साससमा पज्जत्तेगिंदिजोग्गपणवीसा ।

॥ सप्ततिकासारम् ॥

सिरिवीरजिणं नमिऊण भणियनीसेससत्थसारत्थं ।
वुच्छामि सत्तरीए सारमिणं संगहेऊण ॥१॥
बंधे उदए संते पण पण पढमंतिमेसु कम्मेसु ।
वेयणियाउयगोए बंधे उदए य एक्किक्कं ॥२॥
संतम्मि दोन्नि एक्कं व हुज्ज अह दंसणस्स आवरणे ।
नव छच्चउरो बंधे संतम्मि य उदय चउ पण वा ॥३॥
बावीस इक्कवीसा सतरस तेरस हवंति नव पंच ।
चउ तिग दुग एक्कं वि य बंधट्ठाणाणि दस मोहे ॥४॥
मिच्छं कसायसोलस वेओ एक्को भयं दुगंछा य ।
जुयलेगेण दुवीसा इगवीसा मिच्छविगमम्मि ॥५॥
अणबंधविगमि सतरस तेरस विगमे अपच्चखाणाणं ।
पच्चक्खाणाभावे नव हासाईचउक्कस्स ॥६॥
वोच्छेए पणबंधे पुमवेयाविगमओ य चत्तारि ।
कोहाई य कसाए केवलए बंधए तत्तो ॥७॥
कोहे विगए बंधइ संजलणतिगं दुगं तु माणम्मि
मायाविगमे बंधइ अनियट्टी लोभमेगं तु ॥८॥
दस नव अट्ठ य सत्त य छ पंच चउ दुन्नि एक्क मोहुदया ।
मिच्छ कसायचउक्कं वेओ जुयलं भयदुगुंछा ॥९॥
एए दस अणविगमे भयदुगुंछाण वेगविगमम्मि ।
नवउदए दुगविगमे अट्ठ य सत्त उ तिगाविगमे ॥१०॥
अणरहियकसायतिगं वेओ जुयलं छलोदए एवं ।
आइल्लबीयरहिया दुन्नि कसाया य पुमवेओ ॥११॥
जुयलेण य पणगुदए चउरुदओ पुणिक्कयम्मि संजलणे ।
वेएण य जुयलम्मि य दुगोदओ जुयलविगमम्मि ॥१२॥
वेयस्स पुणो विगमे संजलणकसायमेगमुदयम्मि ।
इय दिसिमित्तं भणिया एगेगपगारओ उदया ॥१३॥
अट्ठग-सत्तय-छ-च्चउ-तिग-दुग इक्काहिया भवे वीसा ।
तेरस बारिक्कारस पण चउ ति दु इक्क मोहस्स ॥१४॥

संतट्ठाणा पनरस अडवीसा ताव इत्थ सुपसिद्धा ।
सम्मत्ते उव्वलिए सगवीसा होइ संतम्मि ॥१५॥
मीसम्मि उ छव्वीसा अणाइमिच्छस्स अहविमो नेया ।
अणुवंधीणुव्वलणे चउवीसा मिच्छपुंजम्मि ॥१६॥
खवियंमी तेवीसा बावीसा मिस्सपुंजखवणम्मि ।
सम्मत्तपुंजखवणे इगुवीसा खवगसम्मस्स ॥१७॥
अट्ठकसाए खविए तेरस बारस नपुंसवेयखए ।
थीवेयखएक्कारस खीणे छक्कम्मि पंचेव ॥१८॥
पुमवेयखए चउरो तिन्नि उ कोवम्मि दुन्नि माणम्मि ।
मायाखयम्मि एक्को इय भणियं सयलमोहणिय ॥१९॥
तेवीस पन्नवीसा छव्वीसा अट्ठवीस इगुतीसा ।
तीसेगतीसमेगं बंधट्ठाणाणि नामस्स ॥२०॥
तेवीसा पणवीसा छन्नवहिय वीस तीस एयाणि ।
मिच्छद्दिट्ठी बंधइ तिरियगईए निमित्ताइं ॥२१॥
एगिंदियपाउग्गाणि बंधठाणाणि तिन्नि पढमाणि ।
तत्थ च तेयगकम्मगवन्नाइचउक्कयं चेव ॥२२॥
अगुरुलहू उवघायं निम्माणं नव इमाउ धुवबंधा ।
तिरियगई एगिंदियजाई ओरालियं हुंड ॥२३॥
तिरियाणुपुव्विथावरबायरसुहुमाण दुन्हमेगयरं ।
अप्पज्जत्तगपत्तेयइयरमेगियरथिरगं च ॥२४॥
असुभं दूभगअणइज्जअजसधुववंधिणीहि सुह एसा ।
अप्पज्जत्तगएगिंदियाण पाउग्गतेवीसा ॥२५॥
परघाउस्साससमा पज्जत्तेगिदिजोग्गपणवीसा ।
आयावुज्जोए वा तज्जोगा चेव छव्वीसा ॥२६॥
पणवीसा गुणतीसा तीसा वेइंदियाण पाउग्गा ।
तेवीसाए पुव्वोइयाए खित्तम्मि सेसट्ठे ॥२७॥
अंगोवंगे य तहा अप्पज्जत्तस्स जोग्गपणवीसा ।
नवरि तसं वेइंदियजाई च्चिय इत्थ भणियव्वा ॥२८॥
परघाउस्सासअणिट्ठगमणदूसरसमेयगुत्तीसा ।

नवरं एसा पज्जत्तगस्स जोग्गा मुणेयव्वा ॥२९॥
एवं चिय तीसा वि हु नवरं उज्जोयबंधगस्सेसा ।
एवं जा चउरिंदी बंधतिगं होइ एयं पि ॥३०॥
पंचिंदियतिरियाणं मणुयाणं तह य होइ पाउग्गं ।
एयं चिय बंधतिगं संघयणाईहिं नाणत्तं ॥३१॥
अन्नं चुज्जोएणं तीसा न हु होइ मणुयपाउग्गा ।
किं तु सुरा निरया वि य तित्थयरसमं कुणंति तयं ॥३२॥
अडवीसे गुणतीसा तीसा इगतीसमेव एयाणि ।
देवाण पाउग्गाणि बंधठाणाणि चत्तारि ॥३३॥
देवगई पंचिंदियजाई वेउव्वियं च चउरंसं ।
अंगोवंग च तहा देवणुपुव्वी य नायव्वा ॥३४॥
परघाऊसासपसत्थगमणतसबायरं च पज्जत्तं ।
पत्तेयं च थिराथिरसुभासुभाणं च एगयरं ॥३५॥
सुभगं सुस्सरमेव य आइज्जजसाण दुन्हमेगयरं ।
धुवबंधिणीण नवगम्मि मीलिए होइ अडवीसा ॥३६॥
[1]तित्थयरेणुगतीसा आहारदुगेण होइ पुण तीसा ।
तित्थयराहारदुगे य मीलिए हवइ इगतीसा ॥३७॥
नेरइयाणं जोग्गा [2]एक्कच्चिय बज्झए उ अडवीसा ।
साहे सुराण भणिया नाणत्तं निरयमहाई ॥३८॥
वीसा एक्कग चउ पण छ सत्त अट्ठ नवसमहिया वीसा ।
तीसेगतीस नव अट्ठ उदयठाणाणि बारस उ ॥३९॥
तेणउई बाणउई नवट्ठछहिँ समहिया असी असिई ।
नवअट्ठछप्पन्नत्तरि नवट्ठ बारस वि संताणि ॥४०॥
ओहेणं भणियाइं जप्पाउग्गाणि बंधठाणाणि ।
तह उदसत्ताणिण्हि वोच्छं चउगइविसेसेण ॥४१॥
एगुत्तीसा तीसा वि य बंधठाणाणि दुन्नि निरयाणं ।
इगवीस पन्नवीसा सत्तट्ठनवाहिया वीसा ॥४२॥

---

१ "तित्थयरे गुणतीसा" इत्यपि वा । २ "एक्कविहा" इत्यपि वा ।

उदयट्ठाणाणि इमाणि पंच संताणि हुंति पुण तिन्नि ।
बाणउई य नवासी अट्ठासी तत्थ बधदुगं ॥४३॥
जह पुव्विं निद्दिट्ठं पंचिंदियतिरियमणुयपाउग्गं ।
तह इहइं विन्नेयं उदयट्ठाणाणि पुण वुच्छं ॥४४॥
तेयइग कम्मइगं वन्नाइचउक्कअगुरुलहुयं च ।
थिरमथिर सुभमसुभं निम्मेण धुवोदया एए ॥४५॥
निरयगई पचिंदियजाई निरयाणुपुव्वि तमनामं ।
बायर तह पज्जत्तग दूभग अणाइज्जमजसं च ॥४६॥
बारस धुवोदयाओ इय एगवीसा भवंतरालम्मि ।
हुंडं वेउव्विदुगं उवघायं तह य पत्तेय ॥४७॥
एयाहि पणवीसा सरीरपत्तस्स आणुपुव्वि विणा ।
तत्तो सरीरपज्जत्तगस्स परघायगमणा य ॥४८॥
पक्खित्ते सगवीसा ऊसासे अट्ठवीस [1]इगुतीसा ।
सरसहिया अह सते बाणउया ताणि वोच्छामि ॥४९॥
गइचउगजाइपणगं पच सरीराणि पंच संघाया ।
पचेव बंधणाइं छस्संठाणाणि तह चेव ॥५०॥
अंगोवंगाण तिग छस्संघयणाणि वन्नगंधरसा ।
फासा सव्वे वीस विहायुदु चउरो य अणुपुव्वी ॥५१॥
अगुरुलहू उवघायं परघाऊसासआयवुज्जोयं ।
तसबायरपज्जत्तं पत्तेयथिरं सुभं सुभगं ॥५२॥
सूसरआइज्जजसं थावरदसगं तसाइपडिवक्खो ।
निम्माणेण सहिया बाणउई नाममंतम्मि ॥५३॥
आहारगं सरीर बंधणसंघायअंगुवंगं च ।
एएहि चउहि रहिया तित्थयरसमा नवासी य ॥५४॥
तित्थयरनामरहिया अट्ठासी अवसिया य निरयगई ।
इत्तो तिरियगईए वोच्छ बुंधुदयसताणि ॥५५॥
तेवीस पन्नवीसा छव्वीसा इगुणतीस तीसा य ।
एया पंचिण एगिंदियाण बधस्स ठाणाणि ॥५६॥

---

१ "गुणतीसा" इत्यपि वा ।

नवरं एगा पज्जत्तगस्स जोग्गा मुणेयव्वा ॥२९॥
एव चिय तीसा वि हु नवरं उज्जोयबंधगस्सेसा ।
एवं जा चउरिंदी बंधतिगं होइ एयं पि ॥३०॥
पंचिंदियतिरियाणं मणुयाणं तह य होइ पाउग्गं ।
एयं चिय बंधतिगं संघयणाईहि नाणत्तं ॥३१॥
अन्नं चुज्जोएणं तीसा न हु होइ मणुयपाउग्गा ।
किं तु सुरा निरया वि य तित्थयरसमं कुणंति तयं ॥३२॥
अडवीसे गुणतीसा तीसा इगतीसमेव एयाणि ।
देवाणं पाउग्गाणि बंधठाणाणि चत्तारि ॥३३॥
देवगई पंचिदियजाई वेउव्वियं च चउरंसं ।
अंगोवंगं च तहा देवणुपुव्वी य नायव्वा ॥३४॥
परघाऊसासपसत्थगमणतसबायरं च पज्जत्तं ।
पत्तेयं च थिराथिरसुभासुभाणं च एगयरं ॥३५॥
सुभगं सुस्सरमेव य आइज्जजसाण दुन्हमेगयरं ।
धुवबंधिणीण नवगम्मि मीलिए होइ अडवीसा ॥३६॥
[1]तित्थयरेणुगतीसा आहारदुगेण होइ पुण तीसा ।
तित्थयराहारदुगे य मीलिए हवइ इगतीसा ॥३७॥
नेरइयाणं जोग्गा [2]एकच्चिय बज्झए उ अडवीसा ।
साहे सुराण भणिया नाणत्तं निरयगइाई ॥३८॥
वीसा एक्कग चउ पण छ सत्त अट्ठ नवसमहिया वीसा ।
तीसेगतीस नव अट्ठ उदयठाणाणि बारस उ ॥३९॥
तेणउई बाणउई नवट्ठछहिं समहिया असी असिई ।
नवअट्ठछपन्नत्तरि नवट्ठ बारस वि संताणि ॥४०॥
ओहेणं भणियाइं जप्पाउग्गाणि बंधठाणाणि ।
तह उदसत्ताणिणिंह वोच्छं चउगइविसेसेण ॥४१॥
एगुत्तीसा तीसा वि य बंधठाणाणि दुन्नि निरयाणं ।
इगवीस पन्नवीसा सत्तट्ठनवाहिया वीसा ॥४२॥

---

१ "तित्थयरे गुणतीसा" इत्यपि वा । २ "एक्कविहा" इत्यपि वा ।

उदयट्ठाणाणि इमाणि पञ्च सत्ताणि इति पुण निन्नि ।
बाणउई य नवासी अट्ठासी तत्थ पढमदुग ॥४३॥
जह पुव्विं निद्दिट्ठं पंचिंदियतिरियमणुयपाउग्गं ।
तह इहइं विन्नेयं उदयट्ठाणाणि पुण वुच्छं ॥४४॥
तेयइग कम्मइगं वन्नाइचउक्कअगुरुलहुयं च ।
थिरमथिरं सुभमसुभं निम्मेण धुवोदया णाए ॥४५॥
निरयगई पंचिंदियजाई निरयाणुपुव्वि तसनामं ।
बायर तह पज्जत्तग दूभग अणाइज्जमजसं च ॥४६॥
नाम्म धुवोदयाओ इय एगवीसा भवंतगलम्मि ।
हुंडं वेउव्विदुगं उवघाय तह य पत्तेय ॥४७॥
एयाहि पणवीसा सरीरपत्तस्स आणुपुव्वि विणा ।
तत्तो सरीरपज्जत्तगस्स परघायगमणा य ॥४८॥
पक्खित्ते सगवीसा ऊसासे अट्ठवीस [1]इगुतीसा ।
सरसहिया अह सते बाणउया ताणि वोच्छामि ॥४९॥
गइचउगजाइपणगं पंच सरीराणि पंच संघाया ।
पंचेव बंधणाइं छस्संठाणाणि तह चेव ॥५०॥
अंगोवगाण तिगं छसंघयणाणि वन्नगधरसा ।
फासा सव्वे वीस विहायदु चउरो य अणुपुव्वी ॥५१॥
अगुरुलहू उवघायं परघाऊसासआयवुज्जोयं ।
तसबायरपज्जत्तं पत्तेयथिरं सुभं सुभगं ॥५२॥
सुसरआइज्जजसं थावरदसगं तसाइपडिवक्खो ।
निम्माणेण सहिया बाणउई नामसंतम्मि ॥५३॥
आहारगं सरीर बंधणसंघायअंगुवंग च ।
एएहि चउहि रहिया तित्थयरसमा नवासी य ॥५४॥
तित्थयरनामरहिया अट्ठासी अवसिया य निरयगई ।
इत्तो तिरियगईए वोच्छ बुंधुदयसंताणि ॥५५॥
तेवीस पन्नवीसा छव्वीसा इगुणतीस तीसा य ।
एया पंचिण एगिंदियाण बंधस्स ठाणाणि ॥५६॥

[1] "गुणतीसा" इत्यपि पा ।

इगवीसा चउवीसा पंचगछगसत्तसमहिया वीसा ।
उदयट्ठाणाणि इमाणि पंच बाणउय अट्ठासी ॥५७॥
छलसी असी य अट्ठत्तरी य एयाणि पंच संताणि ।
तिरिमणुपाउग्गाइं बंधट्ठाणाइँ जहपुव्विं ॥५८॥
उदयट्ठाणिगवीसा जहपुव्वं नारयाण निद्दिट्ठा ।
नवरिंगिंदियजाईपमुहं नाणत्तमिह नेयं ॥५९॥
तत्तो सरीरपत्ते ओरालसरीरहुंडउवघायं ।
साहारणपत्तेयाणमेगा अणुपुव्विविगमम्मि ॥६०॥
चउवीसुदओ तत्तो सरीरपज्जत्तगस्स परघाए ।
खित्तम्मि पन्नवीसा ऊसासुदयम्मि छव्वीसा ॥६१॥
आयावुज्जोए वा खित्ते सगवीस संतठाणेसु ।
बाणउई अट्ठासी जह निरयाणं तहेहं पि ।६२॥
देवदुगे उव्वलिए तत्तो अट्ठत्तरी य संतम्मि ।
तेवीसपन्नवीसा छन्नवहियवीसतीसा य ॥६३॥
विगलिंदियाण तिण्हं पि बंधठाणाणि पंच एयाणि ।
इगछक्कगअडनवहियवीसा तीसा य इगतीसा ॥६४॥
उदयट्ठाणाणि इमाणि छच्च एगिंदियाण जह भणिया ।
नवरं इगवीसाओ अणुपुव्वि विणा सरीरत्थे ॥६५॥
ओरालदुगे हुंडे उवघाए तह य चेव सेवट्ठे ।
पत्तेयम्मि य खित्ते छव्वीसा होइ उदयम्मि ॥६६॥
परघाए गमणंमि य अट्ठावीसा तओ य उस्सासे ।
इगुतीसा तीसा उण सरंमि उज्जोइ इगतीसा ॥६७॥
बाणउई अट्ठासी छलसी य असी य अट्ठसयरी य ।
संताण पंच एगिंदियाण जह पुव्वभणियाणि ॥६८॥
तिगपंचगछगअट्ठगनवाहिया वीस तह य तीसा य ।
छ इमाणि बंधठाणाणि हुंति पंचिंदितिरियाणं ॥६९॥
एयाणि जहा विगलिंदियाण पाएण नवरि इत्थहियं ।
अट्ठावीसा नेया सुरनेरइयाण पाउग्गा ॥७०॥
एक्कगछक्कगअट्ठगनवाहिया वीस तीस इगतीसा ।

उदयट्ठाणा छच्चिय पागयपंचिंदितिरियाणं ॥७१॥
एयाणि जह विगलिंदियाण नाणत्तु जाइमाईहिं ।
पंचगसत्तगअट्ठगनवाहिया वीस तीसा य ॥७२॥
वेउव्वियतिरियाणं उदयट्ठाणाणि पंच एयाणि ।
अस्संघयणी वेउव्वियत्ति नो एगहीणत्ति ॥७३॥
इगपंचछसत्तट्ठगनवाहिया वीस तीस इगतीसा ।
अट्ठुदया सामन्नेण हुंति पंचिंदितिरियाणं ॥७४॥
एएसिं संताण वि पंच जहेगिंदियाण भणियाणि ।
सम्मत्ता तिरियगई इत्तो वुच्छामि मणुयगई ॥७५॥
तत्थ मणुयाण अट्ठ वि बंधट्ठाणाणि पुव्वभणियाणि ।
चउवीसविरहियाइं एक्कारस उदयट्ठाणाणि ॥७६॥
अट्ठत्तरिवज्जाइं एक्कारस हुंति संतठाणाणि ।
सामन्नमिणं वुच्छं विसेसओ उदयसताणि ॥७७॥
इगवीसा छव्वीसा अडवीसा एगूणतीस तीसा य ।
पागयमणुयाण इमाणि उदयठाणाणि पंचेव ॥७८॥
पंचगसत्तगअट्ठगनवाहिया वीस तीस जहपुव्विं ।
पंचिंदियतिरियजुग्गा तहित्थ वेउव्विमणुयाणं ॥७९॥
वीसेगवीस छस्सत्तअट्ठनवअहिय वीस तीसा य ।
इगतीस नवट्ठ भवे दस उदया केवलिजिणाणं ॥८०॥
मणुयगई पंचिंदियजाई तसबायरं च पज्जत्तं ।
सुभगआइज्जजसं धुवोदएहि समा वीसा ॥८१॥
सामन्नकेवलिस्स य इमा समुग्घायवट्टमाणस्स ।
तित्थयरस्सिगवीसा छव्वीसा देहपत्तस्स ॥८२॥
केवलिणो पक्खित्ते ओरालदुगोवघायपत्तेए ।
संघयणे संठाणे सत्तावीसा य तित्थयरे ॥८३॥
छव्वीसाए खित्ते परघाऊसासगइसरेगयरे ।
ओरालकायजोगे तीसा सामन्नकेवलिणो ॥८४॥
सरऊसासनिरोहे तीसा उण केवलिस्स अडवीसा ।
ऊसासे अनिरुद्धे सरे निरुद्धम्मि इगुतीसा ॥८५॥

तीसा उ महावत्थस्स होइ तह इक्कतीम तित्थयरे ।
गइजाइतमं बायरपज्जत्तं सुभगमाइज्जं ॥८६॥
जसतित्थयरेहिमसो नवोदओ पुण इमो अजोगिस्स ।
तित्थयरनामरहिओ अट्ठुदओ होइ तस्सेव ॥८७॥
तेणउई बाणउई नवट्ठछहि समहिया असी असिई ।
अक्खवगाणं छ इमा हवंति नामस्स संताणि ॥८८॥
तेरसनामे खविए चउन्ह आइल्लगंतठाणाणं ।
तत्तो कमेण जाणसु खवगाणं केवलीणं च ॥८९॥
असिई अउणासीई छावत्तरि पन्नसत्तरी चेव ।
हुंति अजोगिजिणाणं पुव्वुत्तनवट्ठसंताणि ॥९०॥
देवाणं पणवीसा छवीसिगुत्तीस तीस चउबंधा ।
एगिंदियपंचिंदियतिरियाण नराण पाउग्गा ॥९१॥
उदयट्ठाणाणि पुणो पंच जहा नारयाण भणियाणि ।
छट्ठं तु इहं तीसा उज्जोएणं समा नेया ॥९२॥
तेणउई बाणउई नवअट्ठहि समहिया असीई य ।
संतट्ठाणाणि पुणो देवाण इमाणि चत्तारि ॥९३॥
एयाहिं जहा पुव्विं भणियाइँ तहा इहं पि नेयाणि ।
इय बंधोदयसंताणि वन्नियाइं समासेणं ॥९४॥
इय सत्तरीए सुत्तस्स तह य चुन्नीए सारमुद्धरियं ।
सीसाण हियट्ठाए भणियं सिरिहेमसूरीणं ॥९५॥
जो पढइ इमं जीवो तस्स फुडं सत्तरीयचुन्नीए ।
सारत्थो हिययत्थो विप्फुरइ सया सनामं व ॥९६॥

॥ इय सत्तरीसार सम्मत्त ॥

इति सप्ततिकासारं समाप्तम्

शुद्धिपत्रकम्

पृष्ठः	पंक्तिः	अशुद्धिः	शुद्धिः
३	१५	अणि ।	अणि । सुहुम ।
८	२४	२	२२
९	१३	३	२
१७	१९	२ । २ ।	२ । १ ।
१४	२ २८	७१-७९ ।	७०/७८ (गाथाङ्का.)
१५	२-१८	८०-८७	७९-८६ (")
१६	१२	१३२	१३३
१६	१४-२२	८८-९२	८७-९१ (गाथाङ्का)
२६	१६	एव	एव
३१	५	गिंदिय	एगिंदिय
३१	५	१	६
३१	६	२	१२
३१	२२	१८१	१८०
३१	२४	१८२	१८१
३२	२८	"एत्तौ"	'एत्तो'
३३	२४	विगल ३)	विगल (३)
३४	६	वा अप.	वा. अप.
३४	५	[२]दो दो	[२] △दो दो
३७	२३	ध.	बध.
३८	१५	ठवणा	[१]ठवणा
४२	२३	चूर्णिकार	चूर्णिकारै
४३	९	पञ्चम	
४३	२३	०ज्य	सज्य
४३	३१	मुहुत्ता	मुहूर्ता
४४	१४	२७	३७
४५	३	२८	३८
४५	६	२२०	२४०
४८	७	ठ णा	ठाणा
४८	१८	१३९७	१३९१७
४८	९	चउरंदियाण	चउरिंदियाणं
४९	११	चउसता	चउसता
५२	१०	७५	२७५
५२	२८	पमाण	प्रमाण

पृष्ठः	पंक्तिः	अशुद्धिः	शुद्धिः
५२	०१	दा-"ऽऽहारक- समकोद्वलनं कृत्वैव" पुन०	दा-ऽऽहारकसमकोद्व- लनं कृत्वैव पुनः
५३	२०	०स्थितेष्वपि	०स्थितिष्वपि
५३	२४	॥२०६॥ दय- स्थान (२५०)	॥२०६॥ (२५०)
५४	६	७२८	१७२८
५४	१३	१३७४५	१३९४५
५५	११	भग	भंग
५६	२०	को कस्स ।	[२] को कस्स ।
५६	२७	॥२९१॥ (३६३)	॥२९१॥ (३६४)
५७	३	३६३	३६४
५७	५	३६४	३६५
५७	१०	बंधविवज्जा	[६] वधविवज्जा
५७	२२	दसणारण	दसणावरण
५७	८	ठवण	ठवणा
६२	२	ावन्ना	बावन्ना
६४	१५	१७ ८	१७२८
६५	१	नेषुमोह०	नेषु मोह०
६५	७	२३	४२३
६७	८	केवलीण	[१] केवलीण
६७	३१	प्रतो	प्रतौ
६९	२३	जो	जा
७२	१०	॥३८४॥ (४९४) [४४१]	॥३८४॥ [४४१]
७२	१२	॥३८५॥(४९५) [४४२]	॥३८४॥ [४४२]
७३	३	उव्वि०	वेउव्वि०
७३	१४	०नके) अन्नो	०नके) ीस नत्र अइणो वीसं भेया उ नो तिरिओ (५०४) अन्नो
७३	१६	तेरस	तीसे
७३	५	४९०९	४९०६
८०	७	॥(५६३)	॥४०९॥ (५६३)
	९	॥(५६४)	॥४१०॥ (५६४)

इति

सप्ततिका